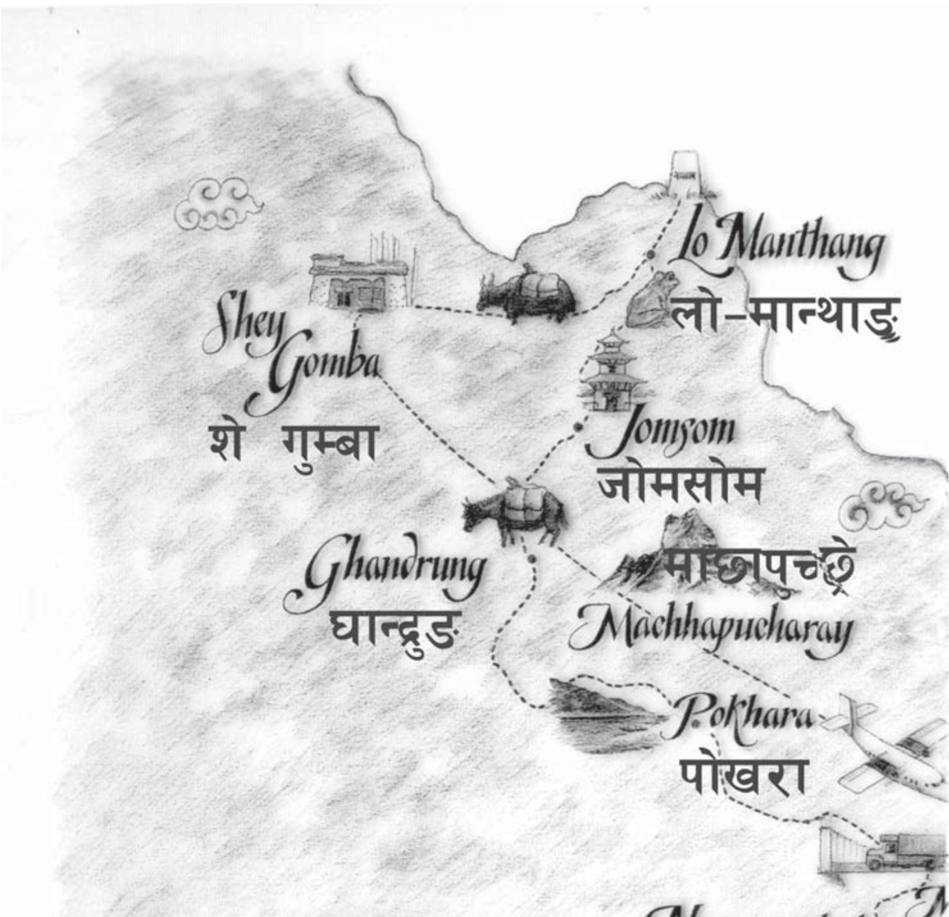


भगता बेङ्क देश-भ्रमण

कनकमणि दीक्षित

चित्र - सुभाष राई




Lo Manthang
लो-मान्थाङ
Shey Gomba
शे गुम्बा
Jomsom
जोमसोम
Ghandrung
घान्द्रुङ
माछापुच्छ्रे
Machhapucharay
Pokhara
पोखरा
Narayanghat
नारायणघाट
चितवन
India
भारत



Tibet
तिब्बत
Mungling
मुङ्लिन
Kathmandu
काठमाडौं
N

Adventures of a Nepali Frog शीर्षकसँ मूल रूपेँ अङरेजीमे लिखल गेल ई पोथी मैथिलीक अतिरिक्त नेपाली, उर्दू, जर्मन, नेवारी, कोरियन आ डच भाषाक सङहि नेपाली ब्रेल लिपिमे प्रकाशित भऽ चुकल अछि आ शीघ्रहिँ जापानी, हिन्दी, उड़िया, असमिया, बाङ्‌ला, मराठी, तमिल, तेलगु, मलयालम, गुजराती, कन्नड, आ पञ्जाबी भाषामे तथा अङरेजी ब्रेल लिपिमे सेहो छपबाक नियारमे अछि।

प्रकाशक
रातो बङ्गला किताब
रातो बङ्गला स्कूल
पाटनढोका, ललितपुर, नेपाल।
फोन : ५५२२६१४, ५५३४३१८, ५५४२०४५
फैक्स : ९७७-१-५५४७६१९

ISBN: 99933-20-02-1

मोल : ५० टका मात्र

टाइपसेट, सज्जा आ मूद्रण
जगदम्बा प्रेस (प्रा.) लि., हात्तिवन, ललितपुर, नेपाल।
फोन : ५२५००१७, ५२५००१८, ५२५००१९

भगता बेङ्क
देश-भ्रमण

कनकमणि दीक्षित

चित्र : सुभास राई

मैथिली रूपान्तर

रूपा धीरू

धीरेन्द्र प्रेमर्षि

रातो बङ्गला किताब

पाटनढोका, ललितपुर

लेखकक कहब

भक्तप्रसाद बेङक साहसिक यात्राक कथाक बीजारोपण वि.सं. २०४६ सालदिस भेल छल, जहिया हम अपन धीयापुताकेँ पलखतिक उपयोग करैत राति-राति क९ खिस्सा-पिहानी सुनाओल करी।

भक्तप्रसादक काल्पनिक कथाकेँ तकरा बाद हम लिपिबद्ध कर बाक विचार कएलहुँ आ ओ कथासभ अङरेजी दैनिक 'दि राइजिङ नेपाल'मे साप्ताहिक शृङ्खलाक रूपमे छपबो कएल। ओहि कथासभकेँ पोथीक रूप देबाक धुनि सवार भेल बरखाक मौसममे।

ओना तँ भक्तप्रसाद एकटा काल्पनिक चरित्र अछि, मुदा ओकर घुमलाहा बहुतो जगहपर हम अपनहुँ पहुँचल छी। मुस्ताङक सीमावर्ती चाङथाङमे हम ठीके मार्मटसभसँ भेटल छी। तराइमे गड़ी जोतैत बड़दसभक देह सोहरौने छियैक। पोखराक फेवातालमे बेङसभक टरटराहटि सुनने छी आ जुफालक ढरकाह हवाइमैदानसँ ट्वीनअटर जहाजपर उड़ल छी।

ई पोथी हम अङरेजीमे लिखने छलहुँ। एकरा सरल आ भावपूर्ण रूपेँ मैथिलीमे रूपान्तरित कएनिहार धीरेन्द्र प्रेमर्षि आ रूपा धीरूक सङहि गहन भूमिकाक लेल डाँ. राजेन्द्र विमलक हम आभारी छी। एहि तरहक पोथी निकालि धीयापुताक लेल यथासम्भव पढ़बायोग्य खोरि स जुटएबामे लागल रातो बङ्गला स्कूलप्रति सेहो हम आभारी छी।

भगताकेँ नेपालक घुमफिर करैत काल जतेक आनन्द आएल छलैक, ततबए आनन्द ओकर खिस्सा लिखैत काल हमरो आएल। ई पोथी पाठककेँ सेहो ओतबए आनन्द प्रदान करतनि, से हमर आ भगता दुनूगोटेक विश्वास अछि।

कनकमणि दीक्षित
पाटनढोका, ललितपुर
२६ साओन, २०५९

मुहथरि

बाल-साहित्यक सफल सृजनक हेतु बाल-मनोवैज्ञानिक मर्मज्ञता पहिल शर्त थिक। कोरा उपदेश बाल-मनकेँ स्वीकार्य नहि। उपदेश वा शिक्षा जँ मनोरञ्जनक शैलीमे, सरस आ कौतहलपूर्ण घटना-उपस्थापनद्वारा देल जाए तँ बच्चा हपसिकऽ ओकरा पढ़ैत अछि। अपन परिवेश, देश वा संसारक प्रति ओकरा मोनमे जे सहज जिज्ञासा रहैत अछि, तकरा जतेक रोचक ढङ्गसँ सहज आ बाल-सुलभ भाषामे साहित्यमे प्रस्तुत कएल आएत, ओ ततबए उपयोगी आ बाल-प्रिय होएत।

बाल-साहित्यक प्रसिद्ध समीक्षक पाल हेजार्डक शब्दमे– "पोथी उएह नीक होइत अछि, जे बच्चाकेँ वाह्य ज्ञानटा नहि, अन्तर्ज्ञानो दऽ सकए, जकरा ओ सरलतासँ ग्रहण कऽ लिअए आ ओकर आत्मामे एहन भावनाक सञ्चार कऽ सकए, जे जीवनमे चिरस्थायी बनि जाइक।" बाल-साहित्यक प्रसिद्ध लेखक लूसी स्प्रेङ्ग मिचेल स्पष्ट कऽ देलनि जे आब अभिभावक आ अध्यापककेँ चाही जे बच्चाकेँ काल्पनिक आ परीक कथा नहि सुनाबथि। एहिसँ बच्चापर कुप्रभाव पड़ैत छैक आ ओ भविष्यमे जीवनक मूल्य आँकऽमे भूल कऽ सकैत अछि। प्रत्येक देशमे अपन भौगोलिक परिवेश, आर्थिक चिन्तन, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, ऐतिहासिक परम्परा, राजनीतिक अवस्था, शैक्षिक वायुमण्डल, सामाजिक संरचना आदिकेँ ध्यानमे राखि सार्वभौम आ शाश्वत जीवन-मूल्यक आधारपर अपन बच्चाक व्यक्तित्वक युगानुकूल विकासक लेल प्रतिबद्धता स्वाभाविक रूपेँ चाही। ई पोथी एही प्रतिबद्धताक अभिव्यक्ति थिक।

आइ संसारमे लिखल गेल बाल-साहित्यमे विषयवस्तु आ शैलीक क्षेत्रमे अनेक प्रकारक प्रयोग देखबामे अबैत अछि– परीकथा, आत्मकथा, जासूसी कथा, विज्ञान कथा, बाल-उपन्यास, शिशुगीत, बालकविता आदि-आदि। मुदा एखनो तथ्यपरक यात्रा-साहित्य खोजलेपर भेटत। भक्तप्रसाद बेङक माध्यमसँ श्री कनकमणि दीक्षित जे नेपाल-दर्शन करौलनि अछि, से अदभुते

थिक। काठमाण्डूक ई बेङची चितवनक जङ्गलमे गैँड़ा, बाघिन, गोहिसँ इयारी लगबैत अछि। प्रथम नेपाली महिला ट्रक-ड्राइभर फूलमायासँ दीदी-भाएक सम्बन्ध जोड़ैत अछि आ ओकराद्वारा उपहारस्वरूप कीनिकऽ देल गेल टोपी छमका पोखराक यात्रा करैत अछि। पोखरामे पार्टीक मजा लैत अछि। धम्पुस होइत घान्द्रुक जाइत काल माछापुच्छ्रेक अनुपम सौन्दर्य देखि आनन्द-विभोर होइत अछि। कागबेनी आ मुक्तिनाथक यात्रा करैत अछि। मुस्ताङक हवा-पानिक आनन्द लैत चाङथाङक मार्मटसँ दोस्ती करैत अछि। डोल्पोक बाटपर हिमचितुआ देखि रोमाञ्चित होइत अछि। बोन्पोमार्गी नीमा च्याङ्ग्राक सङ्ग धर्म आ परम्पराक चर्चा करैत अछि। लम्बा लामाक जीवन-दर्शनसँ प्रभावित होइत अछि आ अन्ततः एकटा पाइलटक जेबीमे बैसिकऽ चीलगड़ीसँ अपन गृह-नगर काठमाण्डू घूरि अबैत अछि। एहिप्रकारेँ भगताक देश-दर्शन पूरा होइत-होइत काल्पनिक भगता बेङक आत्मामे प्रविष्ट कएने बाल-मन मौजमस्तीमे घुमक्कड़ी करैत अपन देशक भूगोल, जलवायु, जीवजन्तु वनस्पति, सामाजिक रहन-सहन, बाट-घाट, संस्कृति, धर्म आदिक बारेमे अनेक विष्मयकर जानकारी प्राप्त कऽ लैत अछि।

चितवनक जङ्गलमे बालक एकराज गैँड़ा अपन परिचयक क्रममे बतबैछ जे ओ एकसिङ्घा गैँड़ा अछि आ दूसिङ्घा अफरिकामे पाओल जाइत अछि। फूलमाया बतबैछ जे माछापुच्छ्रे माछक पुच्छीजकाँ पोखरा-घान्द्रुक मार्गपर देखबामे अबैछ। पोखरामे अपनेसन एकगोट बेङकेँ अपन परिचय दैत भक्तप्रसाद बतबैत अछि जे ओ 'राना टिग्रिना' जातिक बेङ अछि आ एहि जातिक बेङ गढ़वालसँ लऽ सिक्किमधरिक पूरा मध्य पहाड़ी क्षेत्रमे पाओल जाइत अछि। पूबमे अन्नपूर्णा आ पच्छिममे विशाल धवलागिरि हिमालयक बीच कालीगण्डकी नदीक खोँच देखबैत खच्चड़ ज्ञान दैत अछि जे ई संसारक सभसँ गहिँर खोँच थिक। कागबेनीमे ञोपा अपन खानदानक परिचय दैत अछि जे हिमालयक याक आ गर्म प्रदेशक गाएसँ उत्पन्न प्रजातिकेँ ञोपा कहल जाइत अछि। 'देउराली'क 'ला-तो'मे

भेटल पेम्बा मूस कहैछ जे ओ मूस नहि, मार्मट थिक। बोन्पोमार्गी नीमा च्याङ्ग्रासँ भक्तप्रसादकेँ जानकारी प्राप्त होइत छैक जे डोल्पो क्षेत्रमे बौद्धस्तूपकेँ 'छोर्तेन' कहल जाइत छैक। लोक छोर्तेनक परिक्रमा बामसँ दहिन नहि, दहिनसँ बाम करैत अछि। नेपालमे लोक बाटक बामदिस गाड़ी चलबैत अछि, मुदा तिब्बतमे दहिनदिस। एहिप्रकारेँ, एहि यात्रा-वृत्तान्तमे स्वाभाविक रूपसँ आएल अनेक प्रसङ्गमे अनेक जानकारी देल गेल अछि।

एहि यात्रा-वृत्तान्तमे जीवन-मूल्यक उपस्थान सेहो अत्यन्त स्वाभाविकता आ रोचकताक सङ्ग भेल अछि। पोखराक डान्स पार्टीसँ घूरि झुमैत-झमैत भगता बेङ असुआ जाइत अछि। रातिमे सपनामे देखैत अछि जे ओकर बाबा बुद्धिप्रसाद ओकरा समझारहल छैक– "आधुनिक होएब बेजाए गप्प नहि थिकैक भगत, मुदा एक्कहि झटकामे अपन परम्पराकेँ तोड़ि फेकब सेहो नीक नहि। एना होएत तँ हमरालोकनिक सन्तान दुविधामे पड़ि जाएत। की नीक, की बेजाए– अलग-अलग करब कठिन भऽ जएतैक।" लम्बा लामा भगताकेँ उपदेश दैत छैक– "जतेक-जतेक जीवनकेँ बुझैत जएबह, ततेक-ततेक आन प्राणीप्रतिक नम्रताक महत्त्व सेहो बुझैत जएबह। स्वार्थी बनब छोड़ि देबहक आ जे छी हमहीँ छी, से भावना हटि जएतह। करुणा आ दयाक महत्त्व बुझबहक। ...."

आनहि गोटेजहाँ हमरहु अध्ययनक सीमा अछि। मुदा, हम आइधरि जतबा बाल-साहित्यक माध्यमेँ यात्रा-वृत्तान्त पढ़लहुँ, ताहिमे ई पोथी हमरा सर्वाधिक रोचक आ बालोपयोगी लागल। ई पोथी ओहू विदेशी किशोर अध्येताक हेतु सरस आ उपादेय अछि, जे नेपालक बारेमे जानऽ चाहैत अछि। जँ अपन परिवेश आ परम्परासँ परिचित करा उच्च जीवनमूल्यमे संस्कारित करब बाल-साहित्यक अभीष्ट स्वीकार करी तँ भगता बेङक नेपाल भ्रमणकेँ नेपालमे रचित बाल-साहित्यक सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि हम मानैत छी। हम श्री कनकमणि दीक्षितजी प्रति हार्दिक बधाइ ज्ञापन करैत छी। तथ्य आ कल्पनाक एहन कौतहलपूर्ण समन्वय, चित्रात्मक वर्णन आ

नाटकीयताक एहन सरस संयोजन अन्यत्र दुर्लभ थिक। हमर इच्छा जे एहि क्षेत्रक प्रत्येक बच्चा खाहे ओ कोनो देशक होअए आ ओकर मातृभाषा कोनो होउक, एहि कृतिकेँ एकबेर अवश्य पढ़ए। एहिमे ओकरा नेपालक काया आ आत्माक जे लघु ज्योति भेटतैक, ताहिसँ एकताक भावना तँ प्रगाढ़ होएबे करतैक, लम्बा लामाक बारल आत्मज्योतिसँ ओ संसारकेँ भविष्यमे द्योतित कऽ सकत आधुनिक बुद्ध भऽ। आधुनिक हिंसाग्रस्त संसारमे करुणा, प्रेम आ शान्तिक निष्कम्प दीप-शिखा जँ आजुक बाल-हृदयमे बारल नहि गेलैक तँ मानवताक भविष्यकेँ सर्वनाशसँ के, कोना रोकत ?

एहि कृतिक अत्यन्त स्वाभाविक आ सुन्दर अनुवाद सौभाग्यवती रूपा धीरू आ चिरञ्जीवी धीरेन्द्र प्रेमर्षि प्रस्तुत कएलनि अछि। एकर पाण्डुलिपि पढ़ैत काल हमरा कत्तहु ई नहि बुझाएल जे हम मैथिलीक मौलिक पोथी नहि पढ़िरहल होइ। अत्यन्त ग्रामीण आ मैथिलीक ठेँठ शब्दसभक प्रयोग आ प्रवाहमय वाक्यविन्याससँ ई पोथी पाठककेँ मिथिलाक माटिपानिसँ सेहो ओतबए गहियाकऽ धएने रहैत अछि, जतेक एकर विषयवस्तु आ प्रस्तुति समग्र नेपालक माटिपानिसँ। हम अनुवादकद्वयकेँ बधाइ दैत छियनि– मौलिकताक स्वाद दैत सुन्दर अनुवाद हेतु, अनुवादक हेतु सुन्दर पुस्तकक चयन हेतु आ सभसँ बेसी मैथिली वाङमयक श्रीबृद्धि हेतु।

१४ अखाढ़, २०५८

डॉ. राजेन्द्र विमल

१०/६१, देवीथान, जनकपुरधाम।

एहि पोथीक मादे

भगता बेङ आ ओकर देश-भ्रमणसम्बन्धी चर्चा-परिचर्चा सूनि हमरो मोनमे ई उत्कण्ठा जागल जे एकबेर ई पोथी पढ़ितहुँ। पढ़लहुँ तँ एहन बुझाएल जेना भगताक सङ्ग लागल हमहुँ सौंसे देशक भ्रमण कऽ लेलहुँ। भ्रमण मात्र नहि कएलहुँ, अनेको तरहक लोकवेद, बाटघाट, जीवजन्तु, चालिचलन आदिसँ सेहो परिचय भऽ गेल। आ, किछु ज्ञान सेहो अनचोक्कहि भेटि गेल, जे कोनो महात्माक प्रवचनसँ नहि भेटि सकैत अछि।

युवावस्थाकेँ सेहो पाछाँ छोड़ऽ लागल हमरापर्यन्त जखन भगता बेङ एहि तरहेँ मोहि लेलक तँ हमरासभक धीयापुताकेँ ई आओर कतेक प्रियगर लगतैक! ई विचार मोनमे अबितहिँ एकरा मैथिलीमे अनुवाद करबाक लौल सेहो जागल। एहि मादे **रातो बङ्ला किताब**सँ बातचीत कएलहुँ आ भगता बेङ हमर कलमक लग्गी पकड़ि चटपट छड़पनियाँ मारऽ लेल तैयार भऽ गेल मैथिली भाषामे।

नेपालीमे छपल एकर प्रति अनुवादक लेल आनिकऽ डेरापर रखने रही। एहनेमे कतऽसँ ने रूपाक नजरि सेहो ओहिपर पड़ि गेलनि। आँफिससँ घुरिकऽ अएलहुँ तँ देखैत छी जे ओ डूबल छथि पोथीमे। हमरासँ पुछलथि जे ई किताब कतऽसँ अनलहुँहएँ? हम जवाबमे पोथी अनबाक कारणसहित सभकिछु हुनका बता देलियनि। ओ कहलनि जे एकर अनुवाद जँ मैथिलीएमे करबाक छैक तखन तँ हम करब। हमरा बुझबामे आबि गेल जे एहि पोथीसँ रूपा सेहो ओतबए प्रभावित भेलीह अछि, जतेक हम भेल छी। हम सोचलहुँ जे मेहनति तँ हमरा बादमे करहि पड़त, तखन लौल पूरा करबाक मौका हिनको दऽ देबामे हर्जे की?

रूपा कुदबऽ लगलीह पहाड़ी भगता बेङकेँ मिथिलाक समतल धरतीपर। घरक भानस-भात, बच्चासभकेँ तैयार कऽ स्कूल पठाएब, आनो

कतोब काजक सङहि साहित्यिक गोष्ठीसभमे हमर सङ्ग पूरबसँ लऽ 'हेल्लो मिथिला' कार्यक्रमक सञ्चालन करैत जे समय बचैत छलनि, ताहीमे ओ ई काज करैत छलीह। एहि कारणे समय किछु बेसी भऽ गेलैक तँ हमरो हाथ लगबहि पड़ल। तैयो आधासँ बेसी अनुवाद तँ ओ कइए लेने रहथि।

हम हाथ लगबैत काल जखन रूपाद्वारा अनूदित अंश देखलहुँ तँ एकटा सुखद आश्चर्यसँ गुम्म रहि गेलहुँ। वस्तुतः बादमे हम जतबा अनुवाद कएलहुँ से हुनकहिद्वारा कएल गेल अनुवादीय शैलीक लीकपर चलैत। आ, एहिसँ बढ़िऽ जे-जतेक कएलहुँ, से बस्स किछु विशृङ्खलित प्रसङ्गकेँ सोझरएबाक काज। एहि तरहेँ कहि सकैत छी जे एहि पोथीक अनुवादक मूल रूपेँ रूपे छथि। हँ, हमरो नाम सन्हिअएबाक जोगाड़ भऽ गेल, से हमर सौभाग्य थिक।

ई पोथी पढ़ैत काल जतबए आनन्द आएल, अनुवाद करैत काल ततबए आकाश-पाताल सेहो देखऽ पड़ल। ई अनुभव हमरा दुनूगोटेक थिक। कोनो यात्रा ठानि लेब तँ सहज भऽ सकैत छैक, मुदा बीच बाटमे जा जखन अनेको विघ्न-बाधासभ उपस्थित होइत छैक तँ बुझबामे अबैत छैक जे यात्रा ककरा कहल जाइत छैक! जाहि तरहेँ भगता बेडकेँ देश-भ्रमण करैत काल अनेको मोशकिलसभक सामना करऽ पड़लैक, तहिना अनुवादक क्रममे हमरोसभकेँ विभिन्न तरहक फिरिशानी झेलऽ पड़ल। खास कऽ भौगोलिक दृष्टिएँ नेपाली आ मैथिली भाषी क्षेत्रमे साम्य नहि रहलाक कारणे जतऽ कतहु पहाड़ी परिवेशसँ सम्बद्ध शब्दसभ आएल, हमसभ असमञ्जसमे पड़ैत रहलहुँ। मुदा जाहि तरहेँ भगता केहनो विकट परिस्थितिमे हेआओ नहि हारलक, तहिना हमहूँसभ मैथिल पाठकक लेल बेसीसँ बेसी सहज आ सुपाच्य अनुवाद करबामे जुटल रहलहुँ। जतऽ किछु नहि भेटल, ततऽ मूल नेपालीए शब्दकेँ भाषाक माध्यमे बुझएबाक प्रयत्न सेहो कएलहुँ आ मैथिलीमे भक्तप्रसादक यात्रा तैयार भऽ गेल।

भगता बेङक देश–भ्रमणक अनुवाद कऽ मैथिली वाङमय-भण्डारकेँ एकटा नीक पोथी देबाक माध्यम बनलहुँ, तकर गौरव तँ हमरासभकेँ अछिए, एकटा दोसर लाभ की सेहो भेल तँ अनुवादक क्रममे भक्तप्रसादक सङ्ग भावनात्मक रूपेँ सेहो किछु बेसी निकटता भऽ गेलाक कारण ओकर आँखिएँ आओर फड़िछाकऽ देश देखबाक अवसर सेहो भेटल।

एहि पोथीक पूर्व-रूपक अत्यन्त सूक्ष्मतापूर्वक अध्ययन कऽ त्रुटिसभकेँ सरिअबैत एकर गहन आ सारगर्भित भूमिका लिखिकऽ मैथिली साहित्यक सिरमौर डाँ. राजेन्द्र विमल जाहि तरहेँ हमरासभक हेआओ बढ़ौलनि अछि, तकरा लेल हुनकाप्रति हमरालोकनिक हार्दिक आभार अछि। सङहि एकर अनुवाद करबाक जे महत्त्वपूर्ण दायित्व भेटल, तकरा लेल रातो बङ्गला किताब आ लेखक कनकमणि दीक्षितजीक सेहो हमसभ आभारी छी।

भगता बेङक देश–भ्रमणकेँ मैथिल पाठकसभक सोझाँ परसबाक उपक्रममे हमरासभकेँ सहभागी होएबाक जे अवसर प्राप्त भेल, ताहिसँ अपनाकेँ गौरवान्वित बुझिरहल छी। आशा अछि– मैथिलीभाषी पाठकक लेल ई एकटा सुअदगर आ स्वास्थ्यवर्द्धक दिमागी व्यञ्जन सिद्ध होएत।

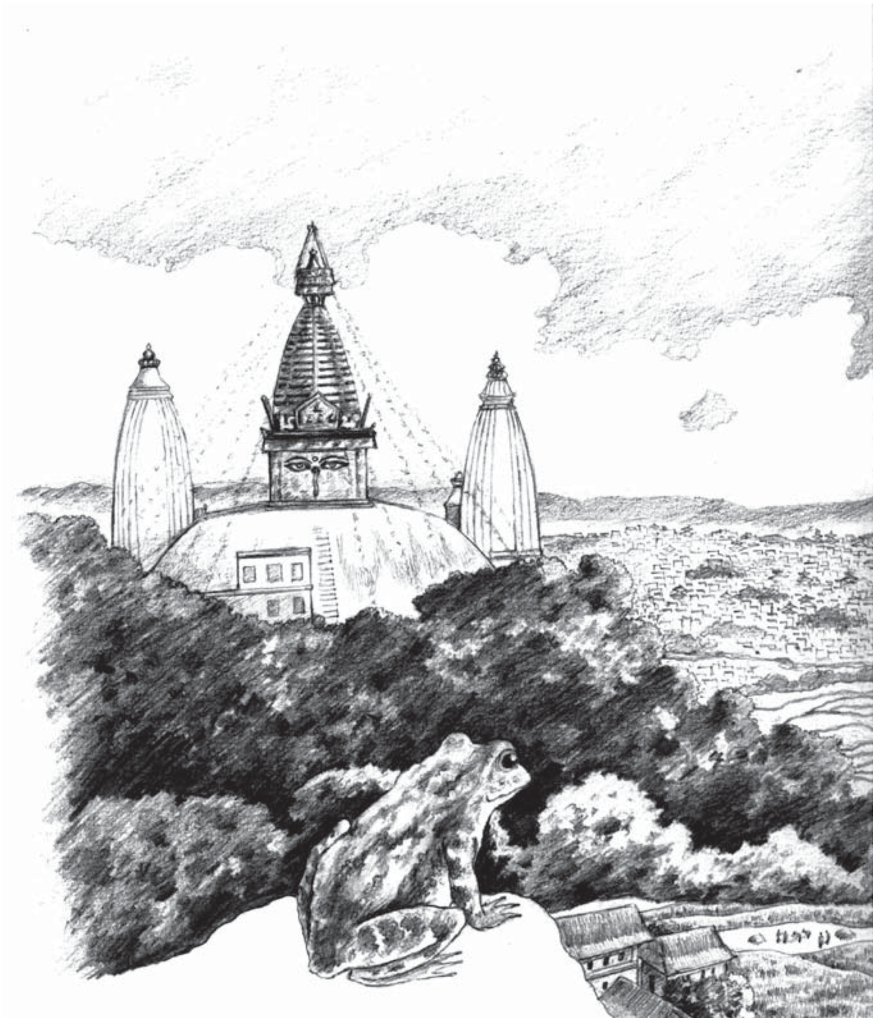
२०५८, मधुश्रावणीक दिन

धीरेन्द्र प्रेमर्षि

गोविन्दपुर-१, बस्तीपुर, सिरहा

विषय-सूची

काठमाण्डूक आकर्षण	१
भरिया आ आम	७
तराइदिस	१०
पूब-पच्छिम राजमार्गपर	१४
चितवनक जङ्गल	१८
उत्तरदिस चललापर	२५
नदी-नाला आ पहाड़सभ	३०
पोखरेलिया भोज	३४
माछापुच्छ्रेक खोजमे	३९
सेव आ शालिग्राम	४५
कालीगण्डकीक बसात	४९
कागबेनीक विवरण	५३
मुक्तिनाथक तीर्थयात्री	५८
हिमाली मरुभूमि	६५
देउरालीमे ‘ला-तो’	६९
चाङथाङक मार्मट	७५
कैलीक सङ्ग यात्रा	७९
बोन्पोमार्गी नीमा च्याङ्ग्रा	८३
लम्बा लामा	८७
गुम्बाक ज्ञान	९१
विदा डोल्पो	९५
आकाशमे उड़ैत	१००
फेर काठमाण्डू	१०५



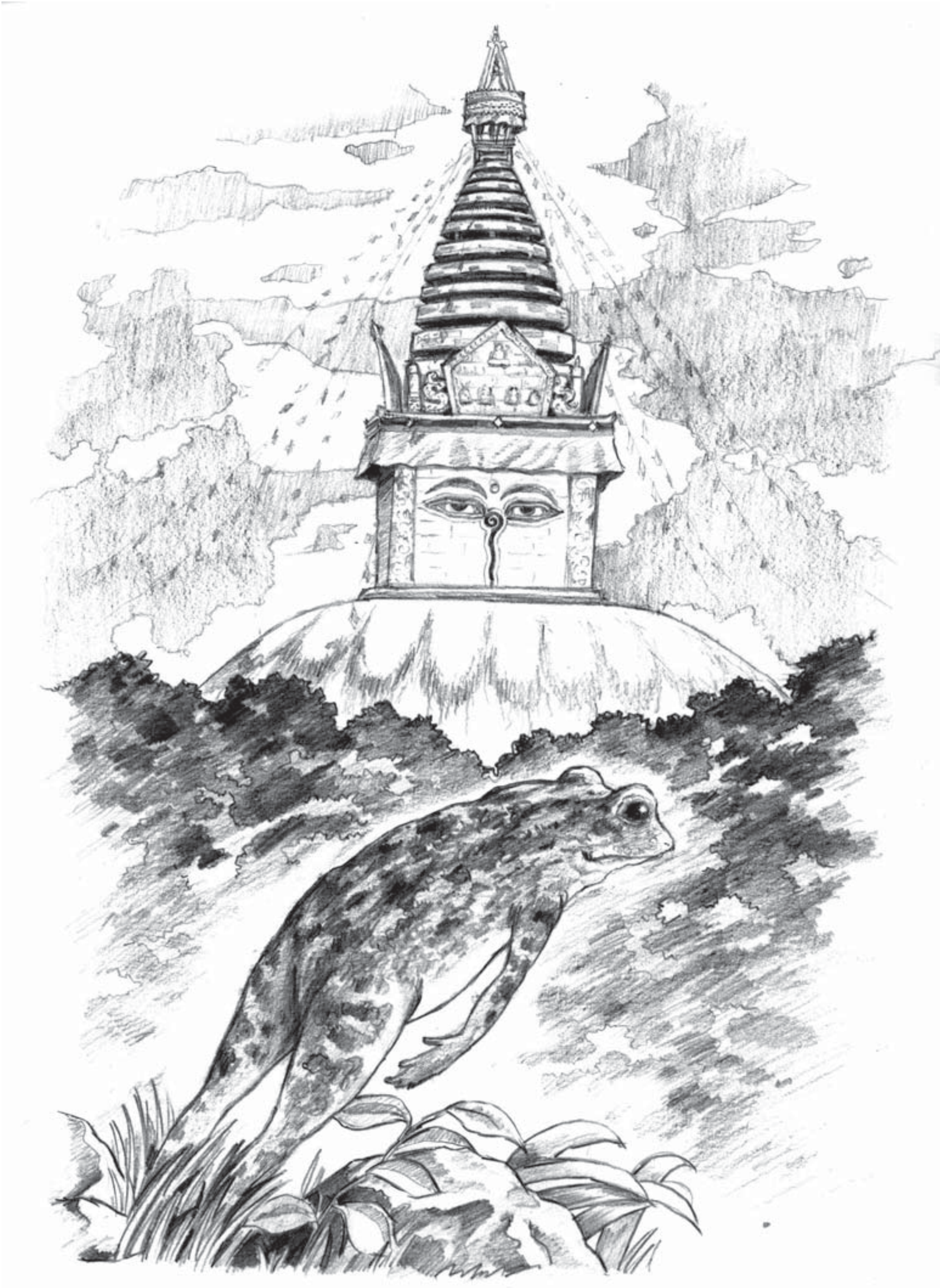


काठमाण्डूक आकर्षण

भक्तप्रसाद एखन बेङचीसँ बेङ बनबाक उपक्रममे छल। अर्थात बाल्यावस्था पार कऽ जुआन होइत रहए। ओ काठमाण्डूक इचङ्गू नामक स्थानपर धानक खेतमे अपन बाबा बुद्धिप्रसाद, माए सानुमैयाँ आ भाए-बहिनक सङ्ग रहैत छल। इचङ्गू स्वयम्भूक पच्छिमभर अछि। ओकरा अपन उमेरक बेङसँ किछु बेसीए बुझबाक जिज्ञासा रहैत छलैक। ओकरा परिवारमे सभसँ पहिने कूदफान करऽवला सेहो उएह छल।

भक्तप्रसादक घरेलग एकटा एकपेड़िया रहैक। ओहिबाटे मौगी-मेहरि, पुरुष-पात आ धीयापुतासभ अवर्जात करैत रहए। भक्तप्रसादक मोनमे जिज्ञासा होइत छलैक जे ईसभ कतऽसँ अबैत अछि आ कतऽ जाइत अछि ? बेङसभकेँ मनुक्खजकाँ एमहर-ओमहर करैत रहबाक आवश्यकता नहि रहैत छैक। ओसभ एक्कहिठाम कन्हुआकऽ एहि प्रतीक्षामे बैसल रहैत अछि जे कखन कोन कीड़ा-मकोड़ा भेटए आ ओकरा गटकि जाइ। ओकरासभकेँ मात्र साँपसँ बचिकऽ रहऽ पड़ैत छैक। एकरा अतिरिक्त ओसभ चिक्का-दरबर खेलाइत कण्ठ फाड़ि-फाड़िकऽ टर्र-टर्र टरटराइत रहैत अछि। ओकरासभक जिनगी बस्स एतबए अछि।

मुदा लोकसभ ओहिठामक एकपेड़ियाबाटे एमहर-ओमहर करिते रहैत अछि। एना बुझाइत छैक जेना ओसभ कतहु जा-रहल होअए।



एक दिन भक्तप्रसादकेँ बुझएलैक जे एहि तरहेँ चलऽवला लोकक जरूर कोनो 'उद्देश्य' रहल करैत होएतैक। गर्मीक समयमे एक दिन किशोर वयक भक्तप्रसाद सोचलक– "हमरो कोनो उद्देश्य होएब आवश्यक अछि। हमरो तँ किछु करबाक चाही।"

मुदा तहियाधरी तँ भक्तप्रसादक नाङरि सेहो नीकजकाँ नहि ऊड़ल छलैक। ओ बेसी दूर नहि जा सकैत रहए। तेँ ओ कहुना घरेलग रहल चबुतराधरि मात्र घूमफिर करबाक हिम्मति करए।

चबुतरापर आबऽ-जाएवला बटोहीसभ सुस्ताइत रहए। ओहि बटोहीसभक गप्प-सप्प सूनिकऽ ओकरा ई बुझबामे अएलैक जे धानक खेतसँ हटियोकऽ दोसर कोनो संसार छैक।

ओहि दोसर संसारकेँ देखबाक उत्सुकतासँ भक्तप्रसाद काठमाण्डू उपत्यकादिस नजरि फिरौलक। ओहि समय सूर्यास्त होबऽ लागल छलैक। साँझक ललौन सूर्यक किरिनसँ धानक हरियर-हरियर खेतसभ पिराउँछ नेने चमकिरहल छल। ओहिसँ किछु दूर ओ घनगर खपड़ैल घरसभ, मन्दिरक गुम्बजसभ आ विशाल-विशाल दरबारक बुर्जसभ देखलक। ओकरा विश्वास भेलैक जे इचङ्गूक बेङसभ जाहि 'शहर'क बात करैत छल से निश्चित रूपेँ इएह थिक। भक्तप्रसाद सुनने छल जे शहरमे मोटर-गाड़ी, बिजली-पङ्खा आ सैकड़ो कोठलीवला बड़का-बड़का बङ्गलासभ होइत छैक।

एक दिन भक्तप्रसादक कनेके लटकलहा नाङरि सेहो टूटि गेलैक। ताही दिन ओ सभसँ कहलकैक जे आइ साँझमे ओ घर छोड़ि देबाक निश्चय कएलक अछि। "किएक छोड़बह?"– सभगोटे एक्कहि स्वरमे पुछलकैक। घर छोड़ि ओ दूर जा सकैत अछि ताहि बातपर ओकरा घरक ककरो विश्वासे नहि छलैक। भक्तप्रसाद जवाब देलक– "हम एहि दुनियासँ बाहरी दुनियाक अनुभव करऽ चाहैत छी। हम देखऽ चाहैत छी जे शहरमे लोकसभ कोना रहैत अछि। हम तराइमे जाए चाहैत छी। हमरा बड़का नदी, आश्चर्यजनक प्राणीसभ, समतल

चौरी-चाँचर आ बड़का-बड़का पहाड़सभ देखबाक मोन होइत अछि।"

घरक अभिभावक बुद्धिएप्रसादटा भक्तप्रसादक मोनक बात बुझलकैक। बहुतो साल पहिने ओकरो मोनमे एहने विचार आएल रहैक। मुदा, ओ अपन सोचलहा नहि कऽ पओने रहए। ओकरा अपन सोचलाहा पूरा नहि होएबाक बड्ड पछताबा छलैक। तेँ ओ प्रसन्न भऽ अपन हिम्मतगर पोताकेँ देखि मोनहि मोन विचार कएलक– "ई छौँड़ा हमरोसँ बेसी हिम्मतगर बहराएल। अपना विचारमे ई अड़ल रहऽवला अछि। एकरा केओ नहि रोकि सकैत अछि।"

भक्तप्रसादक घर छोड़िकऽ जएबाक निर्णयसँ दुःखित भऽ सभटा बेङ एकठाम जमा भेल। ओकरासभकेँ बुद्धिप्रसाद कहलकैक– "एकरा जाए दहक। जखन ई बाहरी दुनिया देखि लेत तँ हमरोसभकेँ कतेको नव-नव बातसभ बताओत।" तैयो भक्तप्रसादक माए सानुमैयाँ किछु कहऽ चाहैत छलि कि भक्तप्रसाद चटपट सभकेँ प्रणाम-पाती कऽ विदाह भऽ गेल।

"बाबा ! हम जाइ छिअह।" भक्तप्रसाद जाइत-जाइत जोरसँ चिकरैत बाजल। तकरा बाद ओ लोकक चलऽवला रस्तासँ चलनाइ शुरू कएलक आ जा अपन खेतसँ अऽढ़ नहि भऽ गेल ता ओ उनटिकऽ नहि तकलक। किछु दूर चललाक बाद ओ मोटर-गाड़ी दौड़ऽवला पक्की सड़कपरसँ चलनाइ शुरू कएलक। भक्तप्रसादकेँ बुझबामे आबि गेलैक जे ई चक्रपथ अछि। ओ अन्तिमबेर पाछू उनटिकऽ इचङ्गूक चौरीदिस तकलक आ फेर पुदकि-फुदकिकऽ चलनाइ शुरू कऽ देलक। स्वयम्भूक चैत्य पार कऽ भक्तप्रसाद आगू बढ़ब शुरू कएलक। तखन ओकरा एहन बुझएलैक जेना स्वयम्भूक आँखि ओकरा पछुआरहल होअए आ कहिरहल होअए– "जाह बौआ, हमर आशीर्वाद तोहर सङ्ग छह।"

किछु काल चललाक बाद भक्तप्रसादकेँ ठेहीजकाँ बुझएलैक। ओकरा मोन पड़लैक घरलगक चबूतरामे बैसिकऽ शहर जाएवला लोकसभ जे गप्प करैत छल, से। ओसभ बसपर चढ़िकऽ शहर

जएबा-अएबाक गप्प करैत छल। ई बात मोन पड़ितहिँ ओ चक्रपथसँ बालाजू जाएवला चौबटियामे ठाढ़ भऽ नील रङ्गक साञ्झा बसक प्रतीक्षा करऽ लागल। बस तँ आएल, मुदा बसक कण्डक्टर ओकरा बसमे चढ़एबे नहि कएलकैक। ओ कहलकैक जे हमर हाकिमसाहेक कीड़ा-मकोड़ा, बेङ, साँप, मूस आदिकेँ बसमे चढ़एबाक अनुमति नहि देने छथि। ओ मुह टेढ़ करैत आगाँ बाजल– "दोसर बात जे ई बस रत्नपार्क जाइत छैक, बेङकेँ रत्नपार्क जाइए किएक पड़लैक?"

भक्तप्रसाद नम्र भऽकऽ बाजल– "श्रीमान, हम रत्नोपार्क जा सकैत छी।" ओहि कण्डक्टरकेँ आइधरि केओ 'श्रीमान' कहिकऽ सम्बोधन नहि कएने रहैक। सभ दिन खालि उएह लोककेँ जी-हजुर, जी-हजूर कहैत रहैत छल। बिन पाइक यात्रा करऽ चाहनिहार लुच्चा यात्रीक सङ्ग ओकर सभ दिन झगड़ा भऽ जाइक। प्राय: सभ दिन बकबकिया यात्रीसभक सङ्ग ओकर धक्का-मुक्की, गारि-गरौअलि आ रगड़ा भऽ जाइत छलैक। तँ भक्तप्रसादक 'श्रीमान' सम्बोधन सूनिकऽ कण्डक्टरक मोन पघिलि गेलैक। ओ कहलकैक– "चढ़ऽ-चढ़ऽ, जल्दी चढ़ऽ" आ बसक केबाड़मे दू बेर हाथसँ ढक-ढक मारलक। भक्तप्रसादकेँ चढ़ितहिँ बसक चलनाइ शुरू भऽ गेलैक।

बस पहिने विष्णुमती पुल पार कएलक। तकरा बाद सोह्रखुट्टेक उँचाइ चढ़िकऽ राजदरबार, फेर रानीपोखरि होइत अन्त्यमे रत्नपार्क पहुँचल। काठमाण्डू शहरक हृदयस्थलीमे रहल रत्नपार्कक चकमक्की आ गर्दगोहारिक बीच भक्तप्रसादकेँ चकबिदोर लागि गेलैक। हजारो व्यक्ति धड़फड़-धड़फड़ करैत एम्हर-ओम्हर चलि-फीरिरहल छल। बस, कार, गेलागाड़ी, रिक्सा, साइकिल आ मोटरसाइकिलसभक सेहो ततबए भीड़ रहैक। तुरत्ते काठमाण्डूक पहाड़ी गामसँ आएल भक्तप्रसादकेँ एहेन औँजा-गौँजवला ठामपर बससँ उतरब खतरासँ खाली नहि बुझएलैक। "एहिठाम तँ हमरा एक्कहि छनमे चटनी बना दै जाएत! न्न, एतऽ नहिएँ उतरी ताहीमे भलाइ अछि।" भक्तप्रसाद किछु काल एहने गुनधुनमे ओझराएल रहल।





भरिया आ आम

की करी, की नहि; एही गुनधुनमे किछु कालधरि भक्तप्रसाद असमञ्जसमे पड़ल रहल। ओ मोनहि मोन सोचलक जे जँ नहि उतरिकऽ बसहिमे बैसल रहब तँ बस फेर घूमिकऽ चक्रपथे चलि जाएत। फेर घूमिकऽ ओहीठाम जाएब तँ उचित नहिएँटा हएत।

तखने एकटा भरिया पीठपर किछु लदने चलि अबैत छल। भक्तप्रसाद एकटा ब्योँत लगौलक। कण्डक्टरकेँ धन्यवाद कहैत भक्तप्रसाद बसक खिड़कीसँ भरियाक 'डोको'पर फानि गेल। डोको जे कि बत्तीसँ बनाओल एकटा पथियाजकाँ होइत अछि, ओहिमे आम राखल छल। डोकोमहक आमपर बैसिकऽ शहर देखऽ पाबिरहल छल, एहिसँ बेसी की चाहैत छलैक ओकरा ?

भरिया भक्तप्रसादकेँ नेपालक सभसँ बेसी चहल-पहलवला ठाम असन-बजारदिस लऽ जा-रहल छल। ओ अपन डोकोपरहक आमक मोटरीपर एकटा छोटका बेङकेँ बैसल देखलक, मुदा ओ ओकरा किछु नहि एकलकैक। बरु ओ भक्तप्रसादकेँ दुलराएल आवाजमे पुछलकैक– "रे छोटका ! बाहरक तमासा देखैत एकटा आमो खेबएँ तैयो कोनो बात नहि।"

भरियाक नाम जगतबहादुर छलैक। ओ काठमाण्डूक व्यापारीसभक सामान ढोबिकऽ जीविका चलबैत रहए। ओ कहियो लोहा-लक्कड़, कहियो चाउरक बोरा तँ कहियो स्टीलक अलमारी सेहो ढोबैत रहए।

अपना दऽ सभकिछु बतौलाक बाद जगतबहादुर बाजल– “आइ ई आम असनोसँ दूर मरुटोलधरि पहुँचएबाक अछि।”

चलिते-चलिते भरिया जखन फेरसँ आम खएबाक आग्रह कएलकैक तँ भक्तप्रसाद एकटा पाकल आम लऽकऽ चोभऽ लागल।

बाटमे भाँड़ा-बर्तन, सूप-पनपथिया, डोरी, गलैंचा, झारू-बाढ़निसनक सामानसभक चकाचक दोकानसभ पसरल छलैक। अन्न, फलफूल, मसल्ला आ तरकारीसभ बेचबाक लेल राखल दोकानसभ सेहो बहुतो छलैक। एतेकरासे दोकानसभ देखिकऽ भक्तप्रसाद मोनहि मोन कहलक– “बाफ रे बाफ, एत्तेक सामानक कीन-बेच होइत छैक, नहि? मुदा हमरासन भुच्च पहड़िया बेङकेँ की बूझल?” ई सूनि जगतबहादुर कहलकैक– “एह, ई की छैक, आरो जखन विशालबजारदिस जएबैं तँ देखबएँ की-की छैक!”

एहिना गप्प-सप्प करैत ओसभ असनक अन्नपूर्णादेवीक मन्दिर पार कएलक। ओ मूर्ति देखि बुझाइक जेना भैरव बटोहीएसभक मूड़ी मचोड़िकऽ अपन मालामे ने गाँथि लेथि। भक्तप्रसाद आ जगतबहादुर बाटहिसँ भैरवक दर्शन कएलक। तकरा बाद ओसभ सुन्दर-सुन्दर दरबारवला हनुमानढोका होइत आगू बढ़ल। भक्तप्रसादकेँ जगतबहादुर बतौलकैक जे ओहि जमानाक राजा-महाराजासभ एही दरबारमे बैसिकऽ राज करैत छलाह।

अन्त्यमे जगतबहादुर काठमाण्डूक गणेशस्थान लगक सेठक दोकानमे जा अपन आमक डोको रखलक आ भक्तप्रसादकेँ कहलकैक– “आब तोँ जो आ अपन यात्रा शुरू कर। गणेशजीक दर्शन कऽ यात्रा शुरू कएनाइ नीक होइत छैक। नेपाल देश पैघ छैक। सम्हरिकऽ जइहएँ, कहीँ भोतिया ने जइहएँ।”

विशाल धोधिवला हथियासूँढ़ गणेशजीक दर्शन कऽ भक्तप्रसाद सटलाहा गल्लीसँ होइत यात्रापर चलि पड़ल। मुदा कनिए कालमे भक्तप्रसाद बाट बिसरि गेल। अचानक कतहुसँ एकटा कुकुर अभरल



आ भक्तप्रसादकेँ खा जाएवला नजरिसँ तकैत घुर्र-घुर्र करऽ लागल। भक्तप्रसाद तुरत्त लगक एकटा नालीमे कूदि गेल। नहि तँ सड़कछाप ओ कुकुर तँ बुझू भक्तप्रसादक देहमे दाँते गड़ा दितैक। भक्तप्रसादक नालीमे कूदि गेलाक बाद सेहो ओ कुकुर पिण्ड नहि छोड़लकैक। धत्तापर बैसि कखनो काइँ-कुइँ करैत तँ कखनो भुकैत ओ कुकुर रातिभरि भक्तप्रसादक प्रतीक्षामे ओहिठाम बैसल रहल। मुदा भक्तप्रसाद ओकरादिस कोनो ध्यान नहि देलक। पहिलबेर बसक यात्रा, डोकोपर बैसिकऽ सहरक भ्रमण आ तकरा बाद दुष्ट कुकुरक रूपटब– केओ थाकि सकैत अछि। ताहूमे जिनगीमे पहिलबेर यात्रामे बहराएल इचङ्गूक ओहि ननटुनमा बेङक थाकि जाएब तँ स्वाभाविके छलैक।

नालीक भीतर कुकुर ओकर किछु नहि बिगाड़ि सकैत अछि, से सोचि भक्तप्रसाद निश्चिन्त भऽ गेल। भक्तप्रसाद मोनहि मोन सोचलक– "ई सहर बड़ खतरनाक अछि। काल्हिखन हम तराइदिस विदाह भऽ जाएब। ओमहरका जमीनो कहाँदन समतल होइत छैक।" इएह बातसभ सोचैत भक्तप्रसाद औङ्घाए लागल।



तराइदिस

भक्तप्रसाद निसभेर भऽ सूति रहल। सपनामे ओ अपना बाबाकेँ देखलक। एहि शताब्दीक सभसँ बेसी बुद्धिमान बेङ मानल जाएवला बुद्धिप्रसादक नाम इचङ्गूसँ दूर-दूरधरि पसरल रहैक। सपनामे ओकर बाबा ओकरासँ कहलकैक– “छोटे, जँ तोरा तराइ जएबाक छह तँ नदीक रस्तासँ चलि जाह। देखह बौआ, सरकारी नियमअनुसार बेङ हवाइजहाजपर नहि चढ़ि सकैत अछि। बसक ड्राइभरसभ तोरा पतिअएबे नहि करतह आ रेलगाड़ीक नामपर तँ नेपालमे काठमाण्डूक ‘रमाइलो मेला’मे चक्कर काटऽवला एकटा बाल-रेल अछि, बस्स। तेँ तोरा लेल तराइ पहुँचबाक सभसँ नीक उपाय नदीएक मार्ग होएतह, दोसर कोनो उपाय नहि।

भिनसरबामे मुसलाधार पानि पड़ल। वर्षाक पानिसँ ओ छोटका नाली उमटाम भऽ गेलैक आ ओहिदने पानि नदीक बाढ़िजकाँ बहऽ लागल। भक्तप्रसाद ओहि बाढ़िमे हेलैत किछुए कालमे विष्णुमती पहुँच गेल।

विष्णुमती पवित्र नदी अछि। सुक्खा मौसममे एकर किनार गन्दगीक ढेरसँ भरल पड़ल रहैत छैक। मुदा एखन वर्षातक कारणे विष्णुमतीक तटवर्ती क्षेत्र साफ-सुथर आ पवित्र बुझाइत छलैक। एमहर-ओमहर तकलापर विष्णुमतीक किनारमे एकटा मुह बौने टीनक डिब्बापर भक्तप्रसादक नजरि पड़लैक। ओहिमे कोनो भूर-भार तँ

नहि छैक, ओ सेहो जँचलक, मुदा ओहिमे तेहन किछु नहि छलैक। तकरा बाद ओ ओहि डिब्बाकेँ घीचि-घाचिकऽ पानिमे लऽ गेल। टीनक ओ डिब्बा जखन पानिमे छतलाए लागल तँ भक्तप्रसाद कुदकिकऽ डिब्बाक भीतर पैसि गेल। नहुए-नहुए टीनक डिब्बा आ बेङ दुनू नदीक मूल धारमे पहुँचल आ प्रवाहक सङ्ग हिलैत-डोलैत बहऽ लागल।

एहि तरहेँ किछु काल बहैत गेलापर बामा कातसँ दोसर बड़का नदी बागमती आबिकऽ विष्णुमतीमे मिऴरा गेलैक। ओ ठाम टेकू दोभान छल। दोभानसँ निच्चा ई नदी बागमतीए नामेँ चीन्हल जाइत अछि, से भक्तप्रसादकेँ पहिनहिसँ बूऴल रहैक।

भक्तप्रसादकेँ एहि यात्रामे सभसँ बेसी कठिनाइ चोभारक खोँचमे पहुँचलापर भेलैक। ओही खोँचदने होइत बागमती नदी काठमाण्डू उपत्यकासँ बाहर निकलैत अछि। सम्पूर्ण नदीक पानि जखन नान्हिटा दोगबाटे पैसैत अछि, तकरा बाद निकलऽवला पानिक तेज धारसँ बनल भँवरमे पड़ि टीन चकरघिन्नीजकाँ नाचऽ लागल। पानिक धारमे हिचकोला खाइत बड़का-बड़का चट्टानकेँ पार करैत डिब्बा आगू



बढ़ल। धनि, भक्तप्रसाद एहन डिब्बाक नाह बनौने छल जाहिमे पानि नहि पैसि सकैत छलैक।

चोभार पार कऽ आगाँ बढ़लाक बाद डिब्बाक नाह नीकजकाँ सरसराइत बहऽ लागल। बाटमे आनहु छोटछिन धार तथा नदी-नालासभ बागमतीमे आबिकऽ मिझराइत रहलैक। दहिनादिससँ कुलेखानी आएल, बामादिससँ कोखाझार आएल आ तकरा बाद मरिन खोला आएल। एकरासभकेँ मिझरा गेलासँ बागमती हहाइत-फुफुआइत विशाल नदी बनि गेल। बाढ़िमे पानिक बहाओ बेसी तेज भेलासँ टीनक ओ डिब्बा चक्कर खाइत आगाँ बढ़िरहल छलैक। एहिसँ भक्तप्रसादक मोन घूमऽ लगलैक। साँझो भऽ गेल रहैक, तेँ भक्तप्रसाद सुतबाक नियार कएलक।

प्रातभने सूर्योदयसँ पहिनहि भक्तप्रसाद निन्नसँ उठल। ओ देखलक जे पहाड़सँ हहाइत बहऽवला बागमती आब दोसरे भऽ गेल रहैक। बागमती फैलगर भऽ गेल रहैक आ शान्त भऽकऽ बहैत पानिपर डिब्बा छपाक-छपाक ध्वनि बहार कऽरहल छल। नदीक गति एतेक सुस्त रहैक जे नाह तैरिरहल अछि आ कि ठमकल अछि सेहो बुझबामे नहि आबिरहल छलैक। पूवदिस तकलापर भक्तप्रसाद सूर्यकेँ क्षितिजसँ नहुएँ-नहुएँ बहराइत देखलक। भक्तप्रसाद खुशीसँ गद-गद होइत चिचिआ उठल– “हम तराइ पहुँच गेलहुँ !”



पूब-पच्छिम राजमार्गपर

एहि तरहैं काठमाण्डू उपत्यकाक बेङ भक्तप्रसाद तराइ पहुँच गेल। किछु कालधरि ओ भोरका मधुरगर रौदमे अपन डाँड़ सेदैत डिब्बावला नाहमे विश्राम करऽ लागल। तकरा बाद ओ अपन एकटा टाङ पानिमे खसौलक आ नाह खेबब शुरू कऽ देलक। कछेरदिस बढ़ैत काल ओ एकटा टिटही चिड़इकैं देखलक। ओ अपन लोलसँ पाथरसभकैं उनटबैत कीड़ा-मकोड़ा तकैत चलिरहल छल।

ओ टिटही भक्तप्रसादकैं देखि मूड़ी उठौलक आ अपन परिचय दैत कहलक– "हमर नाम प्रचण्ड टिटही अछि। तोँ के छैं ? एहन फोकटिया टीनक डिब्बामे बैसिकऽ तोँ की कऽरहल छैं ?"

तराइक टिटिहीकैं सेहो जखन पहाड़ी बेङहिजकाँ बजैत देखलक तँ भक्तप्रसादकैं बड़ आश्चर्य लगलैक। बोली मिललाक कारणे भक्तप्रसादकैं गप्प करबामे आसानी भऽ गेलैक आ ओ अपन परिचय देलक– "हम भगता छी। पूरा नाम अछि हमर भक्तप्रसाद। तराइ देखबाक मोन भऽ गेल तँ काठमाण्डूसँ आएल छी। बड़ भूख लागल अछि, भैया ! किछु खाएलेल भेटि सकैत अछि ?"

"ले, ई खा-कऽ देखही तँ !" कहि टिटही किछु पानिक कीड़ा ओकरा आगूमे राखि देलकैक।

"आहा, बड़ सुअदगर छैक"– एकटा पनिकीड़ी खाइत बाजल भक्तप्रसाद। मुदा पनिकीड़ीक सुआद कने तीजकहाँ छलैक, से ओकर



मुह तिताउँस भऽ गेलैक आ ओकरा बुझएलैक जेना ओ मुहमे सटि गेल होइक। ओहि तितहा कीड़ाकेँ चटपट गीड़ैत भक्तप्रसाद विषय बदललक आ पूछि बैसल– “हँ, तराइमे हम कोना घूमब से हमरा कने कहि ने दएह !”

प्रचण्ड कहलकैक– “ओ पुल जे देखाइत छौक, ओहिठाम पूब-पच्छिम राजमार्ग छैक, ओहिठाम चलि जो। ओहि राजमार्गसँ तोँ देशक पूब आ पच्छिम दुनू कोनधरि पहुँच सकैत छेँ। हम अपने तँ गेल नहि छी, मुदा लोकक मुहेँ सुनने छी। बेस तँ तोँ जो, हम पनिकीड़ी ताकऽ ओमहर जाइ छी।” एतेक कहैत प्रचण्ड अपन लोल निहुरबैत अभिवादन कएलक आ फुर्र दऽ उड़िकऽ बागमतीक ओहि पार चलि गेल। उड़ैत काल ओकर उज्जर आ आसमानी रङ्गक पाँखि सूर्यक किरण पड़लासँ चमकऽ लागल रहैक।

भक्तप्रसाद कूदैत-छड़पैत प्रचण्डक देखाओल बाटदिस विदाह भेल। किछु दूर गेलाक बाद ओ धारक कछेरसँ पुलपर चढ़ि गेल आ चिक्कन पीच सड़कपर आबि गेल। तड़ाक दऽ छड़पिकऽ ओ सड़क पार करहि लागल रहए कि एकटा भीमकाय माथसँ भक्तप्रसादक बाट छेका गेलैक। फोँफिआइत नाकक पूड़ा, बाहर निकलल डोकासनक आँखि, नाम-नाम सीङ्ग आ जीहसँ लेर टपकिरहल ओ माथ भयानक देखाइत छलैक। वास्तवमे ओ माथ एकटा बड़दक छलैक।

“हमर नाम तुलसी, आ ई हमर सङ्गी राम। गड़ी खीचब हमरासभक काज”– सपाट अन्दाजमे थाकलजकाँ बाजल ओ। “दहिना-बामा बिनु तकने ई सड़क पार कएलासँ की होइत छैक, से बूझल छौक? परौठा बनि जएबेँ बाउ! तोरा लेल कोनो बस-ट्रक रूकऽवल नहि छौक एतऽ। तोरा एतबो बात नहि बूझल छलौक की?”

“अहाँ हमर जान बचौलहुँ, तकरा लेल अहाँकेँ बहुत-बहुत धन्यवाद बड़द भैया!”– भक्तप्रसाद कहलक। एतबएमे एक-दोसरासँ आगाँ बढ़ि जएबाक धुनिमे दूटा रात्रिबस ओहीठामदने सड़ाक-सड़ाक निकलि पूवदिस दनदनाएल चलि गेल।

भक्तप्रसाद अपन नेपाल-दर्शनक इच्छा जखन ओकरा सुनौलकैक तँ तुलसी बड़द खूलिकऽ सभ बात बतबऽ लागल। ओ नमहर साँस खिचैत टूर-गाइडजकाँ कहब शुरू कएलक– “श्रीमान, अपनेसनक

पहाड़वासीकेँ तराइमे स्वागत अछि। नेपालक तराइ अत्यन्त रमनगर क्षेत्र अछि। हमरासभक जमीन समतल अछि। चलैत काल रस्तामे चढ़ान-उतरानक चिन्ता नहि रहलासँ हमरासभकेँ विचार करबाक लेल बेसी समय भेटैत अछि। हमसभ तँ कोनो काजमे बेसी सोच-विचार करैत छी। हमसभ अपनेक भेट एहिठामक विशेष होनहार बिलाड़ि, गाए, कुकुर, पड़बा आ मनुक्खसभसँ करबा देब। एहिठामक बिलाड़िक बाजब, पड़बाक घुटरब आ मनुक्खक गीतसभ आनठामसँ बेसी कर्णप्रिय होइत छैक। तराइक जङ्गलक तँ बातहि छोड़ि दिअ। आनठाम नहि भेटऽवला जीवजन्तु एहिठामक जङ्गलमे भेटैत अछि।"



"बड़द भैया, हम बिलाडि, कुकुर आ मनुक्ख तँ बहुतो देखने छी, मुदा जङ्गल नहि देखने छी। ई केहन होइत छैक ?"

इचङगूक धान खेतमे पलल-बढ़ल भक्तप्रसाद नागार्जुनक बोन तँ देखने छल, मुदा ओहिठाम लागल उँचगर देबालक कारणे ओकरा जङ्गल घुमबाक मौका कहियो नहि भेटल रहैक।

"जङ्गलक मतलब पैघ-पैघ गाछ, जड़ी-बूटी आ झाड़-पात होबऽवला जगह छियैक। ओहिठाम बहुतो जङ्गली जानवर आ चिड़इ-चुनमुन्नीसभ रहैत छैक।" एहिबेर राम बड़द भक्तप्रसादकेँ बुझबैत कहलकैक– "बेङ भाइ, तोरा शाही चितवन राष्ट्रिय निकुञ्ज जाइये पड़तह, बुझलह ! ओहिठामजकाँ जङ्गली जानवर तँ नेपालमे मात्र नहि, संसारहिमे कतहु नहि भेटतह।" एतेक जानकारी देलाक बाद बड़दक जोड़ी भक्तप्रसादकेँ अपना गड़ीमे चढ़ऽ लेल कहलकैक।

तुलसी आ रामक निमन्त्रण पाबि भक्तप्रसाद कूदिकऽ नारक बोझ लादल गड़ीपर चढ़ि गेल। तकरा बाद ओसभ तागजकाँ नमरल राजमार्गकेँ धएने पच्छिमदिस विदाह भेल। एक दिन आ एक राति चलालक बाद ओसभ पथलैया नामक बस्तीमे पहुँच गेल।

ओहिठाम रूकिकऽ दुनू बड़द भक्तप्रसादकेँ कहलकैक– "हमरासभकेँ एहिठामसँ दक्षिण वीरगञ्जदिस जएबाक अछि, तोँ हेटौड़ाधरि उत्तरभर चलि जाह आ तकरा बाद पच्छिमदिस चलि जइहह। बहुत दूर चललाक बाद भरतपुर आओतैक। ओहिठाम हवाइ मैदानसँ किछु बामादिस गेलापर चितवनक जङ्गल अबैत अछि।" किछु काल सोचिकऽ ओ फेर बाजल– "जङ्गलक जानवरसभसँ होशियार रहिहऽ ओसभ भरपोसुआजकाँ मीलिजूलिकऽ रहऽवला नहि होइत छैक।"



चितवनक जङ्गल

राजमार्गक कातेकात दू दिन आ तीन राति चललाक बाद भक्तप्रसाद एकटा बड़का मैदानमे पहुँचल। ओहि मैदानमे एकटा हवाइजहाज उतरिरहल छलैक। "तुलसी आ रामक कहलहा भरतपुर जरूर इएह होएबाक चाही।"– भक्तप्रसाद मोनहि मोन सोचलक। तकरा बाद ओ बामा घूमिकऽ सोझहि दक्षिणदिस विदाह भऽ गेल। किछु घण्टा चललाक बाद 'शाही चितवन राष्ट्रिय निकुञ्ज' लीखल काठक सङ्केतपट्टिका देखाए पड़लैक। ओहिठाम बाँसक ढाठ लागल छलैक आ एकगोटा खाखी रङ्गक बर्दी पहिरने ठाढ़ भेल छल।

ओ सिपाही भक्तप्रसादकेँ खूब निहारिकऽ देखलक। मुदा भक्तप्रसाद नहि डेराएल आ सिपाहीएक आगूदने कूदैत आगाँ बढ़ल आ ढाठकेँ पार कएलक। भक्तप्रसाद अपनाकेँ एहन देखबऽ चाहैत छल जेना ओ ओहीठामक रहनिहार हो आ बाहर कतहुसँ घूमिफीरिकऽ आबिरहल हो। मुदा से सुतरलैक नहि।

"रे, शेरबहादुर ! एम्हर अबै तऽ !"– ओ सिपाही अपना सङ्गीकेँ बजबैत कहलकैक– ओहि बेङकेँ देखैत छिहीक। ओ अपना पार्कक बेङजकाँ तँ नहि बुझाइत छैक !"

लगहिमे टाङल पालमेसँ शेरबहादुर बाहर आएल। ओ बेङकेँ हियाबैत बाजल– "बेङ दऽ तँ किछु नहि कहल जा सकैत अछि बलबहादुर। ईसभ अनेको तरहक होइत छैक।"



“मुदा ई तँ एखन बारहसँ भीतर अबिते अछि।”

“भऽ सकैए। एहिठामक भालु, गैँड़ा सेहो तँ आहारक खोजीमे बाहर जाइत अछि। ई बेङ सेहो कतहु जा-कऽ आएल होएतैक। छोड़ि दहीक बेचाराकेँ।”

ओकरासभकेँ गप्पसप्पमे ओझराएल देखि भक्तप्रसाद चुपचाप ओहिठामसँ ससरि गेल आ लङ्क लऽ पड़ाएल जङ्गलदिस। दौगैत-दौगैत एकटा विशाल गाछक निच्चा पहुँच ओ पैघ निसाँस छोड़लक।

ओ जतऽ विश्राम करबाक लेल बैसल छल से एकटा पैघ सिम्मरि-गाछक जड़ि रहैक। जड़िसँ देखलापर एहन बुझाइत छलैक जेना ओ गाछ आकाश छुबैत हो। भक्तप्रसाद नजरि घुमाकऽ चारूदिस देखलक। तखने ओकरा लगहिक झाड़ीसँ केओ बजौलकैक- “की छैक हओ भाइ ! हम तराइक बेङ छी। हमर नाम अछि चैतूलाल। तोरा किछु काल पहिने सिपहियावला ठाममे देखने छलियह। तोँ नाटक करऽमे तँ बड़ तेज छह हओ ?”

चैतूलाल बेङ बड़ नीक स्वभावक आ फरहर बुझाइत छल। ओ भक्तप्रसादसँ बहुत बेसी बलगर बुझाइत छल। ओकर रङ्ग कारी छलैक। ओ भक्तप्रसादकेँ कहलकैक जे चितवनक जङ्गलमे देश-विदेशक लोकसभ घूमऽ अबैत छल, मुदा कोनो बेङकेँ घूमऽ आएल आइ पहिलबेर तोरे देखलियह।

चैतूलाल जङ्गलक सभ बासिन्दाकेँ भक्तप्रसादक काठमाण्डूसँ अएबाक समाद सनौलक। ओहि दिन राप्ती नदीक खुला किनारपर चितवन जङ्गलमे रहल सभ तरहक जानवरसभ पाहुनसँ भेट करबाक लेल जुटल। हरिणक झुण्ड अपन थुथुनसँ बेङक पीठपर रगड़ि ओकर अभिवादन कएलक। ‘घड़ियार’ गोहि अपन डेराओन तिखगर दाँत देखाकऽ ओकरा नमस्कार कएलक। मोटगर चमड़ीक पर्त-पर्तवाली एकटा मादा गैँड़ा सेहो ओहिठाम छलि। नाकक उपर जनमल छोटका सिङकेँ हिलबैत अपन नान्हिटा आँखि झपकाकऽ ओ बेङसँ चिन्हा-परची कएलक। ओकर विशाल-विकराल देहक पाछाँ एकटा बच्चा गैँड़ा सेहो घोसिआएल छल।

ओ मादा गैँड़ा अपन बेटाकेँ चिन्हबैत कहलकि– “ई हमर बेटा एकराज छी। बड़ लजकोटर अछि। लएह एकराज, बेङजीकेँ बता

दहक तँ जे तोँ एक सिङवला गैँड़ा छह आ कि दू सिङवला ?"

"एक सिङवला"– बच्चा अपन माएसँ लटपटाइत कनिए जोरसँ जवाब देलक।

"आ दू सिङवला गैँडा कतऽ पाओल जाइत छैक ?"

"अफरिकामे"– एहिबेर बच्चा निधोख भऽकऽ जोड़सँ जवाब देलक। भक्तप्रसाद आ एकराज किछुए कालमे एक-दोसराक सङ्गी बनि गेल। किछुए कालमे ओसभ पैघ-पैघ झाड़ीमे नुक्का-चोरी खेलाए लागल। सिमरक ठाढ़िपर बैसल लङ्गूरसभ मुदा निच्चा नहि उतरल। ओसभ उपरे बैसल-बैसल सिमरक रुइया खसा-खसा भक्तप्रसादक स्वागत कएलक। एकटा मरदाना मयूर अपन पाँखि पसारने शान बघाड़ैत ओहिठाम आएल। मुदा ओकर घमण्डी प्रवृत्तिक कारणे केओ ओकरादिस ध्याने नहि देलकैक। अपनाप्रतिक एहि नापरवाहीसँ तिलमिलाकऽ ओ तिखगर स्वरमे चिचिआएल "याहाँ ! याहाँ !"

तखने झाड़ीमे कारी आ पीयर धारीसभ लुकझुक करैतसन बुझएलैक। ओहिठाम होबऽवला हो-हल्ला आ गर्दगोहारि अचानक शान्त भऽ गेलैक। झाड़ीसँ नहुएँ ओ छाँह बाहर देखाए लागल। "ओहो महारानीजी ! आएल जाए, आएल जाए"– खुशीसँ कूदैत चैतूलाल बेङ आगू बढ़ल। चितवन जङ्गलक रानी बाघिन जल्दी कोनो 'छोटछिन' जानवरसभसँ घुलमिल नहि करैत छलि। मुदा काठमाण्डूसँ आएल बेङकेँ बिन देखने ओकरा नहि रहल गेलैक।

बाघिन भक्तप्रसादक सङ्ग बातचीत सेहो कएलकि। बाघिन भारी मुदा नेह भरल स्वरमे बाजलि– "बौआ तोँ बड़ भागमन्त छैँ जे जतऽ मोन होइत छौक ओतऽ चलि जाइछैँ।" भक्तप्रसाद बात नहि बूझि माथ कुड़िआबऽ लागल। ओहिठामक सभ जीवजन्तु आ मयूर सेहो बाघिनक गप्प कान ठाढ़ कऽ सूनिरहल छल। ओ गम्भीर भऽ अर्थ बुझबैत बाजलि– "तहिया सौँसे चितवन घनगर जङ्गलसँ भरल छल। लोक एकरा चारिकोसी झाड़ी कहैत छलैक। घनगर बोनक कारणे हम

जनावरसभ स्वच्छन्द भऽ सभतरि घूमिफीरि सकैत छलहुँ। आइकाल्हि पहाड़क लोकसभ एम्हर आबि जङ्गलकेँ सुड्डाह कऽ देलकैक अछि। होइत-होइत एहन छोट जगहमे हमरासभकेँ कहुना सकसिकऽ रहऽ पड़िरहल अछि।"

"मुदा रानीसाहिबा चितवन जङ्गल तँ बड़ पैघ अछि।" भक्तप्रसाद बिच्चहिमे बात कटैल बाजल। "हँ, देखऽमे तँ पैघे अछि। बेङ आ छोटछिन जन्तुक लेल तँ बड़ पैघ अछि। मुदा, पैघ-पैघ जानवरकेँ एतबए जगहमे की खाएल-पीयल होएतैक आ की घूमल-फिरल होएतैक? बाघकेँ जतेक जगह चाही रहबाक लेल, ओतेक आइकाल्हि कतऽ भेटैत छैक?"

बाघिनक गम्भीर बात सभ ध्यान लगाकऽ सूनिरहल छल- "चारिकोसी झाड़ी लगभग खतमे भऽ गेल। एखन राष्ट्रिय निकुञ्ज आ आरक्षणसभ आनोठाम नहि खुजल छैक से बात नहि छैक। मुदा, लोकक बस्तीमे बिन पैसने हमसभ अपना जगहपर पहुँचिए नहि सकैत छी। तोँ तँ बेङ छेँ, तँ काठमाण्डूसँ एहिठामधरि आबि सकलएँ। मुदा हम चाहियोकऽ कहियो काठमाण्डू नहि जा सकैत छी।" एतेक कहैत ओ अपन बातकेँ विराम देलकि।

जङ्गल भेल बेरक चितवनक कल्पना कऽ भक्तप्रसादक सङहि सभ जीवजन्तु क्षुब्धता व्यक्त कऽरहल छल। तखने आकाशमे चकमक-चकमक बिजलौका लौकऽ लगलैक। एक्कहि छनमे मेघो गरजऽ लागल। जानि ने कोम्हरसँ जोरशोरक हवा-बिहाड़ि आएल आ सिमरक पैघ-पैघ गाछसभ लीबऽ लागल।

आकाशमे कारी-धुध्धुर मेघ मड़राए लागल। एक्कहि छनमे पानिक बड़का-बड़का बुन्न पड़ऽ लागल। गाछपात, झाड़ी आ राप्ती नदी सभदिस मुसलाधार पानि पड़ल।

बेङके जँ बरसातक पानि भेटि जाए तँ आओर चाहबे की करी? भक्तप्रसादकेँ तराइक पानिमे भिजबामे खूब मोन लगलैक। ओहिठाम

जमा भेल आन जीवजन्तुसभ सेहो मगन भऽ वर्षाक आनन्द लेबऽ लागल। घड़ियार-गोहि पानिक बुन्न पीबाक लेल मुह बओने छल। बानरसभ कतहु गाछपर छड़पनियाँ मारिरहल छल तँ कतहु जङ्गली लत्तीमे लटकि झुलुआ झूलिरहल छल। सुगा, पडुकी आ कौआसभ चिचिआइत, कुचरैत एमहर-ओमहर कऽरहल छल। बसात आ पानिसँ ओकरासभक पाँखि छितराएलसन बुझाइत छलैक। बाघिन भक्तप्रसादकेँ अपना पीठपर बैसा छपर-छुपर करैत एमहर-ओमहर खेलबऽ लागल।

भक्तप्रसाद अपन बेङ्ची अवस्थामे सङ्गीसभक सङ्ग जे खेलाएल रहए सएहटा, नहि तँ कहियो एतेक नीकसँ नहि खेलाएल छलए। चितवनक जङ्गलमे बाघिनक पीठपर बैसि उछलि-कूदि पएबाक बात तँ ओ कहियो सपनहुमे नहि सोचने छल। तकरा बाद एकेकरासे सङ्गी-साथीसभकेँ पाबि ओ दङ्ग छल। ओ अपन खुशी दबा नहि पौलक आ चिचिआ उठल– “वाह, कतेक मजा! कतेक!”

पानि पड़नाइ जहिना एकबाइग शुरू भेल छलैक, तहिना थम्हियो गेलैक। कने कालक लेल पूरे जङ्गल सुनसानजकाँ भऽ गेलैक। एकाएक गाछपरसँ सुग्गासभ हाथी अएबाक सङ्केत देबऽ लागल। ई सूनि सभ जीवजन्तु झाड़-झङ्खाड़मे नुका गेल। घड़ियार गोहि लम्बा साँस लैत नदीमे डुब्बी लगबऽ लागल। बाघिन सेहो “बौआ, तमसइहेँ नहि” कहैत भगताकेँ गैंड़ाक गोबरक चोतमे राखिकऽ नहुए झाड़ीदिस ससरि गेलि। मनोरञ्जनक वातावरण एकाएक सुनसानमे बदलि गेलैक।

एक्कहि छनमे पाँचटा हाथीक झुण्ड नजरि आएल। ओकरासभक पीठपर हौदा कसल छल। आ ओकरासभक पीठपर वन्यजन्तु देखऽ आएल पर्यटकसभ बैसल छल। ओसभ तँ साधल गेल हाथीसभ छल।

भक्तप्रसाद आ चैतूलाल दुनू गोबरक ढेरपरसँ पर्यटकसभ चढ़ल हाथीक झुण्डकेँ देखैत रहल। पर्यटकसभ वन्यजन्तुसभकेँ नहि देखि नाखुशजकाँ बुझारहल छल। केहन विचित्र बात! एहिठामक झङ्खाड़मे

बाघ, गैँड़ा आ बनैया सुगरसभ सह-सह कऽरहल छलैक। मुदा लोककेँ तकर पत्ते नहि छलैक। “बेचारा ईसभ कतेक पाइ खरचिकऽ जङ्गली जानवरसभकेँ देखऽ अबैत अछि। मुदा एहिठामसँ ईसभ खालि गाछ, पात आ जङ्गल मात्र देखिकऽ घूरि जाइत अछि।”– अपन हँस्सी रोकैत मैदानी बेङ कहलक।

पर्यटकहिसभजकाँ ओ हाथीसभ सेहो अकच्छ बुझारहल छल। किछु कालक बाद यो पर्यटक आ हाथीसभ आँखिसँ अऽढ़ऽ भऽ गेल। तकरा बाद लगपासक रुङ्खाड़मे नुकाएल जीवजन्तुसभ हँसैत-खेँखिआइत बाहर आएल।

“लोकसभकेँ चितवनक जङ्गल केहन बेकार गलैत होएतैक, नहि?”– भक्तप्रसाद चमकैत कहलक। मुदा ओकरा जवाब नहि भेटलैक। ओ अपन नव सङ्गीकेँ एम्हर-ओम्हर तकलक। मुदा चैतूलालक कतौ नामोनिशान नहि छलैक। भक्तप्रसाद घड़ियार गोहिकेँ नदीक किनारपर देखलक। ओ मुहमे कोनो चीज चिबारहल छल। बेचारा चैतूलाल। आइ भोरुका जलखइ भऽ गेल छल घड़ियार गोहिक।

घड़ियार गोहि पानिमे डुबकी लगबऽसँ पहिने भक्तप्रसाददिस घूमिकऽ कहलकैक– “काठमाण्डूक बेङबाबू ! ई जङ्गल छियैक, जङ्गल। एहिठाम जङ्गलेक कानून चलैत छैक। ई जगह तोरा लेल ठीक नहि छह। बल्कि पोखरादिस चलि जाह।”

एतेक कहैत घड़ियार गोहि पानिमे बिला गेल। भक्तप्रसादक तँ डरेँ हालत खराब छलैक। अपना जनैत जतेक जोरसँ भऽ सकल कूदि-फानिकऽ ओ चितवनक जङ्गलसँ पड़ाएल।



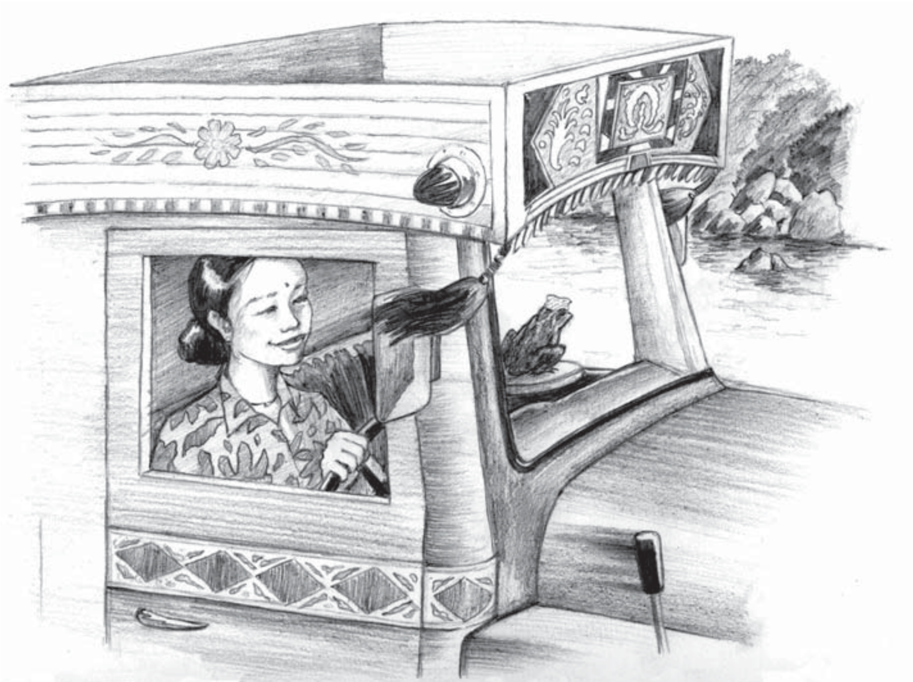
उत्तरदिस चललापर

घड़ियार गोहि जखन पोखरा जएबाक सुझाव देलकैक तँ भक्तप्रसाद पोखरे जएबाक विचार कएलक। ओ मोनहि मोन सोचलक जे कमसँ कम ओहिठाम एक्के छनमे गोहिक सङ्गी आ एक्के छनमे ओकरे आहार तँ नहि ने बनऽ पड़त !

पोखरा सेहो काठमाण्डूएसन उपत्यका अछि, से ओकरा बूझल रहैक। चारूकातसँ पहाड़सँ घेराएल आ बीचमे रहल मैदानी समतल भूभागकेँ उपत्यका वा घाटी कहल जाइत छैक, से तँ ओ जनितहि रहए। मुदा उपत्यका रहितहुँ पोखराक बनाबटि किछु अलग छैक आ समुद्र सतहसँ उँचाइ सेहो काठमाण्डूक अपेक्षा कम्मे छैक। अन्नपूर्णा हिमालयक कोरमे बैसल पोखरा चितवनसँ उत्तर-पच्छिम दिशामे अछि, सेधरि ओकरा नीकजकाँ नहि बूझल छलैक।

तैयो एखनधरिक यात्रासँ भक्तप्रसाद किछु अनुभवी भऽ गेल छल। बहुत किछु बूझऽ सेहो लागल रहए ओ। ओ ट्रकमे चढ़ि पोखरा जएबाक विचार कएलक। ट्रक पकड़बाक लेल नारायणघाट पहुँचऽ पड़ितैक। भक्तप्रसाद सुनने रहैक जे नारायणघाट नारायणी नदीक कछेरपर पड़ैत छैक आ नेपालक मुख्य राजमार्गसभ ओहीठामसँ जाइत छैक।

मुदा समस्या छल जे नारायणघाट गेल कोना जाए! “बिन चलनहु नारायणघाट पहुँचबाक कोनो आसान उपाय अवश्य होएबाक चाही।”–



कच्ची सड़कक कातमे चुक्कीमाली भऽ बैसि भक्तप्रसाद सोचलक। तखने दहिना आ बामा दुनूदिससँ दालि-चाउरक बोरा आ मोटरी-चोटरी लदने साइकिलक झुण्ड सड़कपर नजर पड़लैक। ओ सभटा साइकल उत्तरदिस जा-रहल छल। भगता अन्दाज लगौलक जे ईसभ जरूर नारायणघाट बजारमे सामान पहुँचाबऽ जा-रहल अछि। खोजी-पुछारीमे समय बरबाद नहि कऽ भक्तप्रसाद चटपट पछुलका एकटा साइकलपर लादल सामानपर कूदिकऽ चढ़ि गेल।

झलफल साँझ भेलापर भक्तप्रसाद जाहि साइकलपर चढ़ल छल से नारायणघाटक मुख्य चौकपर पहुँच गेलैक। भक्तप्रसाद ओहिठाम फट दऽ उतरि गेल। भगता होहल्ला आ भीड़भाड़क संसारमे पहुँच गेल छल।

चौके कातक बस-स्टेशनपर रात्रिबससभ रुकैत तेना ने हाँर्न बजबैत छल जे होइत छलैक कानक जाली फाटि जाएत। एहिमेसँ कोनो पच्छिम नेपालगञ्जदिस जाएवला रहैत छल तँ कोनो पूव काँक्ड़भिट्टादिस। नारायणघाटमे झिलमिल बरैत बओल आ मरकरीसभसँ रातुक दस बजे सेहो दिनेजकाँ बुझाइत छलैक। मोटरसाइकिलसँ लऽ लत्ता-कपड़ा, बिजली, जेनरेटर आ मौसमअनुसारक फलफूल आदि सभकिछु थोकबजारमे बेचबाक लेल राखल छलैक। नारायणघाटक बजार काठमाण्डूक असनबजारसँ चल्तीवला आ बेसी हूली-मालिवला बुझाइत छलैक।

“एहन हूलि-मालि तँ हमर बाबा सेहो कहियो नहि देखने होएताह”– पोखरा जएबाक विचार करऽ कालमे भक्तप्रसाद सोचलक। बजारमे चलबाक लेल ओ नालीक बाट पकड़लक। एना कएलासँ ओकरा गाड़ीक पहिया आ कोनो आदमीक पएरक निच्चा आबि पिचएबाक डर नहि छलैक। घूमैत-घूमैत ओ ट्रक-ड्राइभरसभक खाना खाएवला होटलमे पहुँचल। ओहिठाम ट्रकक किछु ड्राइभरसभ भोजन कऽरहल छल।

भक्तप्रसाद ओहि छपरीवला होटलमे पैसल आ एकटा बेञ्चक निच्चामे बैसि ड्राइभरसभक गप्प-सप्प सूनऽ लागल। ओहिठामक बातचीतसँ ओकरा बुझएलैक जे ओहिमेसँ एकटा ट्रक पोखरादिस जाए लागल छल। ओ ट्रकक ड्राइभर एकटा मौगी छलि। ओकर नाम फूलमाया छलैक।

भक्तप्रसादकेँ पता चललैक जे फूलमाया नेपालभरिक पहिल महिला ट्रकड्राइभर अछि। “ओतेक बड़का देश भारतमे सेहो ट्रक चलौनिहारि कोनो महिला नहि छैक”– होटलक एकटा बैरा ओहिठामक ग्राहकसभकेँ सुनारहल छल। “भेलौ-भेलौ, कते बर्र-बर्र करैछेँ! चुप्प।”– सभ दिन एक्कहिटा बात सुनैत-सुनैत अकच्छ भऽ गेलि फूलमाया बाजलि। एक नजरि एहि फूलमायाकेँ देखि ली कहि बेञ्चक तरसँ भक्तप्रसाद गरदनि नमड़ौलक। एहि क्रममे ओ एकटा बैराक चप्पलतर पिचाइत-पिचाइत बाँचल। ओकर मूड़ी आ बैराक चप्पलमे एक्के इञ्चक

अन्तर छलैक। फूलमायाक रङ्ग गहुमा आ आँखिक भौँह कारी छलैक। थोपल नाकमे ओ फूली लगौने छलि। यो चलबाक उपक्रम करैत अपन केशकेँ सरिअबैत खोपा बन्हलकि। टेबुलपर बैराक लेल बक्सिस छोड़ैत "बेस तँ बाउ" कहैत बाहर निकललि। भक्तप्रसाद फूलमायाकेँ पछुऔने चलि गेल।

बाहर सामानसँ भरल एकटा टाट ट्रक ठाढ़ छल। एकगोट खलासी कातमे ओकर बाट जोहिरहल छल। फूलमाया आ ओ मीलिकऽ ट्रकक पहियाक हवा, बैट्रिकमहक पानि, बिजली आदि जँचलक।

फूलमाया जेँ कि केबाड़ी खोललक कि भक्तप्रसाद तड़ाक दऽ छड़पिकऽ ड्राइभरक सीटमे जा बैसि रहल। फूलमायाक सङ्ग आँखि मिलबैत ओ बाजल– "देखह फूलमाया! तोँ नेपालक पहिल महिला ड्राइभर छह तँ हमहूँ नेपालक पहिल यात्री बेङ छी। तेँ हमरासभकेँ मीलिकऽ चलबाक चाही, बुझलह ? हमरा तोँ पोखराधरि लेने चलबह ?"

बाजऽवला बेङकेँ देखिकऽ फूलमाया पहिने तँ चौँकि उठलि। मुदा केहनो परिस्थितिक सामना करऽमे सिद्धहस्त भऽ चुकल छलि फूलमाया। एकटा कुशल गाड़ी-ड्राइभरमे ई गुण होएबाको चाही। फूलमाया बाजलि– "आहा, कतेक नीक। तोँ तँ बाजऽवला बेङ छह हओ! .... ठीक छैक, हम तोरा पोखराधरि लऽ चलबह।" फूलमायाक मधुर वचन सूनि भक्तप्रसाद निश्चिन्त भऽ गेल।

"मुदा, रातिमे तँ ट्रकमे जाड़ होइत छैक। तोरासङ्ग कपड़ा-लत्ता छह कि नहि?" फूलमाया ओकरासँ पुछलकैक। भक्तप्रसाद कहलकैक जे ओ तँ अपना जिनगीमे कपड़ाक नामपर कहियो एकटा तागो नहि पहिरने अछि।

"नहि कोनो बात। लएह आबह हमरासङ्ग, हम तोरा कपड़ा कीनि दैत छिअह।" एतेक कहैत फूलमाया बेङकेँ दोकानदिस लऽ गेलि। मुदा, राति भऽ गेलाक कारणे दोकानसभ प्रायः बन्न भऽ गेल छलैक। एकटा

टोपीक दोकान मात्र खुजल छलैक। “किछु नहि रहैक ताहिसँ तँ नीक जे एकटा टोपीए भऽ जाए।”– फूलमाया बाजलि। ओ एकटा लाल आ हरियर धारीवला टोपी किनलकि आ भक्तप्रसादक माथपर पहिरा देलकि। टोपीसँ भक्तप्रसादक आँखिए मुना गेलैक। बेचारा भक्तप्रसाद जीवनमे पहिलबेर किछु पहिरने छल। भक्तप्रसादकेँ देखि फूलमायाके हँसा गेलैक।

तकरा बाद ओसभ ट्रकदिस गेल। फूलमाया अपना ड्राइभरवला सीटमे बैसि गेलि आ हाथसँ भक्तप्रसादकेँ उठाकऽ पसिञ्जरवला सीटमे बैसा देलकैक। एतबए नहि ओहिठाम एकटा स्टूल राखिकऽ भक्तप्रसादकेँ ओहि उपर बैसा देलकैक, जाहिसँ ओकरा बाहरक दृश्यसभ देखबामे आसानी होइक। खलाँसीकेँ पाछूमे सामानक सङहि जा-कऽ बैसऽ पड़लैक।



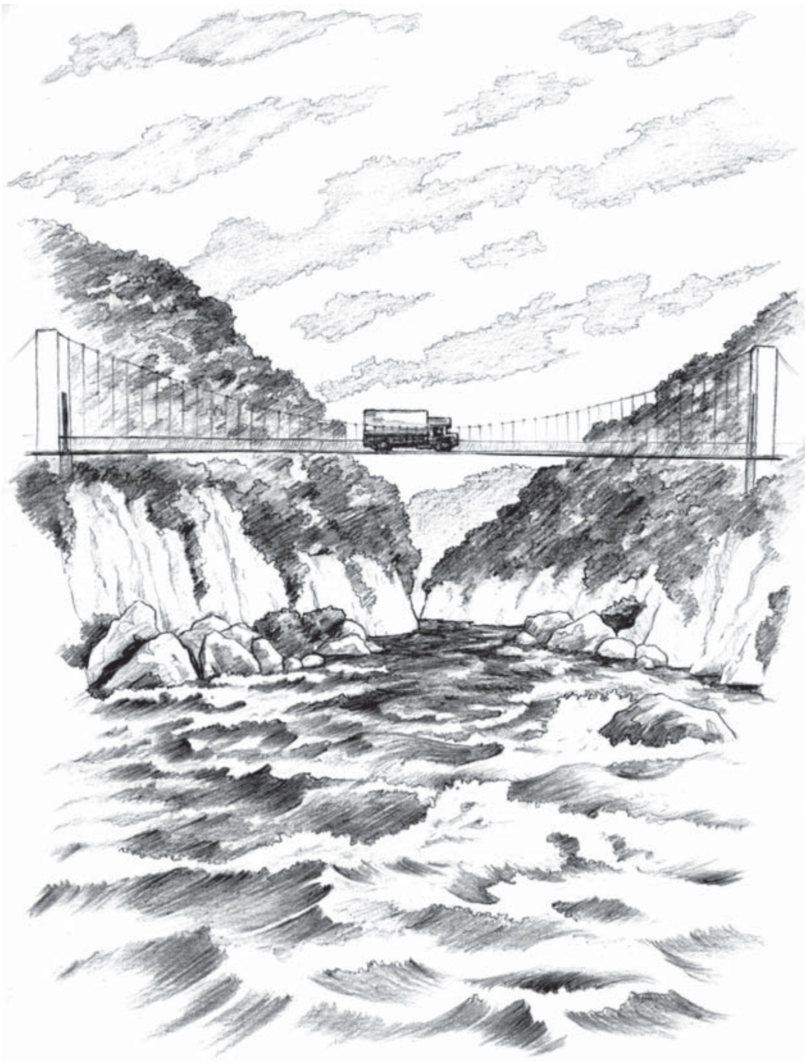
नदी-नाला आ पहाड़सभ

फूलमायाक घर तराइक मलङ्गवामे छलैक। ट्रक चलाकऽ ओ देशक बहुतोठाम पहुँच गेल छलि। तेँ ओकरा बहुतो बातक ज्ञान भऽ गेल छलैक। नारायणघाटसँ चललाक बाद ओ भक्तप्रसादकेँ पोखरा जाएवला बाट दऽ जानकारी देबऽ लागलि। “ई सड़क नारायणी नदीक काते-कात जाइत अछि। किछु आगाँ जा देवघाट पहुँचलाक बाद दहिनादिस कालीगण्डकी आबि नारायणी नदीमे मिलैत अछि। ओहिठामसँ उतरबरिया भागकेँ त्रिशूली-गङ्गा कहल जाइत छैक। त्रिशूली-गङ्गामे फेर उत्तरभरसँ आबि सेती नदी सेहो मीलि जाइत छैक। किछु आओर आगाँ बढ़लापर त्रिशूलीमे मर्स्याङ्दी नदी मिलैत छैक। ओहि सङ्गमलग काठमाण्डू आ पोखरा जएबाक बाट फराक होइत अछि। पोखरा जएबाक लेल एकटा बड़का झुलुआ पुल पार करऽ पड़ैत छैक।”

नदीए-नालाटाक गप्प सुनैत-सुनैत भक्तप्रसादकेँ अकच्छ लागि गेल होएतैक, से सोचि फूलमाया मधुरगर भासमे गीत गाबऽ लागलि।

ओकर गएलहा गीत सेहो नदीए-नालासँ सम्बन्धित छलैक। फूलमाया जखन ‘बन्दीपुरे उकाली लामो, मर्स्याङ्दी डुङ्गाले तरेर’ गीत गाबऽ लागलि तँ भक्तप्रसाद औङ्घाए लागल। बन्दीपुर पहाड़पर रहल एकटा पुरान बजार थिक, जे एखन पोखरा-काठमाण्डू राजमार्गपर डुम्रे भऽकऽ गेल जाइत अछि, तेँ मुख्य सड़कसँ किछु अलग भऽ गेल अछि।

दूर देखाइत हिमशिखरसभमे रौदक पहिल किरिन जखन पड़लैक तखन जा भक्तप्रसाद निन्नसँ जागल । ओसभ पोखरा पहुँच गेल छल । मुदा पोखराक बजार आबऽमे एखन आओर किछु काल बाँकी छलैक । ओहिठामसँ हिमालयक दृश्य बहुत मनोरम लगैत छलैक । भक्तप्रसाद काठमाण्डूक इचङ्गूमे रहल पहाड़क चोटीसँ लाङटाङ हिमालय आ



गणेश हिमालय तँ देखने छल, मुदा एहिठामसँ देखाएवला हिमालयक दृश्यमे किछु अलग बात छलैक। देखलापर एना बुझाइत छलैक जेना हिमशृङ्खला पोखराकेँ झाँपि देने अछि।

फूलमायाकेँ हिमालयसभ दऽ सेहो ओतबए जानकारी छलैक। "एखन जाहि पहाड़पर रौद देखारहल छैक से 'बौद्ध-हिमालय' अछि। तकरा बाद बामा कातक हाथीक पीठसनक जे ढेर अछि, से 'लमजुङ-हिमालय' अछि। आ ओकरे कातमे जे ठाढ़ अछि ओ उँचगरहा शिखर, से 'अन्नपूर्णा दोसर' अछि। सभसँ अलग बामा कातमे देखाएवला हिमशिखर 'अन्नपूर्णा पहिल' अछि। एहिठाम देखाएवलासभमे सभसँ पैघ शिखर उएह अछि"– ओ बाजलि। काल्हिखन नदीनालासभक नाम सूनि भक्तप्रसाद छगुन्तामे पड़ल छल आ आइ हिमालयसभक नाम सूनि ओ टौआरहल छल।

"हे, ओ देखह भक्तप्रसाद, ओ छियैक माछापुच्छ्रे!"– फूलमाया एकटा शिखरदिस देखबैत बाजलि। माछापुच्छ्रेक नाम तँ भक्तप्रसाद सेहो सुनने छल। तेँ नाम लैतदेरी ओ झटपट खिड़कीसँ बाहर देखलक। पिरामिड-सन आकारक कारी चट्टान आ ठामठाम बर्फक ढेर लागल विशाल पर्वतसभ ओ सामनेमे देखिरहल छल। पर्वत कतेकटाक अछि से देखबाक लेल जे भगता माथ उपर उठाकऽ देखलक तँ ओकर टोपी निच्चा खसि पड़लैक। मुदा माछापुच्छ्रे शिखर ओकरा माछक 'पुच्छर' अर्थात पुच्छीजकाँ नहि बुझएलैक। ओ फूलमायाकेँ पुछलक– "दिदी ई तँ माछक पुच्छीजकाँ नहि लगैत छैक?"

खसलाहा टोपी एक हाथेँ उठा भक्तप्रसादक माथपर रखैत ओ बाजलि– "धत मूर्ख! सभदिससँ थोड़े ने माछक पुच्छीजकाँ देखाइत छैक। मुदा पोखरासँ घान्द्रुक गामदिस जाइत काल माछेक पुच्छीजकाँ देखाइत छैक।"

फूलमायाक बातक जाँचे मात्र करबाक लेल सेहो ओ घान्द्रुक गाम जएबाक नियार कएलक। ओ फूलमायाकेँ सेहो अपन विचार सुनौलक।

"पहिने पोखरा घूमि लएह, तकरा बाद घान्द्रुक जइहह"– फूलमाया कहलकैक। फूलमाया ओकरा जानकारी देलकैक जे पोखरामे एकटा पैघ झील, शहरकेँ चीरैत बहैत सेती नदी, महेन्द्र गुफा आदि ठामसभ देखबायोग्य अछि।

फूलमायाक ट्रक जहाँ कि पोखरा पहुँचल कि भगता तनफन करऽ लागल। ओकरा होइत रहैक जे कखन ट्रकसँ कूदि जाइ। कतऽ जाइ, की करी सोचैत ओकर मोन चञ्चल भऽ गेल रहैक। मुदा ओकरा अपनहु पता नहि चलिरहल छलैक जे एना किएक भऽरहल छैक। फूलमाया ओकर अकुलाहटि भाँपि गेलि।

"लगहिमे बड़का झील छैक, से तँ तोरा बूझल भइए गेल होएतह! तोरा पानिमे नहि खेलएना सेहो ढेरी दिन भऽ गेल होएतह। तेँ भरिसक तोरा पानिमे डुबकी लगएबाक धड़फड़ी भऽरहल छह।" एतबा कहैत फूलमाया फेवातालक लगमे लऽ जाकऽ ट्रक रोकि देलकि। भक्तप्रसादक लेल केबाड़ खोलैत फूलमाया कहलकैक– "ठीक छैक भगत, फेर भेटब! नदी आ पर्वतदिस जएबा कालमे होशियार रहियह। बेस जाह तँ!" भगताकेँ छोड़िकऽ घूरैत काल फूलमायाक मुहमे उदासी झलकैत छलैक।

ट्रकसँ फट दऽ कूदिकऽ भगता फेवातालदिस दौड़ल। फूलमायाक ट्रक धूआँ आ गरदा उड़बैत चलि गेल। मुदा भक्तप्रसादकेँ एतबो ध्यान नहि रहलैक जे पाछाँ घूमिकऽ देखए। ओकरा मोनमे तँ एतबए धुनि लागल रहैक जे कखन जाए आ पानिमे छपाकसँ कूदि पड़ए। ओ ओतेकरासे पानि देखिकऽ सोचलक– "वाह, कतेक रास पानि छैक! कतेक पैघ पोखरि! नहि, ई तँ पोखरि नहि, ई तँ झील अछि। झील की, बुझू ई समुद्रे अछि। नहि, ई तँ महासागर अछि। बाबाकेँ जँ ई महासागर देखा पबितहुँ तँ कतेक आनन्द अबितैक!"



पोखरेलिया भोज

भक्तप्रसाद ओहि 'महासागर'दिस चलले रहए कि अपनहि जौँआ भाएसन लगैत एकटा दोसर बेङपर ओकर नजरि पड़लैक। भक्तप्रसादकेँ लक्षित करैत ओ गद्दह कएलक– "रे बण्ठा, हमरा बिना पुछने तोँ कोना हमर इलाकामे प्रवेश कएलेँ? तोँ अपनाकेँ बूझैत की छेँ?"

मुदा ओकर बातकेँ बिना कोनो मोजर देने भक्तप्रसाद झीलक महाड़पर पहुँचल आ फटाकदना छड़पिकऽ पानिमे छपाकसँ कूदि गेल। पहिने पानिमे खूब निच्चाधरि गोँता लगौलक आ तकरा बाद हेलऽ लागल। तखन ओ अपन दुनू हाथक तकिया बना उतान भऽकऽ आरामसँ हेलनाइ शुरू कएलक। बहुतो दिनसँ पानि नहि भेटल छलैक, से भक्तप्रसादकेँ अपन देहकेँ खुशफैलसँ भिजएबाक नीक मौका भेटलैक। तकरा बाद ओ धत्तापरहक थालमे लेड़हा-लेड़हाकऽ खूब खेलाए लागल। ओकरा थालमे खेलएबामे खूब आनन्द आबिरहल छलैक। खेलएबाक धुनिमे बड़ी कालक बाद ओकरा बुझएलैक जे ओकरादिस केओ ताकिरहल छैक। ओ हियाकऽ तकलक तँ देखैत अछि जे ओकरेसन एकटा बेङ लगहिक एकटा पाथरपर चुक्कीमाली भऽ बैसल ओकरहिदिस टुकुर-टुकुर ताकिरहल अछि। भक्तप्रसादसँ नजरि मिलतहि ओ बेङ चिकरल- "दोसराक ठाममे आबिकऽ जे तोँ एना करैत छेँ से तोरा कोनो गत्रमे डर नहि छौक?"

"माफ करह भाइ। एतेक रासे पानि देखिकऽ हमर मोनहि ने मानलक, तेँ तोरासँ पुछनाइए बिसरि गेलहुँ।" भगता सफाइ दैत बाजल।

"तोँ हमरा इलाकामे छेँ। हमरासभक मुह मिलैत अछि तेँ, नहि तँ तोरा हम तखनहि सिपाही बजाकऽ पकड़बा दितिऔक। देखबामे तँ तोँ हमर खासे भाएजकाँ लगैत छेँ, मुदा असलमे तोँ छेँ के?"

थालहिमे बैसल-बैसल भक्तप्रसाद अपन यात्राक संक्षिप्त विवरण देलक आ कहलक– "एक तरहसँ हमसभ भैयारीए छी। हमरासभक मुह मिलबाक कारण ई अछि जे हमसभ एक्कहि जातिक छी। हमरासभक जातिकेँ वैज्ञानिकसभ 'राना टिग्रिना' कहैत अछि। ई जाति गढ़वालसँ सिक्किमधरिक पूरे मध्यपहाड़ी भागमे भेटैत अछि"– भक्तप्रसाद बेस बुझनुकजहाँ बाजल।

भगताक बातसँ प्रजापतिकेँ अजगुत भऽरहल छलैक। से देखि भगता आओर बुझनिहारजकाँ कहऽ लागल– "एहने बड़काटाक दोसर झील पच्छिमी नेपालमे सेहो छैक। ओहि झीलकेँ 'राराताल' कहल जाइत छैक। ओहि झीलमे संसारमे आनठाम कतहु नहि भेटऽवला बेङ पाओल जाइत अछि। ओहि जातिकेँ वैज्ञानिकसभ 'रानारारा'क नाम देने छैक, बुझलहक?"

भक्तप्रसादक जवाबसँ पोखराक बेङक चित्त बूझि गेलैक। "तखन तँ ठीके छैक। हमर नाम प्रजापति पोखरेलिया अछि। तोँ छोटकरीमे हमरा पीपी सेहो कहि सकैत छह। जेना कि तोहर नाम बीपी छह।" एतेक कहैत प्रजापति सेहो थालमे कूदि पड़ल। ओकरो भक्तप्रसादजकाँ थालमे लेड़हा-लेड़हाकऽ खेलएबामे खूब मोन लगैत छैक।

प्रजापतिक माथपर एकटा चेन्ह रहैक। एतबासँ मात्रे भक्तप्रसाद आ ओकरा अलग-अलग बेङक रूपमे चीन्हल जा सकैत छल। ओसभ काठमाण्डूक आ पोखराक जीवजन्तु, मनुक्ख आ वातावरण दऽ गप्प-

सप्प करऽ लागल। गप्पक धुनिमे कखन झलफल साँझ भऽ गेलैक से ओकरासभकेँ पते नहि चललैक। भगजोगनीसभ कनी-मनी देखाए लागल छलैक। तखन प्रजापतिकेँ भक खुजलैक आ ओ बाजल– "एऽऽ, देखहक हम तँ बिसरिए गेल रही जे आइ तँ भोज छैक, लएह चलह।"

पोखरेलियासभ सैकड़ो वर्षसँ फेवातालक किनारमे बसैत आएल छल। ओहि दिन पोखरेलियासभक धनरोपनीक भोज छलैक। लोकसभ धान काटिकऽ घर करबा कालमे दशमी मनबैत अछि, मुदा बेङसभ रोपनीएक बेरमे दशमी मना लैत अछि। किएक तँ रोपनी कालमे प्रशस्त मात्रामे कीड़ा-मकोड़ा भेटैत छैक।

पहिने तँ भक्तप्रसाद भोजमे जएबाक लेल तैयार नहि भेल। मुदा पीपीक विशेष आग्रहपर ओ ओकरा सङ्ग विदाह भऽ भेल। ओसभ



झिलमिल बिजलीसँ झकझकाइत लेकसाइड पहुँचल। ओहिठाम खूब होटल आ लाँजसभ छलैक। एखनुक लेकसाइडमे होटल आ लाँज रहल ठाममे पहिने धनखेती छलैक। "पोखरा आबऽवला बहुतो पर्यटकसभ एम्हरे रहैत अछि। एखन आँफ सीजन रहलाक कारणे ओतेक पर्यटक नहि देखबामे आबिरहल छैक। हमसभ तँ कोनहु रेष्टुरेण्टमे जा सकैत छी।" पीपी भगताकेँ कहलकैक।

"आँफ सीजनक मतलब की?" भगता पुछलकैक।

"पर्यटकसभकेँ वर्षाक मौसम ओतेक पसिन्न नहि पड़ैत छैक। तेँ ओसभ वर्षाक समयमे ओतेक नहि अबैत अछि? ओकरासभकेँ नहि अएलापर ओ 'आँफ सीजन' होइत अछि।

वर्षो बेजाए लागऽवला जन्तु सेहो एहि संसारमे होइत अछि, से सूनि भगताकेँ खूब हँस्सी उठलैक। भगता आ पीपी एहने गप्प-सप्प करैत एकटा रेस्टुरेण्टमे पहुँचल। ओहिठाम पोखरेलियासभक पार्टी चलिरहल छलैक। एकटा बेङ 'बेङहा रैप' नामक धुन बजारहल छल। ओहि धुनमे सभ बेङ मस्त भऽ नाचिरहल छल। ओहिमध्य केतकोकेँ तँ नाङरि सेहो नहि झड़ल छलैक। झुरकुट बूढ़सभ सेहो कूदि-फानिरहल छल। मुदा ओहिठामक वेटरसभ आदमीएसभ रहैक। ओसभ एकटा थारीमे कुर-कुर करैत माछी लऽ सभदिस घूमिरहल छल। भारतक बिहारसँ मङबाओल गेल माछीक अनेको तरहक परिकार बनाओल गेल छल। तरल माछी, भूजल माछी, तेलमे सानल माछी, ग्रीनफ्लाइ सुप आ फ्राइ राइस– की नहि छल ओहिठाम!

पोखरेलिया बेङक चालि-ढालि आ ठाठ-बाठ देखि काठमाण्डूक पहाड़सँ आएल भक्तप्रसादक आश्चर्यक ठेकान नहि रहलैक। हाथमे ठण्ढा माछीक जूस लऽ ओ एकटा कोन्हमे जा बैसि रहल। सङ्गीतक धुन आओर बढ़िते जा-रहल छलैक। जतेक राति बढ़िरहल छलैक बेङसभ ओतेक बेसी नाचिरहल छल। बीच रातिदिस तँ बेङसभ कूदिकऽ छत छूबि लैत रहए। ओसभ सङ्गीतक धुन सूनि उछलैत रहए

आ छतसँ टकराकऽ जमीनपर खसि पड़ए।

पोखराक बेङक अपेक्षा काठमाण्डूक बेङक जीवनशैलीमे बहुतोक अन्तर छलैक। भक्तप्रसाद विचार कएलक– “एक्कहि जातिक रहितहु हमरासभमे कतेक भिन्नता अछि।” पोखरामे पर्यटकसभक सर-सङ्गति, देशविदेशक घूमफिर आ पाइक आमदानीसँ पोखराक बेङक जीवनशैलीमे एतेक परिवर्तन आएल होएबाक अनुमान ओ लगौलक।

प्राकृतिक विकास-क्रममे बेङसभ एखनुक अवस्थामे आबि गेल छल। जानिकऽ वा अनजानमे पोखरेलियासभ एहू विकास-क्रमसँ आगू बढ़बाक नियारमे छल। ई बात नीक अछि कि नहि, से बूझि पाएब भक्तप्रसादक बुद्धिसँ बाहरक गप्प छलैक। भक्तप्रसाद नाचिरहल बेङसभक भीड़मे माथपर चेन्ह भेल पीपीकेँ हिअएलक। भगता हँसिते ‘चलैत छी’ कहि इशारासँ हाथ हिलौलक, पीपी जा ‘कनेकाल थम्हि जाह’ कहितए-कहितए ता भक्तप्रसाद रेस्टुरेण्टसँ बहरा गेल छल। तकरा बाद फेवातालक महाड़पर रहल एकटा बीलमे जा ओ ओलड़ि गेल। ओकरा प्रातभने भोरे ऊठिकऽ घान्द्रुक जएबाक रहैक। पोखरेलियासभक पार्टीमे देखल क्रियाकलापसँ ओकर दिमाग खूब नाचिरहल छलैक। की ठीक, की बेठीक ओ बूझिए नहि रहल छल। पड़ल-पड़ल भगता इएहसभ बात सोचैत औङ्घा गेल। ओहि राति भक्तप्रसादक सपनामे फेर ओकर बाबा अएलैक। “आधुनिक बनब बेजाए बात नहि छियैक भगत, मुदा अपन परम्पराकेँ एक्कहि झटकामे तोड़ि देब सेहो नीक बात नहि छियैक। एना भेलापर हमरासभक सन्तान असमञ्जसमे पड़ि जाएत। ओकरासभकेँ नीक-बेजाए छुटिआएब असम्भव भऽ जएतैक। अति कोनो चीज नीक नहि होइत छैक। तेँ कोनो नव संस्कृतिक शुरुआत करबासँ पहिने बहुतो पक्षपर ध्यान देबऽ पड़ैत छैक। लएह, आब सूति रहह भगत।”



माछापुच्छ्रेक खोजमे

फूलमायाक कहल ई बात जे माछक पुच्छीजकाँ हिमालय देखबाक लेल घान्द्रुक पहुँचऽ पड़ैत छैक, भक्तप्रसाद बिसरल नहि छल। प्रातभने भोरे ओ फेवातालक महाड़ छोड़ि पोखराक बजारदिस विदाह भेल। पोखराक एकटा विशेषते कहल जएबाक चाही जे चौरीमे जगह-जगहपर पाथरसँ घेरिकऽ घराड़ी आ बाड़ी-झाड़ी छुटिआएल रहैत छैक। भक्तप्रसाद ओही देबालसभकेँ नाँघैत, छड़पैत आगू बढ़ैत गेल। थाकि गेलापर भक्तप्रसाद बीच-बीचमे पीपरक छाँहमे सुस्ता सेहो लैत रहए।

पोखराक मुख्य बजारमे एक पाँतिएसँ पुरना घरसभ ठाढ़ छैक। पोखरा बजारक बीचोबीच गेल मूल सड़कसँ होइत भगता ह्याङ्जादिस विदाह भेल। ओहि सड़कपर चलऽवला ट्रक आ टैक्सीसभसँ बचैत भक्तप्रसाद 'फेदी' लीखल सूचनापाटी भेल ठामपर पहुँच गेल। फेदीसँ धम्पुस पहुँचबाक लेल ठाढ़े चढ़ान चढ़ऽ पड़ैत छैक।

भगताकेँ चढ़ानपर चढ़ब साफे नीक नहि लगैत छलैक। मुदा एहिठाम कोनो उपाय नहि रहैक, तेँ ओ नहुएँ-नहुएँ उपर चढ़ब शुरू कएलक। भगता जतेक-जतेक उपर चढ़ैत जाए, ओकर साँस ओतेक-ओतेक फुलैत गेलैक। ओकर टाङ सेहो काँपऽ लगलैक। ओकर मोन घूमऽ लागल छलैक। देहक चमड़ी सुखाकऽ सुकठीजकाँ भऽ गेलैक। ओ कहुना घुसकैत-फुसकैत चलिरहल छल। "रे कोढ़िया बेङ! रस्ता

छोड, नहि तँ पिचाकऽ चटनी बनि जएबैं।"– ओकरा पाछूसँ केओ दबाड़ैत कहलकैक। ओ माथ उठाकऽ देखलक तँ खाए-पीबऽवला सामान लऽ घामे-पसेने बोदरि भेल एकटा भरिया छल।

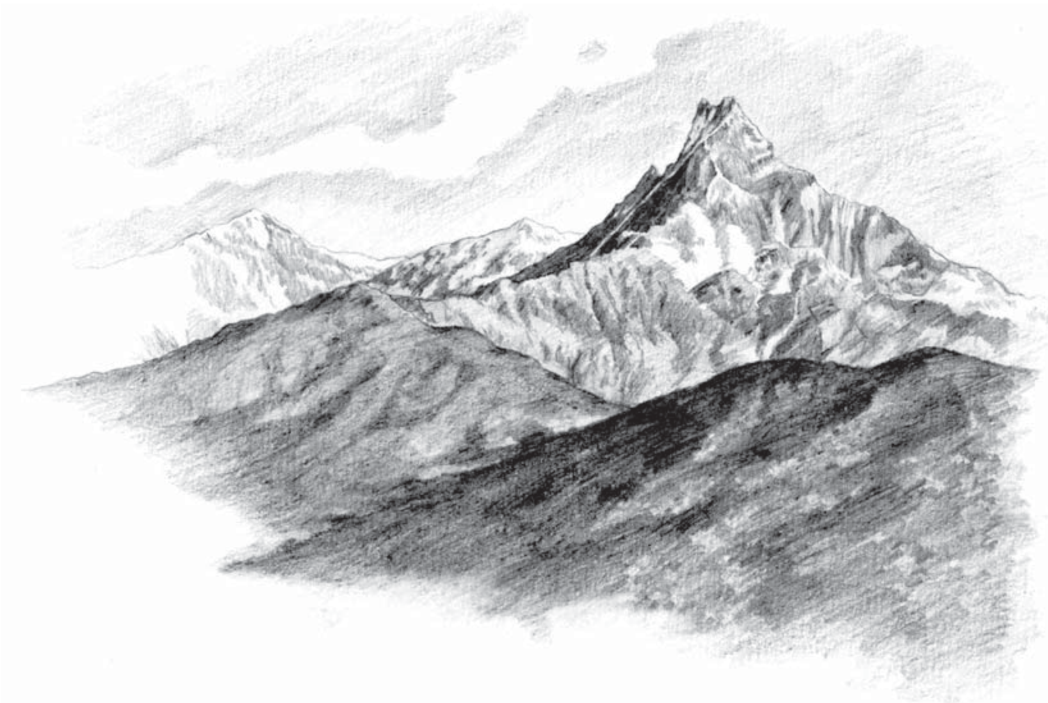
"हओ भैया, कहुना कनेक हमरा ई चढ़ान चढ़ा ने दएह !"– भक्तप्रसाद भरियासँ अनुरोध करैत कहलक। असनमे जगतबहादुरक डोकोपर चढ़लापर जे ओकरा सुविधा भेल रहैक से ओकरा मोन पड़ि गेलैक।

"जेबएँ ? ले आबि जो !" ई कहि ओ बेङकें दू आङुरसँ पकड़ि अपना डोकोपर राखि लेलक। कहुना भक्तप्रसादक जानमे जान अएलैक।

"बिन चलनहि ट्रेकिङ करबामे खूब मोन लगैत छैक, नहि रे ?" भारीक बोझसँ हक-सक करैत भरिया पुछलकैक। पचास किलोसँ बेसी ओजनक भारी लदने ओहि भरियाक नाम छलैक हीराबहादुर। ओ ट्रेकिङ ग्रुपक भारी लदने घान्द्रुक जा-रहल छल।

"हम तोरासङ्गे घान्द्रुकेधरि चलि जाएब, नहि होएतैक ?"– भगता मौकाक फायदा उठबैत पूछि लेलक।





"किएक ने होएतैक?"

फूलेमायाजकाँ हीराबहादुर सेहो बहुतरासे बातक जानकारी रखैत छल। ओ पानि पीबाक लेल एकटा चबुतरापर भारी रखलक तँ भक्तप्रसाद सेहो अपन देह भिजौलक आ माछक पुच्छीसनक हिमालयक गप्प उठौलक। "घान्द्रुक पहुँचऽवला रस्तासँ देखिए जेबएँ ने माछक पुच्छी। नहि तँ हम देखा देबौक"– हीराबहादुर भगताकेँ बोल-भरोस दैत कहलकैक।

पहाड़क चोटीपर जखन ओसभ धम्पुस पहुँच गेल तँ ओहिठामसँ अन्नपूर्णा हिमालयक श्रृङ्खला स्पष्ट देखाए लगलैक। माछापुच्छ्रे सेहो देखाए लागल छलैक, मुदा दोसरे तरहक। ओहिठामसँ देखलापर माछापुच्छ्रे सुइयाजकाँ नोखगर नहि छलैक। चोटीक पाछाँदिस ओरियाकऽ बैसलजकाँ एकटा दोसर छोटका चोटी देखारहल छलैक। धम्पुससँ घान्द्रुक जाएवला बाटमे एकटा दोसर गाम लान्द्रुङ सेहो पड़ैत

छैक। मुदा भगता रस्ता-बाटदिस ओतेक ध्यान नहि देलक। ओकर ध्यान एकतर्फी माछेपुच्छ्रेदिस केन्द्रित छलैक। ओ तँ बेरबेर पर्वतेदिस ताकिरहल छल आ ओकरा होइक जेना पर्वतक आकार बदलिरहल छैक।

किछु कालक पछाति जखन एकटा धारकेँ पार कएलक तखन जा-कऽ घान्द्रुक गाम आएल। ओहिठाम पहुँचलाक बाद तँ माछापुच्छ्रे पूरा-पूरी माछक पुच्छीएजकाँ बुझारहल छलैक। "माछापुच्छ्रे ठीके माछक पुच्छी अछि!" खुशीसँ कूदैत भक्तप्रसाद हीराबहादुरक कानहिमे जा चिचिआएल।

घान्द्रुक एकटा लोकप्रिय पर्यटकस्थल अछि। एहिठामसँ अन्नपूर्णाक शृङ्खला नीकजकाँ देखाइत छैक। एहिठाम रहनिहारसभक कारणे सेहो ई ठाम प्रसिद्ध अछि। किएक तँ एहिठामक लोकसभ मीलिजूलिकऽ काज करैत अछि। नेपालक बहुतो गाममे आधुनिकताक कारणे परम्परा आ संस्कृति हेरारहल छैक। मुदा भक्तप्रसादकेँ बुझएलैक जेना घान्द्रुक गामक लोक एखनो ओहिठामक परम्परा आ संस्कृतिकेँ जोगाकऽ रखने अछि।

घान्द्रुकमे बहुतो नीक-नीक लाँजसभ छलैक। हीराबहादुरसँ विदावादी भऽ भगता एकटा लाँजमे पैसल। ओहि लाँजक सङ्केतपट्टिकामे 'दि माउण्टेन भ्यू एण्ड चक्लेट पुडिङ लाँज' लीखिकऽ टाङल छलैक। 'नहएबाक लेल गरम पानिक व्यवस्था अछि', तकर सूचना सेहो ओहि सङ्केतपट्टिकामे देल गेल छलैक। गरम पानिसँ नहएबाक कल्पना मात्रसँ भक्तप्रसादक मोन कोनादन भऽ गेलैक। किएक तँ बेङकेँ गरम पानि नीक नहि लगैत छैक। भगता नहएबाक विचार त्यागि लाँजक आगाँमे रहल अङनइमे राखल एकटा कुर्सीपर जा-कऽ बैसि रहल। ओहिठाम बैसि ओ माछापुच्छ्रेकेँ टक-टकी लगाकऽ देखऽ लागल। आखिर ओ एतेक दूरसँ इएह देखबाक लेल आएल छल। ठीके, बुझाइक जेना हजारो फीट उपर ठाढ़ बर्फ आ चट्टानक ओ ढेरी

माछ्रेजकाँ अपन पुच्छीसँ कात-करोटक मेघकेँ उधसि-पुधसिकऽ राखि देत ।

भक्तप्रसाद ओ दिन अन्नपूर्णा हिमालयक दिस देखिते-देखिते बिना लेलक । सूर्यास्तक बेरमे आओर मनमोहक दृश्य देखाए लगलैक । उज्जर धप-धप हिमालयक रङ्ग बदलिकऽ सन्तोलिया, सेनुरिया होइत जखन रौद पूरे डूबि गेलैक तँ मटमैलाह भऽ गेलैक । साँझ पड़ितहिँदेरी ‘अन्नपूर्णा दक्षिण’क शिखरक पाछ्राँदने पूर्णिमाक चान बहराएल । ओकरा बुझारहल छलैक जेना चानक इजोरियामे पहरेदारजकाँ ठाढ़ भेल हिमालय ओही छोटका बेङकेँ निराड़िरहल हो । एतेक नीक सुन्दरताकेँ देखि भक्तप्रसादकेँ रहल नहि गेलैक आ ओ भावावेशमे जोरसँ बाजि उठल– “वाह, सुन्दर, अति सुन्दर ।”

लाँजक कातेदने जाइत रस्तासँ एक्कहि तालमे आबिरहल टङ-टङ, टिङ-टिङक आवाजसँ भगताक एकाग्रता भङ्ग भेलैक । ओ पसरल इजोरियामे गहना-गुरियासँ सजल एकटा खच्चड़केँ देखलक । ई आवाज ओही खच्चड़क गरदनिमे बान्हल घण्टीसँ निरन्तर आबिरहल छलैक ।

“पाथरक देबाललग आबि ओ खच्चर ठमकल आ बाजल- “विचित्र बात अछि, ऐँ हओ ! बेङो भऽकऽ तोँ बाजि लैत छहक ?”

गप्प करबामे माहिर भक्तप्रसाद कूदिकऽ आगू बढ़ल आ चटपट खच्चड़सँ चिन्हा-परची कऽ लेलक । खच्चड़क नाम छलैक शालिग्राम शमशेर । ओ कालीगण्डकी इलाकामे व्यापारीसभक सामान ढोएबाक काज करैत छल ।

गप्पेगप्पमे शालिग्राम कहलकैक– “हम एखन जोमसोम जाए लागल छी । जोमसोम अन्नपूर्णा हिमालयक पछुआड़मे उत्तसदिस पड़ैत छैक । हमरासङ्गे चलबह ?”

भक्तप्रसाद तँ इएह चाहिएरहल छलए । ओ तराइ घूमि चुकल छल । मध्यपहाड़ी भाग सेहो ओ घूमिए चुकल छल । आब ओ

हिमालयक ओहिपार जा उत्तरदिस पहुँचबाक मौका किएक छोड़ितए?

“किएक ने शालिग्राम सर! जखन अहाँ जाइते छी तँ हमरो लऽ ने चलू!” भगता विनम्र भऽ अनुरोध कएलक। अपन नाङड़ि आ माथ हिलबैत गर्दनिक घण्टी डोला शालिग्राम स्वीकृति जनौलक। ओ बेङकेँ चाउरक बोरापर बैसबाक आग्रह करैत कहलकैक– “नीकजकाँ डोरी पकड़िकऽ बैसिहें, रस्ता खराब छैक। पिछड़बएँ तँ एक्कहिबेर निच्चा धारहिमे जा खसबें।”

तकरा बाद अन्तिमबेर ओ एकबेर फेर माछापुच्छ्रेकेँ देखलक आ मधुर स्वरमे कहलक– “जाइ छी।”– एतबा कहि ओ विदाह भऽ गेल। भगताकेँ बुझएलैक जे माछापुच्छ्रे सेहो अपन नाङड़ि हिलाकऽ ओकरा विदाह कऽरहल हो। भक्तप्रसाद चाउरक बोरापर नीकजकाँ डोरी डकड़िकऽ बैसि रहल। खच्चड़क एक्कहि तरहक चालिसँ भक्तप्रसादकेँ औङ्घी लागि गेलैक। शालिग्राम कालीगण्डकीक काते-कात अपनहि धुनिमे उत्तरदिस बढ़ैत रहल।



सेव आ शालिग्राम

जोमसोम जाएवला रस्ता कतोक ठाम तँ चकरगरे छल, मुदा गोटेक-आधे ठाम एकदम छोट आ तङ्ग छलैक। ओहन ठामपर चलब बहुत कठिनाह होइत छलैक। मोश्किलसँ कोनहु धरानी पएर राखल जा सकैत छलैक। कनेको जे हुसल तँ सोझे हजारो फीट निच्चा! ओहि बाटदने विदेशी पर्यटक, भरिया आ तीर्थयात्रीसभ सेहो जा-रहल छल। एक्कहुटा पएर जँ पिछड़ितैक तँ शालिग्राम आ भक्तप्रसाद दुनू कालीगण्डकीक माछक जलखइ बनिकऽ रहि जाइत।

ओसभ हरियर जङ्गल, झर-झर करैत झरना आ हिमालयसभ देखैत उत्तरदिस बढ़ैत गेल। ओसभ जतेक उत्तरदिस बढ़िरहल छल, हिमालयक आकार सेहो बदलिरहल छलैक। कातमे कालीगण्डकी गरजैत, उज्जर फेन निकालैत अपनहि धुनिमे बहिरहल छल। हिमालयसँ निकलि बहऽवला नदीसभमध्य कालीगण्डकी सभसँ शक्तिशाली नदी अछि, इएहसभ बुझैत शालिग्राम आगू बढ़िरहल छल।

पूबदिस अन्नपूर्णा आ पच्छिमदिस विशाल धवलागिरि हिमालयकेँ बीचमे चीरिकऽ गहिँरगर खोँच बनबैत कालीगण्डकी बहैत अछि।

खच्चड़ कहलकैक– “बुझल छह भगत, ई संसारक सभसँ गहिँरगर खोँच छैक।”

घान्द्रुकसँ चललाक किछु दिनक बाद भक्तप्रसाद अलग-अलग



तरहक दृश्यसभ देखऽ लागल। धानक खेत आ हरियर जङ्गलवला मध्य-पहाड़ी भाग होइत आब ओसभ मरुभूमिजकाँ देखाएवला उत्तरी भागमे पैसिरहल छल। हरियर धूपक गाछसभ पाछू छूटिरहल छल। ओहि ठामपर आब मात्र ठुट्ठ आ काँट भरल झाड़-झङ्खाड़सभ देखाए लागल छलैक। पोखरा आ घान्द्रुकमे नजरि आबऽवला गाछसभ आब नहि देखारहल छलैक। ओकरासभक जगहपर आब खालि बालु आ

चट्टान नजरि आबिरहल छलैक। बाड़ी-झाड़ीमे धान आ गहूमक जगह कतहु-कतहु जओक फसिल देखल जाइत छलैक, नहि तँ सभतरि सेवक गाछसभ भरल पड़ल छल। भक्तप्रसाद कातहिमे लटकिरहल एकटा सेव तोड़िकऽ चीखि लेलक।

मार्फा गाम पहुँचलाक बाद ओकरासभकेँ बहुतो खच्चड़सभ भेटलैक। ओसभ सामान उघबाक लेल पोखरा जाए लागल छल। शालिग्राम ओहिठामक खच्चड़सभसँ कुशल-क्षेम पुछलक।

मार्फा गाम बड्ड सुन्दर छैक। बाटक दुनू कातमे होटल आ लाँजसभ छैक। एमहर बेसी पानि नहि पड़बाक कारणे एहिठामक घरसभक चार ढरकाह नहि बनाओल जाइत छैक। घरक चारसभ माटिएक रहैत छैक। प्रत्येक घरक चारपर जारनिक भरिगर बोझसभ बनाकऽ राखल रहैत छैक। शालिग्राम भगताकेँ बुझबैत कहलकैक जे एहिठाम जारनिएसँ लोकक हैसियतक मूल्याङ्कन कएल जाइत छैक।

मार्फा गामक बाट, जे पाथरक बनल छल, खूब साफ रहैक। सभक घर-आङन बेस साफ-सुथर लगैत छलैक। ओसभ कूड़ा-करकटकेँ नालामे फेकैत छल। मार्फा आ घान्द्रुकसनक गामकेँ एतेक साफ-सुथर देखिकऽ भक्तप्रसाद मोनहि मोन प्रश्न कएलक जे हमरासभक शहर काठमाण्डू आ पोखरा कतेक गन्दा अछि? मुदा ई बात शालिग्रामसँ पुछबाक कोनो तुक ओकरा नहि बुझारहल छलैक। किएक तँ ओकरा कालीगण्डकी इलाका छोड़ि नेपालक कोनो ठामक जानकारीए नहि छलैक।

रस्ताक कातमे एकगोटे एकटा कपड़ा ओछाकऽ ओहिपर करिया पाथरसभ राखिकऽ बेचिरहल छल। शालिग्राम ओकरा ओ पाथर देखबैत कहलकैक– "लएह, एहि पाथरसभकेँ नीकजकाँ देखह !" भक्तप्रसाद ओहि कारी-कारी पाथरसभमे विचित्र तरहक आकृतिसभ देखलक।

शालिग्राम ओकरा बुझबैत कहलकैक– “ई पाथरसभ अति प्राचीन जीवजन्तुसभक अवशेष छियैक। एकरा अङरेजीमे ‘आमोनाइट’ कहल जाइत छैक। करोड़ो वर्ष पहिने ई जगह महासागरक निच्चा डूबल छलैक। पानिक भीतर बहुतो जीवजन्तुसभ छलैक, जे बादमे मरि गेल आ माटिक निच्चा दबि गेल। लाखो वर्ष पहिने पृथ्वीक रूपरेखा बदलैत गेल आ ई पहाड़-पर्वतसभ महासागरक गहिराइसँ उठिकऽ उपर आएल। एही पर्वतसभकेँ चीरिकऽ कालीगण्डकीक बहलाक कारणे ई पाथरसभ बाहर आएल अछि। वास्तवमे एही पाथरसभक कारण आइ कालीगण्डकी क्षेत्रक ई प्रसिद्धि अछि। एहि पाथरसभकेँ देवताक स्वरूप मानल जाइत अछि आ लोकसभ एकर पूजा करैत अछि।”

“लएह कहह तँ जे एकरा नेपालीमे की कहल जाइत छैक?” खच्चड़ ओकरासँ पुछलकैक।

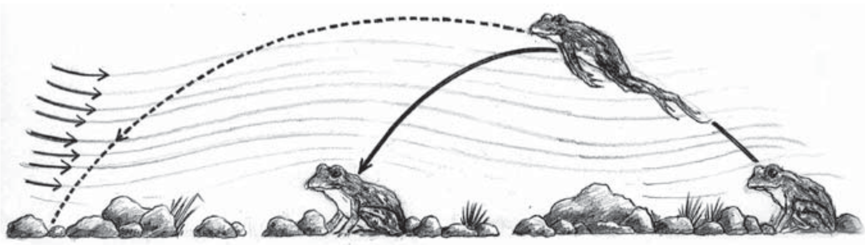
भक्तप्रसादकेँ आब जा-कऽ बात बुझबामे अएलैक आ ओ जवाब देलक– “एकरा शालिग्राम कहल जाइत छैक, भैया!”



कालीगण्डकीक बसात

मकैक चोकर खएलाक बाद गामहिक कातबाटे बहैत पैनीमे जा शालिग्राम भरिछाँक पानि पीलक। तकरा बाद ओसभ जोमसोमदिस विदाह भेल। दुपहरक एहिना बारह-एक बाजल होएतैक। एक्कहि छनमे एना बुझाए लगलैक जेना बिहाड़ि चलऽ लागल हो। मुदा आकाशमे मेघक नामोनिशान नहि छलैक आ ने तँ पानिए पड़बाक कोनो लक्षण देखाइत रहैक। ई बिहाड़ि पाछाँदिससँ छोट-छोट कङ्कड़-पाथरसभ उड़िआकऽ आनिरहल छल। ओ पाथरसभ भक्तप्रसादक देहकेँ थौआ कऽरहल छलैक।

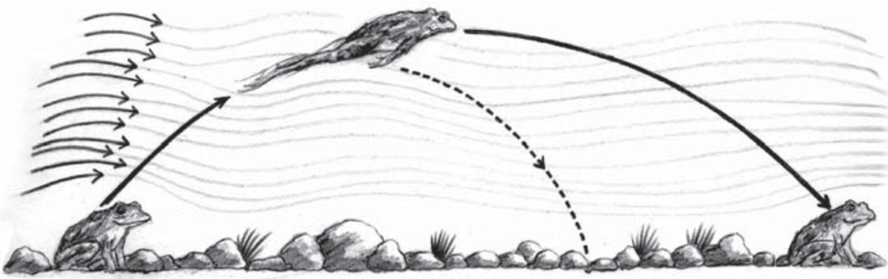
बिहाड़िसँ भक्तप्रसादक टोपी सेहो ऊड़ि गेलैक। शालिग्राम टोपीक पाछाँ-पाछाँ दौगल। टोपी कखनो गाछोसँ उपर पहुँच जाइत छलैक तँ कखनो निच्चा खसिकऽ चक्कर काटैत कतऽसँ कतऽ चलि जाइत छलैक। एकबेर तँ टोपी खच्चड़क खुरक तर सेहो आबैए लागल रहैक, मुदा तखनहि तेज बसात फेर ओकरा उड़िआकऽ लऽ गेलैक। भक्तप्रसाद 'हे ओमहर, हे एमहर' कहैत शालिग्रामकेँ कूदि-कूदिकऽ मार्गनिर्देशजकाँ कऽरहल छल। किछु काल एहिना टोपीक लेल भाग-दौड़ चलैत रहल। जोड़-तोड़सँ बहिरहल कालीगण्डकीक बसातक आगाँ भारी लदने खच्चड़क कोनो वश नहि चललैक। घामे-पसेने बोदरि भेल शालिग्राम हारिकऽ टोपीक पाछू भागब छोड़ि देलक।



भक्तप्रसादक टोपी एक्कहि छनमे कालीगण्डकीक कछेरपर पहुँच गेल। हक-सक करैत शालिग्राम बाजल– "तोहर टोपी ऊड़ि गेलह, देखहक केहन खराब बात भेलैक! हमहूँ तँ तेहने छी, तोरा पहिनहि जँ कहि देने रहितियह तँ एना नहि ने होइतैक।"

"एना किएक हओ? बसात तँ एहिठाम बड्ड जोड़सँ चलैत छैक!"– भक्तप्रसाद पुछलकैक।

शालिग्राम कहलकैक जे कालीगण्डकीक उपरका भागमे एहन बसात-बिहाड़ि सभ दिन चलिते रहैत छैक। ओ विस्तारपूर्वक भक्तप्रसादकेँ बुझबैत बाजल– "सभ दिन दुपहरमे उत्तरी भारत आ नेपालक तराइसँ गरम हवा हिमालयदिस ऊड़िकऽ अबैत अछि आ ओकर दबाव बढ़ैत जाइत छैक। तिब्बतक पठारमे हवाक दबाव बहुत कम होएबाक कारणे ओहि तरहेँ ऊड़िकऽ आएल हवा तिब्बतक



पठारदिस जाए चाहैत अछि। मुदा ओ ओतेक खड़गर हिमालय पर्वतकेँ नाँघि नहि सकैत अछि। तकरा बाद ई कालीगण्डकीक गहींरका दोगबाटे ओ हवा तिब्बतक पठारधरि पहुँचैत अछि। तँ एहिठाम एतेक जोड़सँ, बुरुह जे बिहाड़िजकाँ बसात चलैत छैक।"

"ई हवा बाट-बटोहीकेँ परेशानो करैत छैक तँ सुविधा सेहो दैत छैक।"– शालिग्राम कहलकैक। ओकरा मोताबिक जोमसोमसँ घान्द्रुक वा पोखरादिस जाइत काल हवाक विपरीत दिशामे चलऽ पड़ैत छैक। एहि कारणसँ यात्रा लम्बा आ कठिन होइत छैक। मुदा उत्तरमे रहल कागबेनी गामदिस जाइत काल हवा पाछूसँ लोककेँ ठेलैत रहैत छैक, जाहिसँ चलब आसान भऽ जाइत छैक आ जल्दी सेहो पहुँचल जा सकैत छैक।

हवाक गतिक सम्बन्धमे एहन वैज्ञानिक गप्प-सप्प करिते-करिते ओसभ जोमसोम पहुँच गेल। व्यापारिक केन्द्रक सङ्गहि ई एकटा लोकप्रिय पर्यटकस्थल सेहो थिक। एहिठाम एकटा हवाइमैदान छैक। एहिठामक मुख्य आकर्षण अछि– नीलगिरि हिमालय, जाहिपर जमल बर्फक ढेरी लगैत छैक जेना हाथेसँ छूअल जा सकैत अछि।

जोमसोम पहुँचलाक बाद शालिग्रामकेँ एकटा व्यापारी बोझ उतारऽमे सहयोग कएलकैक। तकरा बाद शालिग्रामकेँ हरियर घासक मैदानमे चरबाक मौका भेटलैक। नीकजकाँ काज करबाक उपलक्ष्यमे ओकरा ई ईनाम भेटल छलैक।

आब बेङ आ खच्चड़केँ अलग होएबाक बेर भऽ गेल छलैक। शालिग्रामक सलाहमोताबिक भक्तप्रसाद फटाफट उत्तरदिस विदाह भेल। पाछूसँ हवा चललाक कारणे भक्तप्रसादकेँ चलऽमे बड़ आसान भऽ गेलैक।

भक्तप्रसाद जएबेर कूदैत छल तएबेर हवा ओकरा बेस आगू कऽ रुटकारि दैत छलैक। जँ हवा नहि चलितैक तँ सामान्यतया भक्तप्रसाद एक छड़पानमे तीन फीटधरि कूदि सकैत छल। मुदा एहि

तेज बसातक कारणे एखन ओ छओ फीटधरि कूदिरहल छल। तखने ओ विपरीत दिशासँ किछु स्थानीय बेङकेँ अबैत देखलक। हवाक कारणे ओकरासभकेँ चलबामे बड़ दिक्कत भऽरहल छलैक। आनखन तीन फीट कूदऽवला बेङसभ एखन मोशकिलसँ एक-डेढ़ फीट कूदिरहल छल। दनदनाइत आगाँ बढ़िरहल भक्तप्रसाद मोनहि मोन सोचलक– "ईसभ एहि चालिसँ कखनधरि जोमसोम पहुँचत! एहि बेङसभकेँ रोकिकऽ गप्प तँ नहिएँटा करबाक चाही।"



कागबेनीक विवरण

हवाक जोड़पर भक्तप्रसाद जल्दीए कागबेनी पहुँच गेल। ई ठाम ओकरा किछु विचित्र बुझएलैक। भरिगाम बिजलीक खम्हा आ तार छलैक, मुदा राति भेलाक बादहु कतहु बिजलीक कोनो पता नहि रहैक। नेपालक हजारो गामजकाँ कागबेनी सेहो पूरे अन्हारमे डूबल छल।

“केहन आश्चर्यक गप्प ?” भक्तप्रसाद सोचलक।

तखने कोमहरसँ ने एकटा ‘झोपा’ ओहिठाम आबि पहुँचलि। ओ भक्तप्रसादक मोनक बात बूझैतजकाँ बाजलि– “एहिठाम बिजली किएक नहि अबैत छैक, से देखि आश्चर्य लागल होएतह, नहि ?” भक्तप्रसादकेँ एखनधरि अपना यात्रामे भेटल जीव-जन्तुसभमे एहि झोपहिकेँ एतेक बजक्कड़ि आ फरहरि देखने छल। हिमालयमे रहऽवला गाएक साँढ़– याक आ गरम मैदानी इलाकामे रहऽवाली गाएसँ जन्मल सन्तानकेँ ‘झोपा’ कहल जाइत छैक। ओ बाटहिसँ जुड़ल एकटा छपरीमे रहैत छलि। ओकर दिनचर्या छलैक बाट-बटोहीकेँ बास देनाइ आ ओकरासभसँ गप्पसप्प कएनाइ। एतबएमे ओकर दिन बीति जाइत छलैक। भक्तप्रसादकेँ ओ गाममे पैसितेदेरी देखि लेने छलि।

“आबह बौआ, भितरे आबि जाह!” भक्तप्रसादकेँ अपना घरमे बजबैत झोपा कहलकि।

भक्तप्रसाद जाउ कि नहि जाउ सोचिते ओहि छपरीमे पैसल।

“लएह बैसह। हम तोरा असली गप्प सुनबैत छिअह।” भक्तप्रसाद जखनहि भीतर पैसिकऽ बैसल कि ओ बाजऽ लागलि– “एकबेर काठमाण्डूसँ किछु इन्जिनियरसभ कागबेनी आएल छल। ओसभ हवासँ जेनरेटर चलाकऽ बिजली निकालबाक योजना बनौलक। मुदा एहिठाम हवाक जोड़ कतेक होइत अछि, से ओसभ बूझिए नहि सकल। जाहि दिन ओसभ बिजली निकालबाक लेल पङ्खा जोड़लक, ताही दिन हवा सभटा पङ्खा-तङ्खा उड़ौने चलि गेल।”

“अच्छाऽऽऽ, तँ बिजुलीक खम्हा आ तार रहितहुँ बिजली नहि बरैत छैक?” भक्तप्रसाद बात बुझलक आ अपन परिचय दैत कहलक– “हँ, ठीके हमरासभक तँ एखनधरि परिचय भेले नहि अछि। हम छी बेङ, रानाटिग्रिना जातिक बेङ। काठमाण्डूसँ आएल छी। कतऽ जाएब, से ठेकान नहि अछि!”

“हँ, आ हम झोपा छी। हमर नाम साँहिली झोपा अछि। हमर बाप हिमालयक याक आ माए तराइक गाए अछि। आधा याक आ आधा गाए। अधसरि भेलहुँ हम। लोककेँ चौँरीजकाँ बलो चाही आ गाएसन दुधगरि सेहो। मुदा हमरा तँ मतलब नहि अछि। दिनभरि एही छपरीमे रहैत छी, साँझमे कनेक दूध दैत छियैक। एहिना दिन बीतिरहल अछि।”

भक्तप्रसादकेँ साँहिली झोपाक गप्प सूनऽमे नीक लगलैक। ओ पुछलकैक– “हमरा चौँरी गाए दऽ किछु आओर गप्प सुनाउ ने।”

“चौँरीकेँ हिमालक ऊँट कहल जाइत अछि। मुदा हमरा विचारमे ऊँटकेँ मरुभूमिक चौँरी कहल जएबाक चाही।”

“हँ, ठीक कहलहुँ अहाँ।” बेङ हँमे हँ मिलबैत बाजल।

“चौँरीक देह घनगर रोइयाँसँ झाँपल रहैत छैक। ईसभ उच्च हिमाली क्षेत्रमे रहैत अछि। जाड़मे चौँरीकेँ गैबारसभ गहिँरगर ठाममे रखैत अछि। खच्चड़ेजकाँ चौँरी सेहो काज करऽमे माहिर होइत अछि। जीबैतमे तँ काज लगिते अछि चौँरी, मुइलाक बाद सेहो ई

बड़ उपयोगी होइत अछि। चौँरीक रोइयाँसँ ऊनी कपड़ा बनैत अछि। एकर चमड़ासँ अनेको तरहक चीजसभ बनैत अछि। आ लोक एकर मासु सेहो खाइत अछि। एकर दूधसँ 'चीज', 'छुर्पी' आदि बनैत अछि।"

"आ अहाँ की करैत छी?"

"हम? हम तँ खालि दूध दैत छियैक, सेहो बड्ड कम। तकर अलावा हम किछु नहि करैत छी। ऊपर पहाड़सँ चौँरीसभ कागबेनी अबैत अछि, जाइत अछि। मुदा हम तँ घरहिमे बैसल रहैत छी।"– साँहिली झोपा कहलकैक। "हम तँ की करैत छी, जखन चरबाक मोन नहि होइत अछि तँ छपरीसँ मूड़ी नमराकऽ गौआँसभ जे घास-पात लऽकऽ अबैत रहैत अछि, उएह झीकिकऽ खा लैत छी।"

साँहिली झोपाक मुह हरदम चलिते रहैत छलैक। ओ हरदम किछु ने किछु चिबबिते रहैत छलि। ओ सोचलक जे सभटा गाए तँ एहन खौकार नहि होइत हएत! आ ओ आश्चर्यक सङ्ग साँहिलीकेँ पुछलक– "अहाँ की चिबारहल छी?"

"छुर्पी खा-रहल छी, आओर की खाएब?"– हँस्सी कएलकि साँहिली।

एखनधरि बाटमे जतेकगोटासँ भेटल छल भक्तप्रसाद, ताहिमेसँ साँहिली झोपा किछु भिन्नहि तरहक छलि। ओकर स्वभाव बड़ मजाकिया छलैक। फूलमाया ज्ञानी आ गम्भीर स्वभावक छलि। प्रजापति पोखरेलिया कने धाक देखबऽवला छल, मुदा फूर्तिगर रहए। शालिग्राम शमशेर जखन-तखन काजहिमे मगन रह-वला, जे कि जीवनक आनन्द लेबऽ जनितहि नहि छल। साँहिली झोपा देखबाक लेल पूरे संसार देखने छलि, मुदा ओ सभ बातकेँ हँस्सीएमे उड़ा दैत छलि। अपन छपरीएमे बैसल-बैसल साँहिलीकेँ बहुतो बातक थाह-पता रहैत छलैक। ओकरालग आबऽ-जाएवलाक लेल तँ साँहिली एकटा समाचारदाताक काज सेहो कऽरहल छलि। काठमाण्डूमे राजा

संसदमे की भाषण कएलथि, सेहो ओकरासँ सुनल जा सकैत छल। धसना खसबाक समाचार, मौसम खराब होएबाक कारणे जोमसोमक उड़ान रद्द होएबाक बात, आओर अनेको तरहक समाचार, ओ सभकेँ सुनबैत छलि।

साँहिली ञेपाक सलाहअनुसार भक्तप्रसाद एक दिन आओर कागबेनीमे रहबाक विचार कएलक।



“तोँ गरम ठामसँ आएल छह। आब आओर उँचाइपर जाए पड़तह। उँचाइमे गेलापर तोरा ‘लेक’ लागि सकैत छह। लेक माने पहाड़क बेसी उँचाइमे पहुँचलापर उत्पन्न होबऽवला प्रभाव थिक। लेक लगलापर फेफड़ा आ मगजमे पानि भरि जाइत छैक।” साहिँलीक एहि बातपर भक्तप्रसादकेँ भेलैक जे कहुना हम एक दिन आओर रहि जाइ, सएह सोचि साँहिली हमरा एहि तरहक डर देखारहलि अछि। किएक तँ ओकरा हरदम फद-फद करबाक लेल एकटा सङ्गी तँ चाही! साँहिली झोपा भक्तप्रसादकेँ अगिला यात्रा दऽ किछु सलाह देलकैक– “नेपालक नक्शामे पोखरासँ उत्तरदिस एकटा नोखगर भाग अलगे निकलल अछि, ओ मुस्ताङ छियैक। ओकरा “लो” सेहो कहल जाइत अछि। ठाम तँ ओ गजब अछि। हमरा विचारमे तोँ शुरूमे मुक्तिनाथक दर्शन कऽ आशीर्वाद लऽ लेलाक बाद मान्थङदिस विदाह होइहह।



मुक्तिनाथक तीर्थयात्री

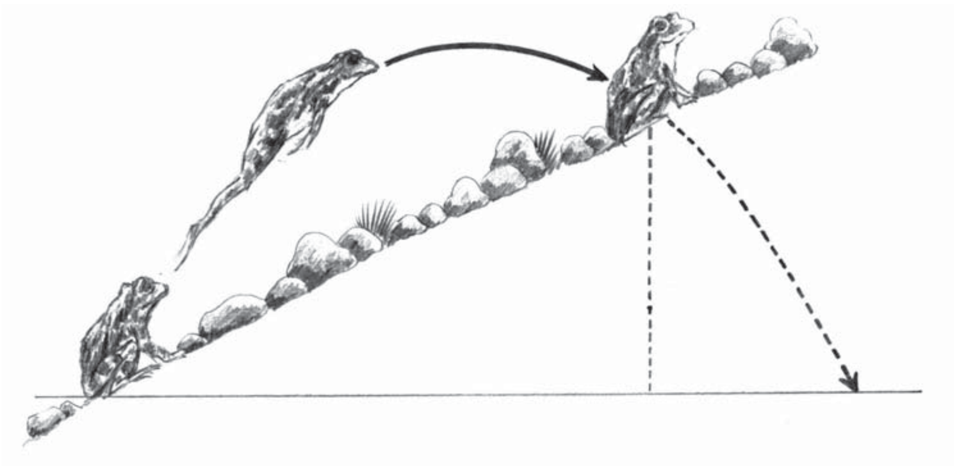
कागबेनीसँ मुक्तिनाथ पहुँचऽमे भक्तप्रसादकेँ पूरे एक दिन लागि गेलैक। बाटमे चलैत रहबाक कारणे ओकरा गतिविज्ञानक बारेमे फेर किछु सोचबाक मौका भेटलैक। कालीगण्डकीक काते-काते चलैत काल जे ओ हवाक जोरपर धकलाइत गेल छल, से ओकरा मोन पड़ि गेलैक। एखन एहि चढ़ानपर मैदानमे जकाँ ओ नहि हूदि पाबिरहल छल।

“चढ़ान चढ़ैत काल ओतबए जोड़सँ कुदलापर मैदान जते दूर नहि जा सकैत अछि। तकर विपरीत ढरकाहमे कुदलापर मैदानोसँ बेसी दूरी तय भऽ जाइत छैक।”– ओ मोनहि मोन तर्क कएलक।

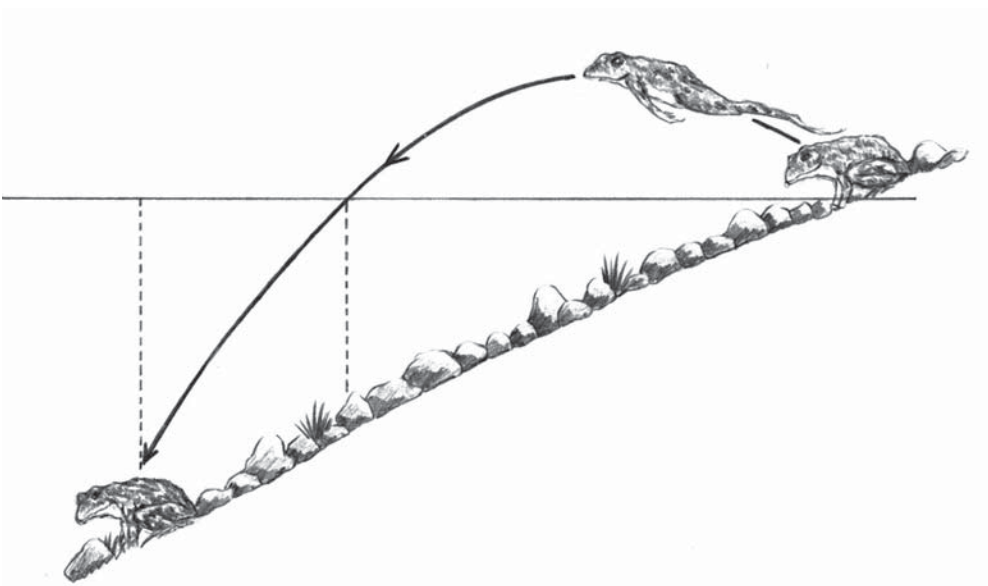
एना सोचैत चललापर भक्तप्रसादकेँ बुझएलैक जे ओ बेसी वैज्ञानिक तरिकासँ सोचि सकैत अछि। यात्राक क्रममे ओकरा बहुतो तरहक समस्याक सामना करऽ पड़लैक। अपन भोगल आ देखल विषयमे ओकरा मोनमे जिज्ञासा होबऽ लगलैक, जाहि कारणे सभ विषयमे ओ गहिराइसँ बुझबाक चेष्टा करऽ लागल।

ओ ‘बेङक कुदनाइक गति’ विषयपर एकटा खोजपूर्ण लेख लीखिकऽ कुदबाक जाहि विभिन्न पक्षक ओ पता लगौने छल, तकर व्याख्या करबाक विचार कएलक। एहि यात्राक बाद ओ स्कूल-काँलेजमे पढ़ि विद्वान वैज्ञानिक बनबाक निर्णय कएलक।

मोनमे एहने बात खेलबैत चलैत काल कतबो चढ़ान किएक ने चढ़ऽ



पड़ल हो, ओ कखन मुक्तिनाथ पहुँच गेल, से ओकरा पते नहि चललैक। तखन झलफल साँझ भऽ गेल रहैक। ओहि राति ओ बाटे कातक एकटा धर्मशालामे बितएबाक विचार कएलक। भोरमे उठलापर भक्तप्रसाद जखन चारूदिस तकलक तँ एकटा विशाल पहाड़क निच्चा





मुक्तिनाथक मन्दिर देखलक। पहाड़क दोगहाड़ीमे रहलाक कारणे मुक्तिनाथमे नीकजकाँ रौद नहि लागल छलैक। मुदा दोसरदिसक पहाड़मे लागल रौदक टहटहीसँ मुक्तिनाथ सेहो पूरे साफ देखाइत रहैक। चारूभरक वातावरण उजड़ल-पुजड़लसन बुझाइत रहैक। खालि मुक्तिनाथ भेलहा ठाम मात्र हरियर गाछ-पातसँ सजल छल। ओहिठाम पानिक सोता फुटल छलैक। दू-महला चारवला पैगोड़ा शैलीक मुक्तिनाथक मन्दिरकेँ देखिकऽ भक्तप्रसादकेँ काठमाण्डूक मन्दिरसभ मोन पड़ि गेलैक।

मुक्तिनाथ नेपालक प्रसिद्ध तीर्थस्थल छियैक। चारूभरसँ छोटछिन जीवजन्तुसभ पूजा-अर्चना करऽ, ध्यान करऽ आ सांसारिक कर्मसँ मुक्ति पाबऽ एहिठाम आएल करैत अछि। मन्दिरक एक कात एक सए आठटा पानिक धारा छलैक। ओकरा मोन पड़लैक साँहिली झोपाक कहल ओ बातसभ, जाहिमे ओ कहने छलि जे धारामे गाएक मूड़ीजकाँ टोँटीसभ लागल छैक। ओ देखलक जे साँहिलीक बात सही छलैक।

धाराक पानि बहिकऽ जतऽ जाइक, ओतऽ एकटा पोखरि बनल छलैक। भक्तप्रसाद ओहि पोखरिमे पूब, पच्छिम, उत्तर, दक्षिण चारूभरसँ तीर्थ करऽलेल आएल तीर्थयात्रीसभसँ भेटल। ओहिठाम सुदूर पच्छिमक जुम्लासँ आएल नेपालक राष्ट्रिय चिड़इ डाँफेक एक जोड़ी छल। चितवनसँ जोड़ाएल जिला नवलपरासीसँ आएल नढ़ियाक एकटा सौँसे परिवार सेहो ओतऽ छल। ओत्तहि एकटा कारी रङ्गक कछुआ सेहो नहारहल छल। ओ जे बजैत छल से केओ नै बूझैत रहैक। ओ इशारासँ कहलकैक जे दक्षिण भारतसँ तीन बरिस लगाकऽ ओ एहिठाम पहुँचल अछि।

जुम्ली डाँफेकेँ ई भक्तप्रसाद बड़ पसिन्न पड़लैक। ओसभ एकरा सङ्ग लऽकऽ मन्दिरक चारूभर घूमिकऽ दर्शन सेहो कएलक। ओ दुनू परानी एकटा कोठलीमे पैसल, जे अन्हार छलैक। ओहिठाम चट्टानक

दोगबाट इजोत आबिरहल छलैक। जमीनक भीतरी तहसँ बहराएल गैसक जरैत नील रङ्गक लहासक निच्चा कल-कल करैत पानि बहबाक आवाज सेहो सुनारहल छल। पुजारी भक्तप्रसादकेँ कहलकैक– “आगि आ पानिक मेल भेनिहार मुक्तिनाथ पुण्यभूमि छियैक, बुझलहक बौआ !”

पुजारीक मोताबिक मुक्तिनाथमे सभतरहक भक्तजन अबैत अछि। उत्तरभरसँ तिब्बती बौद्धमार्गीसभ अबैत अछि आ दक्षिणभरसँ हिन्दूसभ। एहिठाम एहनो लोकसभ अबैत अछि जे प्रकृतिसँ प्रेम करैत अछि।

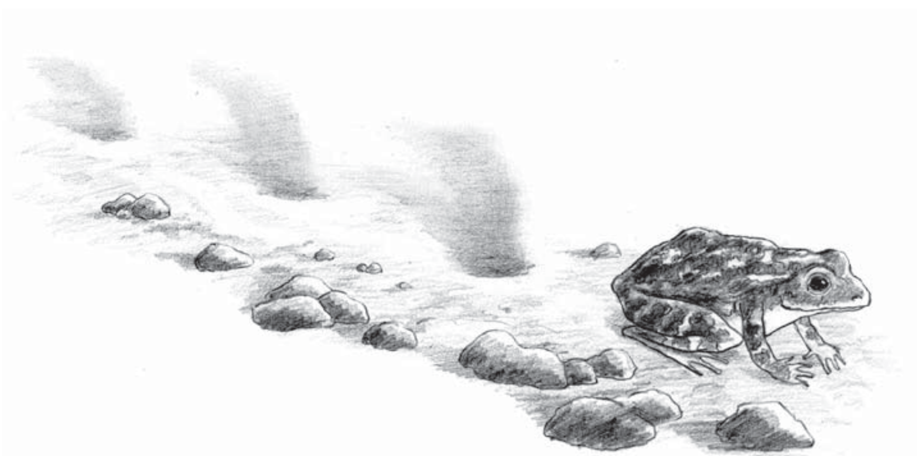
“ई बहुत पवित्र आ सत्त स्थान थिक। एहिठाम धरतीक भीतरी तहसँ ऊर्जा बहरारहल अछि। ई दिव्यज्योति हमरालोकनिकेँ सन्देश दऽरहल अछि जे एहिठामक सम्पूर्ण चराचरक सम्मान कएल जएबाक चाही।”– पुजारी बाजल।

मन्दिरक भीतर बहैत नील रङ्गक लहासक आगाँ ठाढ़ भक्तप्रसादकेँ किछु अलगे तरहक अनुभूति भेलैक। ओकरा मोनमे ई भावना जागृत भेलैक जे पृथ्वी, गाछपात, पाथर, नदी-नालासहित सम्पूर्ण जीवजन्तुकेँ सम्मान आ श्रद्धा कएल जएबाक चाही। एखन ओकरा लागिरहल छलैक जे एसगरियो आबिकऽ ओ बेजाए नहि कएलक। थोड़े कालक लेल तँ ओकरा एहन बुझएलैक जेना संसारक सभसँ बुजुर्ग बेङ उएह होअए। ओहन शान्त आ पवित्र जगहपर खुसीसँ चिचिआ उठब ठीक नहि छलैक, तँ ओ नहुएँ अपनहिसँ बाजल- “वाह भगता ! जय-जय कऽ देलहीक।”

जुम्ली साएँ-बहुकेँ जखन पूजा-पाठ कएल भऽ गेलैक तँ भक्तप्रसाद ओकरहिसभसङ्गे मन्दिरक परिसरसँ बहराएल। ओसभ भक्तप्रसादकेँ अपनासङ्गे जुम्ला चलबाक आग्रह कएलकैक। मुदा भक्तप्रसाद अपनहि रस्ता चलबाक नियार कऽ लेने छल। मन्दिरक कातहिमे ओ पर्यटन सूचना केन्द्रक कार्यालय देखलक। ओहिठाम एकटा महिला कर्मचारी छलि। ओ ओकरहिसँ पूछताछ करऽ लागल।

ओहि महिलाक मोताबिक ओकरा कि तँ कागबेनी जाए पड़तैक कि तँ मुस्ताङ जिलाक मुख्यालय लो-मान्थाङदिस। आ ई दुनू नहि तँ पूबदिस जाइत 'थोरुङ ला' पार कएलाक बाद मनाङ जिलादिस जाए पड़तैक। सूचना केन्द्रक महिला कहलकि– "एमहरसँ थोरुङ ला जाइत काल सोझे चढ़ान पड़ैत छैक आ रस्तामे बैसबाक सेहो कोनो जगह नहि छैक। हमसभ ई नहि सुनलहुँ अछि जे आइधरि कोनो बेङ थोरुङ ला पार कऽकऽ गेल होअए। बेसी उँचाइक कारणे थोरुङ लामे लेक लगैत छैक। बेसी उँचाइपर आँक्सिजनक कमी होइत छैक। तँ बेङक कोन कथा, लोको बीमार पड़ि जाइत अछि। कतोक तँ मरियो सकैत अछि।"

भक्तप्रसाद एही वयसमे किन्नहु नहि मरऽ चाहैत छल। तँ ओ साँहिली झेपाक सुझावमोताबिक आगाँ बढ़बाक विचार कएलक। ओ ओहि महिलाकेँ कहलक– "थोरुङ ला जाएबाक लेल कोनो दिन हमरहुसँ हिमतगर कोनो दोसर बेङ आओत। हम एखन लो-मान्थाङे चलि जाइत छी।"





हिमाली मरूभूमि

जँ आन कोनो बेङ रहितए तँ मुक्तिनाथक दर्शन कएलाक बाद घर घूरि जाइत। मुदा भक्तप्रसादक घूमफिर करबाक इच्छा एखनहु पूरा नहि भेल छलैक। भक्तप्रसाद उपरी मुस्ताङ जएबाक जे निर्णय कएलक तकर एकटा दोसरो कारण छलैक। साँहिली झ्रोपा भगताकेँ सुनौने छलि जे ओहिठामक समाज बिल्कुले अलग तरहक छैक। पछिला किछु समयसँ देशमे भऽरहल विभिन्न तरहक विकास आ परिवर्तनक बसात एखनधरि ओहिठाम नहि पहुँचल छलैक। तँ ओहिठाम एखनहु पुरनहि रीतिरिवाज आ चालिचलन देखल जाइत छैक। मुस्ताङमे ओहीठामक राजा छथि। हुनका ओतहुका लोकसभ बड्ड मानैत छनि। मुस्ताङी राजा चारूकातसँ देवालसँ घेरल 'लो-मान्थाङ' नगरमे रहैत छथि। ओहिठामक बासिन्दासभकेँ 'लोबा' कहल जाइत छैक।

"मुस्ताङ नेपालक हीरा थिक। ई अद्वितीय अछि।"– साँहिली कहने छलि।

जुम्ली दम्पतिसँ विदाह भेलाक बाद भक्तप्रसाद मुक्तिनाथक गौमुखी धाराक पानीमे बुड़की मारलक। तकरा बाद मुक्तिक्षेत्र छोड़िकऽ ओ उत्तरदिस विदाह भेल। किछुए कालक बाद ओ मरुभूमिसन निर्जन जगहपर पहुँचल। ओहिठाम लगपासमे अगबे चट्टाने-चट्टान देखाए पड़िरहल छलैक। चलऽवला रस्ता सेहो एहन लगैत छलैक जेना

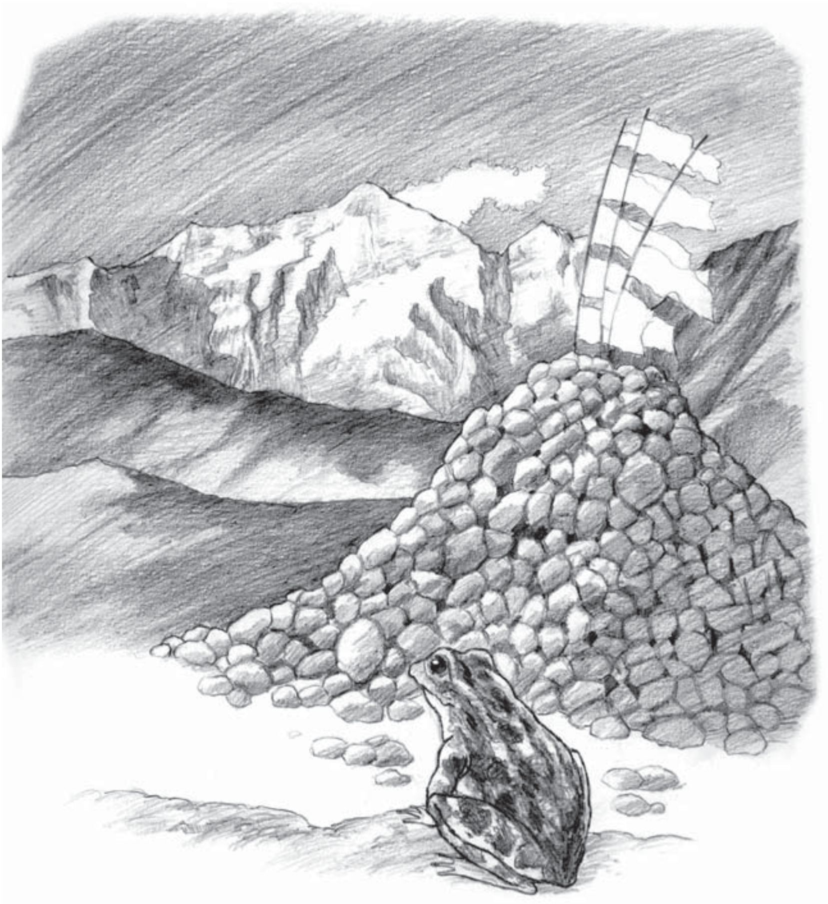
कोनो धारक कछेर हो। जाए डेग बढ़बैत छल, ततेक धूरा उड़ैत छलैक। भगताकेँ ओहिठाम चलबामे बड़ मोशकिल भऽरहल छलैक। पाछाँसँ टहटहौहा हिमाली रौदमे ओकरा अपन पीठ ऊरकैतसन बुझारहल छलैक।

साँच कही तँ बेङक उत्पत्ति एहि लेल भेले नहि अछि जे उँचाइपर रहल मुस्ताङक मरुभूमिसन जगहपर ओ ठठि सकए। बेङसहित सभतरहक उभयचरक उत्पत्ति पानि आ पानिक आसपासवला स्थानपर रहबाक लेल भेल अछि। ओकरा आब बुझबामे आबिरहल छलैक जे जखन ओ लो-मान्थाङ जएबाक बात कएलक तँ किएक मुक्तिनाथमे भेटल जन्तुसभ ओकरादिस बताहजकाँ ताकऽ लागल छलैक!

मुस्ताङमे सूखल जमीन छोड़ि आओर किछु नहि छलैक। भक्तप्रसादकेँ एहन बुझारहल छलैक जेना ओ सुखाकऽ टटारहल अछि। एना होएब ओकरा लेल डेराओन बात छलैक। रौद आओर माथपर चढ़ल जा-रहल छलैक। रस्तामे धूरा सेहो ओतबए उड़ियारहल छलैक। भक्तप्रसादक पिआससँ कण्ठ सुखाए लगलैक। ओ फकफक करऽ लागल। रौदमे ऊलसिकऽ ओकर मुह कारी होइत चलि गेलैक। मरुभूमिमे भोतिआएवला बेङक गति एहने होइत होएतैक– भक्तप्रसाद मोनहि मोन सोचलक। आ, ओकरा बुझाए लगलैक जेना ओ मरुभूमिमे बौआए गेल अछि।

थकित भऽकऽ भक्तप्रसाद सोचलक जे जँ एहने बात अछि तखन तँ घुरनहि कुशल। एतबहिमे ओकर मुरझाएल नजरि जेना कोनो हरियरीपर पड़लैक। मुदा ओकरा ओ कोनो काल्पनिक 'मरुद्यान' बुझलक। भक्तप्रसाद सुनने छल जे मरुभूमिमे चलनिहारसभ 'मृग-मरीचिका'मे भटकल करैत अछि। कतहु सपना तँ नहि देखिरहल छी कहि ओ आँखि मीड़ैत मूड़ी ऊटकारिकऽ फेरसँ ओहि दृश्यकेँ ध्यानपूर्वक देखऽ लागल।

मुदा एहन बात नहि छलैक। ओहिठाम सरिपहुँ मरुद्यान नहि छल। पहाड़क जड़िआठमे सभतरि उपर जमलाहा बर्फ पघिलि-पघिलि



बहिरहल छलैक। पानि ठण्ढ आ साफ छलैक। ओहि पानिकेँ पैनि बना खेतधरि पहुँचाओल गेल छलैक। खेतमे अल्लू, गहूम आ जओक फसिल लहलहारहल छलैक। हरियर फसिलवला बारीक कातमे एकटा नान्हिटा गाम छलैक, जतऽ छोट-छोट मुण्डा घरसभ छलैक। ओहिठाम पहाड़ी पीपरक गाछसभ सेहो शीतलता परसिरहल छल।

“ई ओतेक बेजाए जगह तँ नहि अछि!”– भक्तप्रसाद मोनहि मोन सोचलक। ओकरा मोनमे घूरि जएबाक जे विचार आबिरहल छलैक,

तकरा ऽटकिकऽ ओ पुन: आगाँ बढ़बाक निष्कर्षपर पहुँचल। एहने हरियरगर खेत-बारीवला मैदानसँ गुजरैत ओ कतोक चढ़ान-उतरान पार करैत आगाँ बढ़ैत रहल। रस्तामे चइले, घेमी आ चाराङ नामक गामसभ पड़ैत छलैक। एकटा गाम आ दोसर गामक बीच एकटा बेस खड़गर पहाड़ रहैत छलैक। ओहन पहाड़क उँचाइ पार कएलाक बाद 'ला-तो' भेटैत छलैक। 'ला-तो' छोट-छोट पाथरक 'पिरामीड'जकाँ बनल ढेरीकेँ कहल जाइत छैक। ओहन ढेरी हरेक चढ़ानक बाद भेटि जाइत छलैक। यात्रामे बहराइत काल वा यात्रा सम्पन्न कऽ घूरैत काल देवता-पितरकेँ मोन पाड़ैत बटोहीसभ जे पाथर चढ़बैत अछि, ओहिसँ 'ला-तो' बनि जाइत छैक। गोटेक-आधे 'ला-तो' तँ बेस खड़गर भऽ गेल छलैक। ओतेक नमहर 'ला-तो'सभकेँ देखिकऽ भक्तप्रसादकेँ बुझाइत छलैक जे ई सैकड़ो साल पुरान होएत।

एहने एकटा 'ला-तो' भेलहा जगहपर भक्तप्रसाद एक छन सुस्तएबाक लेल थम्हल। माथपरक पसेना पोछैत ओ पाछाँ घूमिकऽ ओहि रस्ताकेँ निहारऽ लागल, जकरा पार कऽकऽ ओ एतऽधरि पहुँचल छल। कागबेनी



आ जोमसोमसँ ओ जतबा दूरी तय कएने छलए, ताहिपर ओकरा अपनो विश्वास नहि भऽरहल छलैक। जोमसोमक माथहिपर ताड़जकाँ ठाढ़ नीलगिरि हिमालय एहिठामसँ दूर क्षितिजपर एकटा नान्हिटा गुम्बदजकाँ बुझारहल छल।

अपनाकेँ हिमालयक उत्तरदिस एतेक दूरधरि पहुँचल पाबिकऽ भक्तप्रसादकेँ कोनादन लागिरहल छलैक। सभसँ आश्चर्य तँ ओकरा एहि बातपर भऽरहल छलैक जे एखनहुधरि ओ नेपालहिमे अछि। कतोक स्थानपर हिमालय पर्वत नेपालक उत्तरी सीमाक काज कएने अछि। काठमाण्डू, पोखरा आ आनठामसँ हिमालयक दर्शन करबाक लेल उत्तरदिस घूरऽ पड़ैत छैक। मुदा मुस्ताङमे ओ दक्षिणभर घूमिकऽ हिमालयकेँ देखिरहल छल। ओकरा लेल ई अनुभव बिल्कुले नव आ रोमाञ्चक छलैक।

साँहिली झोपासँ भक्तप्रसाद इहो जानकारी पाबि गेल छलए जे मुस्ताङ किएक एहन रुक्ख-सुख छैक! बङ्गालक खाढ़ीसँ उठल मेघ आबिकऽ विशाल हिमालय पर्वतमालासँ टकराइत अछि। एना टकरएलाक बाद हिमालयक दक्षिणी भागमे वर्षा होइत छैक। मुदा हिमालयक उत्तरी भागमे कहियो वर्षा नहि भऽ पबैत छैक। तेँ मुस्ताङसनक इलाकाकेँ 'हिमाली मरुभूमि' कहल जाइत छैक। ई सभटा वैज्ञानिक तथ्य बूझियोकऽ भगताकेँ एहि बातपर विश्वास करबामे मोशकिल भऽरहल छलैक जे एहनो सुक्खा जगह नेपालहिमे भऽ सकैत छैक। भक्तप्रसाद अपनहिसँ प्रश्न कएलक– "काठमाण्डूमे अपन दोस-महिमकेँ जखन ई बात सुनाएब तँ ओसभ पतिआएत?"

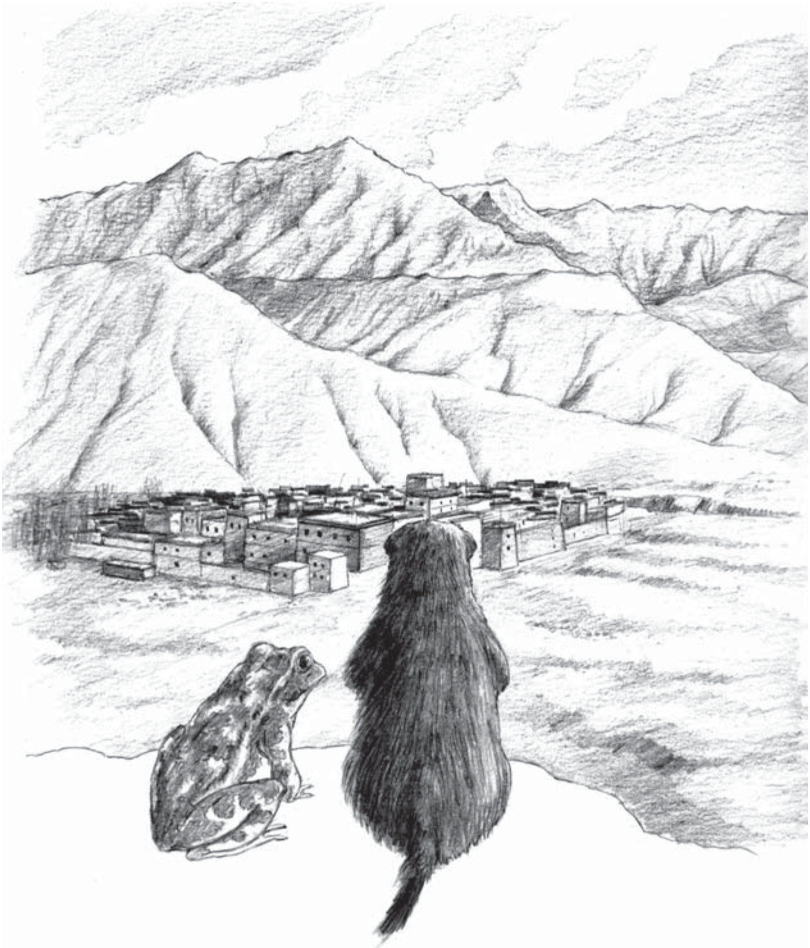


देउरालीमे "ला-तो"

पहाड़क जड़िसँ चलैत ला-तो भेल चढ़ान, जकरा देउराली कहल जाइत छैक, धरि पहुँचल भक्तप्रसाद। फेर निच्चा उतरल। फेर उपर चढ़ल, फेर निच्चा उतरल। ई कहियो नहि समाप्त होबऽवला क्रमकेँ देखिकऽ भगताकेँ अकच्छ लागि गेल छलैक। ओ थाकिकऽ लोथ भऽ गेल छल। भक्तप्रसाद अपनाकेँ जेना-तेना घिसिअबैतजकाँ एकटा देउरालीमे पहुँचौलक। ओ ओहिठाम रहल 'ला-तो'मे ई कबुला करैत एकटा पाथर चढ़ौलक जे आब फेर दोसर पहाड़ चढ़ऽ नहि पड़ए। तकरा बाद तिब्बती अक्षरमे 'ॐ मणि पद्मे हुँ' लीखल एकटा नमहरसन पाथरक कातमे जा-कऽ ओ धुस्सदना बैसि रहल।

तखनहि अनचोक्कहिमे पाछाँसँ 'ॐ मणि पद्मे हुँ' कहैत एकटा जन्तु आबिकऽ 'ला-तो' लग पसरि गेल। ओ जन्तु पैघ निश्वास छोड़ैत बाजल— "आब कहुना आएल लो-मान्थाङ।" ओहि बटोही जन्तुक बात सूनिकऽ भक्तप्रसाद मोनहि मोन खुशीसँ नाचि उठल।

ओहि प्राणीक थुथुन पिच्चलसन रहैक। बेस नमहर मोछ छलैक। सोँटल-साँटल देह भेनिहार ओहि प्राणीक देहक रोइयाँ चिक्कन आ चमकदार छलैक। ओकर आँखिमे चञ्चलता रहैक। मुहपर चञ्चल मुस्कान खेलाइत बुझाइत छलैक। अचानक भक्तप्रसादकेँ अपना कातमे ठेहिआएल बैसल देखिकऽ ओ प्राणी चौँकि उठल।



“ओऽऽऽह, तौँ तँ बेङ छह ! हम पोखरा आ भारतमे तोरासन-सन कतेको बेङकेँ देखने छी। तौँ एतेक दूर कोना आबि गेलह ? आ कि रस्ता भोतला गेलह, ऐँ ?” ओ मजाक करैतजकाँ पुछलकैक।

भक्तप्रसादकेँ भेलैक जे अनेरे किएक बागड़ कहाबी, तँ अपन कथाक सविस्तार वर्णन करऽ लागल। ओहि रोइयाँवला प्राणीकेँ भरिसक नीक लगलैक ई बात, तँ ओहो परिचय देलकैक।

"हमर नाम पेम्बा मूस छी, मुदा हम असलमे मूस नहि छी।" वास्तवमे ओ मूस नहि भऽ एकटा 'मार्मट' छल। लो-मान्थाङक ओहिपारवला पहाड़मे ढेरी मार्मट पाओल जाइत छैक, से ओ सुनने छल।

"एकबेर गर्म क्षेत्रसँ एकटा शिक्षक आएल छल। ओ एहिठामक प्राणीसभ दऽ किछु बुझनहि ने छल। ओ मार्मट कहियो ने देखने छल, तेँ हमरा दऽ ओकरा बूझि पड़लैक जे ई मूस छी। बस, हमर नाम ओ 'मूस' धऽ देलक।" पेम्बा अपन नामक विषयमे सफाइ देलक। "मुदा एहिसँ हमरा कोनो खराबी नहि भेल अछि। किएक तँ मैदानी क्षेत्रदिस व्यापार करऽ जाइत काल एहि नामसँ हमरा लाभे भेल अछि। खास जँ कही तँ हम व्यापारी छी। जाड़मे जखन एहिठाम ठण्ढा बेसी बढ़ि जाइत छैक तँ हम नेपाल आ भारतदिस घूमफिर करऽ बहरा जाइत छी।" पेम्बा अपना दऽ आनहु बहुतरासे जानकारीसभ देलक।

एकरा बाद विषय बदलैत निच्चा माटिक मुण्डा चारवला घरसभ रहल बस्तीदिस देखबैत पेम्बा बाजल– "ओ जे देखैत छहक से लोबासभक राजधानी लो-मान्थाङ छियैक। ओ चारूभरसँ देवालसँ घेराएल छैक। ओहिठाम जएबाक लेल एक्कहिटा केबाड़ छैक, जे साँझ पड़लाक बाद बन्न भऽ जाइत छैक।"

बस्तीक चारूकात देवाल लगाएब आ सूर्यास्तक बाद केबाड़ बन्द करब लो-मान्थाङक पुरान प्रचलन छैक। पहिने-पहिने सुनसान जगहपर रहल बस्तीसभमे उत्तरभरसँ डाकूसभकेँ अएबाक डर रहैत छलैक। आइकाल्हि एहि तरहक कोनो डर नहि छैक। तैयो नगरक मुख्य द्वार बन्द करबाक परम्पराधरि कायमे छैक।

अचानक पेम्बा अस्त होइत सूर्यदिस दखलक आ बाजल– "एह, साँझ पड़ऽ लागि गेलैक। जल्दी चलह, नहि तँ लो-मान्थाङक केबाड़ बन्द भऽ जएतैक आ हमसभ बाहरहि रहि जाएब।"

ओहिठामसँ लो-मान्थाङ जएबाक लेल सोझे निच्चादिस ढरकऽ पड़ैत छलैक। पेम्बा तँ दौड़ि गेल। भक्तप्रसाद सेहो कूदि-कूदिकऽ

ओकर पछोड़ धएने रहल। ईसभ जखन द्वारलग पहुँचल तँ केबाड़ बन्द होबहि लागल रहैक। जे होउक, ई दुनू भीतर प्रवेश कऽ गेल।

“आइ तँ सभ चौपट्ट भऽ जइतैक। एतेक लम्बा दूरी तय कऽकऽ अएलाक बाद फेर जँ ठण्ढामे बाहरहि राति बितबऽ पड़ितैक तँ? लए आबह हमरासङ्गे।” कहैत पेम्बा आगाँ-आगाँ चलैत रहल।



छोट आ मेही गल्लीसभ पार करैत पेम्बा भक्तप्रसादकेँ एकटा भट्ठीमे लऽ गेल। पेम्बा बाजल जे ओहि भट्ठीवालीक नाम हेमा मालिनी छियैक। ई सूनि भक्तप्रसादकेँ आश्चर्य भेलैक। किएक तँ हेमा मालिनी एक समयक चर्चित भारतीय अभिनेत्री छलि, से बात भक्तप्रसादकेँ बूझल छलैक। भक्तप्रसाद किछु पूछितए, ताहिसँ पूर्वहिँ ओकर बात बूझिकऽ पेम्बा अपनहि बाजल– "ओना एकर खास नाम तँ डोल्मा छियैक, मुदा हेमा मालिनीएसन सुन्नरि भेलाक कारण हमसभ एकरा एही नामसँ बजबैत छियैक।"

धूआँक धोन्हि पसरल भट्ठीक भीतर जखन ओसभ पैसल तँ ओहिठाम गहिँकीसभक भीड़ लागल छलैक। ओसभ जोड़-जोड़सँ हँसैत, बजैत खा-पी-रहल छल। एकदिस कोनामे किछुगोटे तास खेलारहल छल तँ दोसरदिस छोट-छोट धीयापुतासभ कम्बलमे ओङ्घड़ाइत खेलारहल छल।

"की छै हओ पेम्बा! आ तोरासङ्गे जे ई पाहुन छथुन, से के?" परम्परागत पोशाक 'छुआ' पहिरने एकटा युवती ओकरासभदिस तकैत बाजलि। ओकर गोलाकार मुहमे कोमलता झलकैत छलैक। ओकर स्वर तिक्ख रहितहु मिठगर छलैक। ओ जखन हँसैत छलि तँ लालटेमक मद्धिम इजोतमे सेहो ओकर सोनमढ़ल दाँत चमकि उठैत छलैक।

"गोड़ लगैत छियौक दिदी! ई हमर सङ्गी भक्तप्रसाद बेङ छी। एकरासँ देउरालीमे हमर भेट भेल तँ सङहि लेने चलि अएलियैक।" बड़ सम्मानक सङ्ग बाजल पेम्बा। एकरा बाद भक्तप्रसाददिस घूरिकऽ कनफुस्कीमे बाजल– "इएह छियैक डोल्मा। हिमालयक उत्तरदिसक सभसँ बेसी सुन्नरि नहि बुझएलह तोरा?"

"लएह एम्हर बैसह!" डोल्मा ओकरासभक आगाँ छोटका टेबुलपर दू बाटी 'चम्पा' आ छीट काढ़ल चिनियाँ कपमे चाह राखि देलकि। पेम्बा भक्तप्रसादकेँ चाहमे मिलाकऽ चम्पा खाएब सिखौलकैक। नोनगरहा चाहमे चौँरीक घी गमकिरहल छलैक। भक्तप्रसादकेँ ओ चाह खूब नीक लगलैक। पेम्बा कोनो गुप्त बात कहबाक अन्दाजमे भक्तप्रसादकेँ

कहलकैक– “आओर एहिमे मकैक फुटहा जे मिझराएल जाए, तखन जे सुअदगर होइत छैक, से कहल ने जाए।”

तकरा बाद पेम्बा भक्तप्रसादकेँ लऽकऽ लो-मान्थाङक एक चक्कर लगौलक। ओहिठामक रस्ता सिकिस्त आ घुमाओदार छलैक। दुनू कात बनल दूमहला मुण्डा घरसभक निचला भागमे याक आ खच्चरसभ बान्हल छलैक आ उपर लोकसभ रहैत छल। ओसभ बड़का-बड़का गुम्बासभक भीतर सेहो पैसल। ओहिठाम दू-तीन महला घरबरोबरि उँचाइवला भगवानक मूर्तिसभ छलैक। एतबा कालधरि मुनहरि साँझ पड़ि गेल छल। गुम्बामे लामालोकनिक एकरङ्गा-एकढङ्गा प्रार्थनाक सङहि धूप-दीप जराकऽ आराधना शुरू भऽ गेल। घरिघण्ट आ ढोल-तासा बाजऽ लागल।

घूमैत-फिरैत ओसभ एकटा बेस नमहर उजरा भवनक आगाँ पहुँचल। भवनक बरण्डामे एकटा भयानक भोटिया कुकुर बान्हल छलैक। पेम्बा भवनदिस देखबैत बाजल– “ई राजाक दरबार छियैक। ओना तँ मुस्ताङ नेपालहिमे पड़ैत अछि, मुदा नेपालक महाराजाधिराजक अनुमतिएसँ मुस्ताङमे राजा रहबाक व्यवस्था छैक। मुस्ताङी राजाक शक्ति ओतेक नहियोँ रहैत एहिठामक लोक हिनकर बड़ सम्मान आ श्रद्धा करैत छनि।”

मुस्ताङक मरुभूमिसन जगहपर सेहो एहन सुरेबगर नान्हिएटा नगर होएतैक से भगताक कल्पनासँ बाहरक गप्प छल। ओहिठाम अनेको सुन्दर गुम्बा, ओतेकरासे लोक, राजदरबार आ राजासहित देखिकऽ भगताकेँ बड़ छगुन्ता लगलैक। ओ अपन मोनक बात पेम्बाकेँ सुनौलक। “तोरा लेल मरुभूमि होएतह, मुदा हमरासभकेँ तँ इएह बड़ नीक लगैत अछि। काल्हिखन हम तोरा अपन घर लऽ चलबह, तखन बुझबहक जे एहिठाम कतेक मोन लगैत छैक।”– पेम्बा कहलकैक।

तकरा बाद दुनूगोटे हेमा मालिनीक भट्ठीदिस घूरि जाइत गेल।



चाङथाङक मार्मट

पेम्बा भोरे उठिकऽ रातिखन भट्ठीमे खा-कऽ जे सूतल छल, से डोल्माकेँ चुका देलक। तकरा बाद मार्मट आ बेङ लो-मान्थाङक प्रवेशद्वारसँ निकलि आगू बढ़ल।

पहिने ओसभ किछु ढरकान ढरकल आ तकरा बाद धारकेँ पार कएलक आ सोझे उत्तरदिस विदाह भऽ गेल। किछु काल चललाक बाद ओसभ ला-तो भेल दोसर देउरालीमे पहुँच गेल। भक्तप्रसाद सोचिरहल छल जे आब फेर ढरकानदिस जाए पड़त। मुदा ओहिठाम जतऽधरि नजरि पहुँचरहल छलैक ओतऽधरि समतल मैदाने देखबामे अबैत छलैक।

"ऍं हओ पेम्बा, ई की हओ? एहिठाम तँ तराइएजकाँ समतल मैदान छैक हओ!" भक्तप्रसाद आश्चर्यसँ टरटराएल।

उत्तरमे पेम्बा कहलकैक– "हँ, मुदा तराइक उँचाइ समुद्री सतहसँ एक्कहु हजार फीट उपर नहि छैक, जखन कि एहिठामक उँचाइ तेरह हजार फीट छैक। एहिठामकेँ चाङथाङ कहल जाइत छैक। एहिठामसँ शुरू भेल ई समतल जगह ओम्हर तिब्बतधरि पसरल छैक। तिब्बतकेँ किएक 'उच्च पठार' कहल जाइत छैक, से तँ आब बुझबामे आबि गेल होएतह ने!"

ओहिठामक सुखाएल आ समतल बाटमे किछु काल चललाक बाद

ओसभ एकटा तीन फीट जते ठाढ़ सीमेन्टक खाम्हलग पहुँचल। ओहि खुलल पठारमे एकटा इएहटा खाम्ह ओकरासभकेँ भेटल छलैक।

आश्चर्यक सङ्ग भक्तप्रसाद पुछलकैक– “ई केहन खम्हा छैक हओ पेम्बा ?” पेम्बा कहलकैक– “हमसभ एखन नेपालक सीमामे आबि गेल छी। ई खम्हा सीमा-स्तम्भ छियैक। एहिसँ ओम्हर तिब्बत क्षेत्र पड़ैत अछि। बहुत पहिने नेपाल आ चीनक अधिकारीसभ एहिठाम आबि नाप-नक्सा कएने छल। दुनू देशक सीमा एहिठाम पड़ैत अछि, से ठेकान कऽ ई खम्हा गाड़ल गेल।”

सीमा-स्तम्भक एक कात ‘नेपाल, नं. २२, २०१८ साल’ लीखल छल। दोसरदिस चिनिया अक्षरमे शायद उएह बात लीखल छल।

“एहन सैकड़ो स्तम्भसभ सीमाभरि राखल छैक”– पेम्बा जानकारी देलकैक। आ हँसीए-हँस्सीमे भक्तप्रसादकेँ देखैत पेम्बा कहलकैक–



"इएह छी हमर घर।" पेम्बाक बात सूनि भक्तप्रसाद ठकुआएल रहि गेल। चाङथाङक ओहि सुक्खा जमीनमे कतहु एकोटा घर नहि छलैक। ओहिठाम खालि बीले-बील रहैक। फेर एकबेर बेङ ओहि बीलसभमे निराड़िकऽ देखलक। प्रत्येक बीलसँ मार्मटसभ हुलकी मारिरहल छल। ओसभ पेम्बाक भाइ-भैयारी आ सखा-सन्तानसभ छलए। ओसभ आश्चर्य मानि भक्तप्रसाददिस एकटक देखिरहल छल जे ई अदभुत प्राणी कोन ठामसँ आबि गेल!

पेम्बा अपन इष्टमित्रसभकेँ बजबैत कहलकैक– "सभगोटा बाहर अबैत जाह। हमरासङ्ग काठमाण्डूक एकटा सङ्गी सेहो आएल अछि। एकर नाम भक्तप्रसाद बेङ छियैक।"

सैकड़ो मार्मट एक्कहिबेर हुल-हुल कऽ बीलसँ बाहर भेल। चारूदिस गरदा उड़ऽ लगलैक आ शोर-गुल मचि गेल। चाङथाङक मार्मटसभ एहिसँ पहिने बेङ नहि देखने छल।

भक्तप्रसादक परिचय दैत पेम्बा जोरगर आवाजमे सभकेँ जानकारी दैत कहऽ लागल जे भक्तप्रसाद कोना अनेको ठाम घूमैत-फिरैत चाङथाङ पहुँचल अछि। ओ भक्तप्रसादक परिचय एकटा साहसी यात्री आ अन्वेषकक रूपमे देलकैक। मार्मटक स्वभाव नव-नव बातसभ बूझब होइत छैक। ओसभ स्वभावहिसँ सभ बात जनबाक शौखीन होइत अछि। ओसभ भक्तप्रसादकेँ अपना देशक मादे जानकारी देबाक लेल आग्रह कएलक। भक्तप्रसाद सेहो उत्साहक सङ्ग ओकरासभकेँ काठमाण्डू उपत्यकाक सभटा जानकारी देलकैक। काठमाण्डूक असनबजार, ओहिठामक मन्दिर, दरबार आ ओहिठामक बासिन्दाक वर्णन कएलक। चितवनक जङ्गल, पोखराक फेवाताल, घान्द्रुकसँ देखाएवला हिमालयक दृश्य आ मुक्तिनाथक नील लहास आदि दऽ सेहो विस्तारकपूर्वक बतौलक ओ। तखनधरि झलफल साँझ भऽ गेल रहैक।

तकरा बाद ओसभ घूर पजारि ओकरा चारूकात गोलाकार भऽ बैसि गेल। भक्तप्रसाद माथ उठा उपरदिस तकलक। साफ आकाशमे

उज्जर-उज्जर तरेगनसभ चमकिरहल छल। ततबएमे केओ डम्फा पिटलक आ केओ टुङना बजौलक। चम-चम करैत तरेगनक छतक निच्चा रमनगर पार्टी शुरू भऽ गेलैक। एकटा मार्मट ठाढ़ भऽ कहऽ लागल– "महिला एवं सज्जनवृन्द ! आइ हमरासभक बीच एकगोटा अतिथि उपस्थित भेल छथि। ओ छथि भक्तप्रसाद बेङजी एकरा सङहि हमरासभक पेम्बा सेहो घर आएल अछि। पेम्बाक घुरबाक उपलक्ष्यमे आ भक्तप्रसादक सम्मानमे आइ एहि रात्रिभोजक आयोजन कएल गेल अछि। धन्यवाद।"

तकरा बाद तँ के छोट के पैघ, सभटा मार्मटसभ नाच-गान करऽ लागल। ओ अपने-अपनेमे हाथ पकड़ि 'स्यो-स्यो' करैत नाचिरहल छल। ओना नाचब भक्तप्रसादक वशसँ बाहरक बात छलैक। तैं ओ स्वयम्भूक पछुआड़वला खेतमे जे नचैत छल, सएह 'फ्राँगी डान्स' देखा देलकैक। भक्तप्रसादक नाच देखि मार्मटसभ सेहो ओहिना नचबाक प्रयत्न कऽरहल छल। मुदा बेङजकाँ कूदि सकब ओकरासभक सकमे छलैक कहाँ ?

एमहर ईसभ नाचिरहल छल। ओमहर ओकरासभक शोरगुल आ हल्ला-गुल्ला चाङथाङक लगपास दूर-दूरधरि पहुँचरहल छलैक। गीत आ डम्फाक आवाजक कारणे ओहिपार तिब्बतक पठारमे अपन-अपन पालक भीतर सुतबाक नियार कऽरहल ड्रोक्पासभक निन्न उचाटिरहल छलैक। मार्मटसभक चीँ-चीँक आवाजकेँ झाँपिकऽ सभसँ टहङ्कारमे गाबिरहल भगताक टरटरहा गीत दूरहिसँ साफ सुनाइत छलैक।

निच्चा लो-मान्थाङक डोल्मा सेहो अपन खिड़कीसँ गीत सुनलकि आ बाजलि– "ई आवाज हम चीन्हैत छियैक। ई काठमाण्डूसँ आएल बेङक आवाज छैक।"



कैलीक सङ्ग यात्रा

पार्टी रातिखन अबेरधरि चलैत रहल। तेँ प्रातभने सभकेओ पहर दिनधरि बिछाओनेपर औँघड़िया मारिरहल छल। पेम्बाक बीलवला घरमे सूतल भक्तप्रसाद निन्न टुटलापर असकताइत बाहर हुलकी देलक। रातुक मनोरञ्जनक स्मरण दिआबऽवला एकटा डम्फा छोड़ि ओहिठाम आन कोनहु चीज नहि रहि गेल छलैक। डम्फा भरिसक केओ बिसरिकऽ चलि गेल छल।

पेम्बा एखनहु सुतले छल। भक्तप्रसाद बाहर आङनमे आबिकऽ चक्कर मारऽ लागल। ओकरा अचानक बुझएलैक जेना ओकर यात्रा एत्तहि समाप्त भऽ गेल हो। नेपालक अन्तिम सीमाधरि पहुँचिए गेल। एहिठामसँ ओमहर तिब्बतदिस जएबाक बाते नहि छलैक। ओकरासङ्ग राहदानी तँ रहबे ने करैक, 'भिसा'क कोन कथा !

भगता एहि चिन्तनमे ओझराएले छल कि सभ मार्मट आँखि मिड़ैत अपन-अपन बीलसँ बाहर होइत जाइत गेल। पछाति पेम्बा सेहो बहराएल। भक्तप्रसादकेँ चिन्तामग्न देखिकऽ ओ पुछलकैक– "रे भाइ ! कतऽ ओझराएल छेँ ?"

भक्तप्रसाद अपन चिन्ताक कारण ओकरा कहलकैक। भगताक समस्यापर विचार करबाक लेल सभ मार्मट तत्काल जूटि गेल। एहि क्रममे एकटा बुजुर्ग मार्मट सलाह देलकैक जे भक्तप्रसादकेँ पच्छिम

नेपालक बझाङ आ बाजुरा चलि जएबाक चाही। दोसर सलाह देलकैक जे सुदूर पूर्वी नेपालदिस जाएब उत्तम। एकटा जुअनका मार्मट हँस्सी करैत इहो कहलकैक जे भगता ओहीठामक बीलसभमेसँ एकटा चूनिकऽ चाङथामहिमे घरजमैया बनिकऽ रहि जाए।

मुदा पेम्बाकेँ ई कोनहु सलाह नीक नहि लगलैक। ओ सोचलक जे बझाङ-बाजुरा आ पूर्वी नेपाल बड़ दूर छैक आ ओतेक दूर जाएब ओकरा लेल सम्भव नहि छैक। मुस्ताङक जाड़मे बेङ नहि ठठि सकैत अछि, तँ सदति चाङथाङहिमे रहबाक बात सेहो नहि आएल। तँ पेम्बा प्रस्ताव रखलक– “भगता बल्कि डोल्पो जाकऽ ओहिठामक गुम्बासभक दर्शन कऽ आबए। लो-मान्थाङसँ तीर्थयात्रीसभक एकटा दल उत्तरी डोल्पोक शे गुम्बा जा-रहल अछि। भगता सेहो ओकरहिसभक सङ्ग मिञराकऽ जा सकैत अछि।” सभकेओ ओकर बातसँ सहमत भेलैक। भक्तप्रसाद सेहो खुशी-खुशी एहि प्रस्तावपर सहमत भऽ गेल।

चाङथाङक सम्पूर्णप्राय: मार्मट भक्तप्रसादकेँ पहुँचाबऽ लेल लगक ‘ला-तो’धरि पहुँचल। ओहिठामसँ लो-मान्थाङदिस जाएवला ढरकान शुरू होइत छलैक। बेङ जखन ढरकानदिस कूदऽ लागल तँ सभ मार्मट हाथ हिला-हिलाकऽ ओकर विदाइ कएलकैक।

भक्तप्रसाद जखन लो-मान्थाङ पहुँचल तँ डोल्पो जाएवला तीर्थयात्रीसभकेँ प्रस्थान करबाक तैयारीमे पौलक। भगताकेँ कैली चौँरीक सङ्ग लागिकऽ चलबाक अवसर भेटलैक। कैली चौँरी डोल्पोक शे गुम्बाक लेल मुस्ताङी राजाक चम्पाक दू बोरा सनेस लदने जा-रहल छलि। बेङबा कूदिकऽ जा कैलीक पीठपर लदल बोरापर बैसि गेल। एकरा बाद चौँरीक लश्कर पच्छिमभरक यात्राक लेल अपन चरबाहासभक सङ्ग लो-मान्थाङ छोड़ि देलक।

भक्तप्रसाद एखनधरिक यात्रामे कैलीसनक कम बाजऽवला प्राणी नहि देखने छल। आवश्यकतासँ अधिक एक्कहुटा शब्द ओकरा मुहसँ नहि बहराइत छलैक। बेसी काल तँ ओ कतेको बात हूँए हाँमे टारि

दैत छलि। भक्तप्रसादकेँ तँ ई देखल छलैक जे इचङ्गूक गाएसभ पटर-पटर करैत कोना अदहा दिन बिता लैत छल। मुदा कैली चौँरी चाइँ-चुइँ किछु नहि बजैत छलि। बाटक धारामे जँ पानि पिबाक होए तँ भक्तप्रसादक ध्यान घिचबाक लेल देह हिला 'पानि' कहए। यात्राक क्रममे भक्तप्रसाद कैलीक छोटकरी भाषासभ बूझऽ लागल। जेना कि कैलीक 'माछी' कहलापर ओ बूझि जाए जे जाहिठाम ओकर नाङरि नहि पहुँचैत छैक, ताहिठामक माछी उड़ा देबाक लेल कहिरहलि अछि।

भक्तप्रसादकेँ बुझएलैक जे डोल्पो जाएवलासन नमहर आ कठिन बाट बिना कोनो गप्पे-सप्पक बिताबऽ पड़त। गप्प-सप्प करबाक कोनो



नियार-भास नहि देखि भक्तप्रसाद बाटक दोसर चीजसभदिस ध्यान देबऽ लागल। एहिसँ पहिने ओ एहिसभपर ओतेक ध्यान नहि दऽरहल छल। एखन ओ पहाड़क कछेरपर भोरसँ साँझधरि लागऽवला रौद आ छाहरिमे होबऽवला परिवर्तनसभ देखिरहल छल। मेघक आकारमे होइत परिवर्तनसभकेँ देखि ओ विभोर भऽरहल छल। आ, कठिनाह जगहसभपर कखनो-कालकऽ देखाएवला हिमाली भेड़ा आ 'नाउर'सभ देखबाक लेल ओकर मोन ललचाए लगलैक।

एकबेर चलिते-चलिते कैली अपन देह कड़ा करैत ठाढ़ भऽ गेलि। धूपक झाड़ीक उपरदिस देखैत ओ दू शब्द कहलकि– "हिमचितुआ !"

ठीके ओहिठाम एकटा चितुआ एकदमसँ मोछपर ताओ दैत बैसल रहए।

हिमचितुआकेँ देखि भगता सेहो एकबेर डेरा गेल। हिमचितुआ सेहो ओहि कैली चौँरी, तकरा उपर रहल बोझ आ तैपर बैसल बेङकेँ एकटक देखैत रहल। ओकरासभक नजरि मिलल। तकरा बाद नहुएँ उठिकऽ चितुआ अङैठीमोचार कएलक आ अपन लम्बा, मोटका नाङड़ि हिलौलक। तकरा बाद फूर्तिक सङ्ग आओर उपरका चट्टानमे चढ़ि गेल आ ओहिठामसँ किछुए छनमे अलोपित भऽ गेल। कैली किछु नहि बाजिकऽ कनडेरिए ओकरादिस ताकऽ लागलि। एक तरहेँ ओ भक्तप्रसादसँ पूछिरहल छलि जे केहन लगलौक ?



बोन्पोमार्गी नीमा च्याङ्ग्रा

डोल्पोसनक गजब जगहपर पहुँच कऽ सूर्योदयसँ लऽ सूर्यास्तहिधरि प्रकृतिक छटा निहारि पाएब कम आनन्दक बात नहि थिक। मुदा जखन राति-दिन एतबएटा होइत रहए तँ आनन्द कमैत चलि जाइत छैक। ताहूपर जँ सङ्गी एहन भेटि जाए जे बिल्कुल बजबे नहि करए तँ आनन्दमे आओर कमी अबैत जाएब स्वाभाविके भऽ गेल। भगताकेँ एखन ओहने भऽरहल छलैक।

ओ कैलीसङ्ग बहुत किछु बतिआए चाहैत छल, मुदा ओकर लच्छन-करम एहन छलैक जेना किछु सुनितहि नहि होइक। एहनमे बेचारा की करितए? भक्तप्रसाद गीत गबैत अपनाकेँ बिसरबाक चेष्टा सेहो कएलक। मुदा सङ्गीत आ बेङक गलाक ताल-सुरबीच कहियो सम्बन्धे नहि बनि पएलैक अछि। अपन आगाँ-आगाँ चलैत आनहु चौँरीसभसँ गप्प लड़एबाक प्रयत्न सेहो भक्तप्रसाद कएलक। मुदा ओकर आवाज ओकरासभधरि पहुँचबे नहि करैत छलैक।

कतोक दिनधरि ककरोसङ्ग गप्प नहि कएलाक बाद भक्तप्रसादकेँ तँ डर होबऽ लगलैक जे कहीं ओ बाजबे ने बिसरि जाए। जे बेङ टरटरा नहि सकए ओहि बेङकेँ कोना बेङ कहल जा सकैत अछि? तेँ अकछिकऽ भगता आकाशदिस ताकि लम्बा आ उदास स्वरमे जोड़सँ चिकरल।

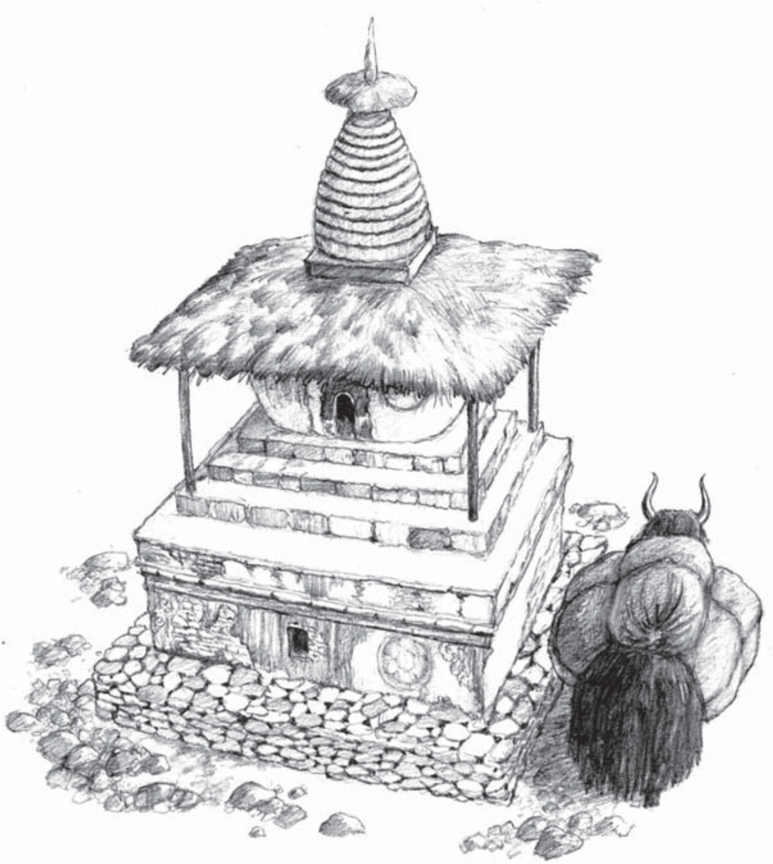
संयोगवश तखनहि एकटा च्याङ्ग्रा चौँरीसँ आगाँ निकलऽ लागल

छल। बहुतोगोटे तँ जनितहु होएताह जे हिमाली बोकराकेँ च्याङ्ग्रा कहल जाइत छैक। ओ च्याङ्ग्रा बेङक टाहि सुनलक। ओकर नाम नीमा छलैक। ओ एकटा बोझ ढोबऽवला च्याङ्ग्रा छल। अपनहिसनक आन-आन च्याङ्ग्रासभक सङ्ग ओ डोल्पोसँ भोटिया नोन लऽकऽ पहाड़क गामदिस जाइत छल आ ओमहरसँ अन्न-पात लऽकऽ डोल्पो पहुँचैत छल। नीमा च्याङ्ग्रा गप्प-सप्पमे आनन्द मानऽवला नमरी बजक्कड़ छल।

ओ पीठपर बामा-दहिना दुनू कात दूटा ऊनी बोरियामे नोन लदने छल। आनदिस च्याङ्ग्रासँ सामान ढोअएबाक चलन हेराएल जा-रहल छैक। मुदा डोल्पोमे ई प्रथा एखनहु कायमे छैक। च्याङ्ग्राक दुःख देखिकऽ भक्तप्रसादक मोन द्रवित भऽ गेलैक। एहिसँ पहिने भक्तप्रसादक धारणा छलैक जे भेड़, बकरी, च्याङ्ग्रा-ईसभ एहन प्राणी थिक जकरा दाना आ घासपात खुआकऽ दयापूर्वक दुलार-मलारसँ पोसल जाइत छैक।

परिचय-पात भेलाक बाद बेङ अपना मोनक बात च्याङ्ग्राकेँ कहलकैक। नीमा कोनो पुरान घनिष्ठ मित्रजकाँ आत्मीयताक सङ्ग बेङकेँ कहलकैक– "धुर जो बेङबा! दया तँ दाना आ घास खुआकऽ पोसल जाएवला मोटघाट खस्सी आ च्याङ्ग्रापर कएल जाइत छैक। लोक ओकरा एहिलेल मोटघाट बनबैत अछि, जाहिसँ ओकरा काटिकऽ खा सकए। ओहिसँ नीक तँ इएह नोनक बोरिया ढोनाइ। हम जे नोन ढोबैत छी, ताहिसँ ककरो भलाइ तँ होइत छैक! आ फेर जानो बँचि गेल।"

जीवनकेँ सहज ढङ्गसँ लेबाक नीमाक तरिका भक्तप्रसादकेँ पसिन्न पड़लैक। नीमा च्याङ्ग्रा सेहो शे गुम्बादिस जा-रहल छल। तँ कैली, भक्तप्रसाद आ नीमा तीनूगोटे सङहि आगाँ बढ़ऽ लागल। एखन जा-कऽ भक्तप्रसादकेँ गप्प कएनिहार मित्र भेटल छलैक। बातचीत करैत ओकरा एहन लागिरहल छलैक जेना रस्ता जल्दी-जल्दी कटिरहल हो। ओ कखनो कैलीक पीठपरसँ छड़पिकऽ नीमाक पीठपर बैसैत छल तँ कखनो फेर नीमा च्याङ्ग्राक पीठपरसँ छड़पिकऽ कैलीक पीठपर चलि



जाइत छल। एहि तरहेँ भरिबाट ओ एहिना एमहरसँ ओमहर छड़पैत रहल।

डोल्पो नेपालक सभसँ पैघ जिला छियैक, मुदा सभसँ पछुआएल आ दुर्गम जिला सेहो इएह छियैक। ओहिठामक जमीन रुक्ख छैक। ओहिठामक जीवन दुःखपूर्ण अछि। "बाहरक लोकसभ एहिठाम मोशकिलहिसँ अबैत अछि। तेँ एहिठाम पुरान धर्म आ संस्कृति एखनहु जीवित अछि। नेपालक आन भागसँ तँ पुरान संस्कृति निपत्ता भऽ गेलैक अछि।"– नीमा डोल्पोक विषयमे कहिरहल छल। नीमा देश-देशावर भ्रमण कऽ चुकल छल, तेँ बेस बूझैत छल।

शे गुम्बा पहुँचऽलए आओर एक दिन लागऽवला रस्तामे एकटा 'छोर्तेन' अर्थात् स्तूप छलैक। कैली ओहि छोर्तेनक दहिना कातसँ परिक्रमा कएलकि। गुम्मी आ जिद्दी कैलीएटा नहि, आनहु चौँरीसभ छोर्तेनक परिक्रमा उन्टेभरसँ कऽरहल छलि। होइत-होइत नीमासहित आन च्याङ्ग्रासभ सेहो चौँरीसभक पछोड़ धएने दहिनेभरसँ छोर्तेन घुमलक। काठमाण्डूक मन्दिर आ मुस्ताङक गुम्बासभमे भक्तप्रसाद देखने छल जे सभ बामा कातसँ मन्दिर आ गुम्बाक परिक्रमा करैत अछि। मुदा एहिठाम सभ उन्टे घूमिरहल छल।

"कि तँ डोल्पोमे सभ बताह अछि कि तँ हमहीँ बात नहि बुझलहुँ अछि।"– भगता सोचलक। कैलीकेँ पूछियोकऽ कोनो लाभ नहि छलैक। तँ ओ एक्कहि क्षण बाद नीमादिस उन्मुख भऽकऽ बाजल– "ऐँ हओ भैया ? एहिठाम सभ उन्टे किएक छोर्तेन घूमैत छैक ?"

"तोरा बूझल छह जे नेपालमे बामा कातसँ गाड़ी चलबैत छैक आ तिब्बतमे दहिना कातसँ ?" तिब्बत आ नेपालक मैदानी बजारसभदिस गेल बेरमे गाड़ी-घोड़ा देखि चुकल नीमा जवाब देलक– "डोल्पोमे हमसभ गुम्बा दहिने कातसँ घूमैत छियैक। किएक तँ हमरासभक धर्म 'बोन-पो' अछि। ई आन धर्मसँ भिन्न छैक। आ ई बहुत पुरान धर्म सेहो छियैक।"

नीमा आओर स्पष्ट करैत बाजल– "आधुनिकताक कारणे नेपाल आ तिब्बतमे धर्म आ परम्परासभ सेहो बदलि गेलैक। मुदा डोल्पोमे एखनहुधरि बाहरी संसारक कोनो प्रभाव नहि पड़ल छैक। हमरालोकनि अपन परम्पराकेँ एखनहुधरि जोगाकऽ रखने छी।" किछु चौल करैत ओ आगाँ बाजल– "फेर, बुद्ध भगवान छोर्तेनकेँ बामा कऽकऽ घूमैत छथि, हमसभ दहिना कातसँ घूमैत छी। एनामे भगवानसँ तँ बेर-बेर भेटबाक अवसरि भेटि जाइत छैक ने !"



लम्बा लामा

बाटपर किछु दिन जे सङ्ग चलल ताहि क्रममे नीमा बहुतो मार्मिक बातसभ भगताकेँ सुनौलक। लोक खस्सी, भेँडा, च्याङ्ग्रा आ चौँरीक मासु किएक खाइत अछि, एहि विषयमे ओकरासभक बीच एक दिन चर्चा चलल। भगता मुह टेढ़ करैत बाजल– "छीया-छीया! लोकसभ तोरासभक जातिकेँ सेहो खा जाइत छह, नहि? लोकसभसँ हम बेङसभ कहुना बँचल छी। हमरासभकेँ डर खालि साँपसँ अछि।"

"ओना नहि कहक भगत भाइ! लोक तँ एहन प्राणी होइए जे बेङहुकेँ खा जाइत अछि, बुरूलहक? सात समुद्रक ओहिपार फ्रान्स नामक देशमे तँ बेङकेँ सभसँ स्वादिष्ट खाद्यपदार्थ बूरूल जाइत छैक। हम तँ सुनने छी जे ओहिठामक लोक बेङक टाङ बड़ सुआदि-सुआदिकऽ खाइत अछि।"– नीमा बाजल।

ओकर बात सूनिकऽ भगताक मुह उदास भऽ गेलैक। नीमा भक्तप्रसादकेँ फुसलबैत बाजल– "चिन्ता नहि करह, काठमाण्डूमे फ्रेञ्च व्यञ्जनक चल्ती एखनहुधरि नहि आएल छैक। तोहर आओर दू-चारि पुस्तकेँ एखन मनुक्खसँ कोनो डर नहि छह। निश्चिन्त भऽकऽ बैसह।"

ओही दिन भगता कैलीक पीठपर औङ्घाएल आ सपना देखऽ लागल। सपनामे ओ देखलक जे इचङ्गूक सभ बेङकेँ पकड़बाक लेल



किछु लोक खेहारिरहल छलैक। ओकरासभक भाषा बुझबामे नहि अबैत रहैक। एतबएमे एकटा आवाज आएल– "हे उएह !" एकगोटा चिचिआएल– "शे ज्यून एभेक ले गान्द्स किसेस ! (ओहि मोटका टाङवला पट्ठा बेङकेँ पकड़। देखिहेँ छूटि नहि जाउक!)" तकरा बाद

एक जोड़ी हाथ आबिकऽ ओकरा गसियाकऽ धऽ लेलकैक। भक्तप्रसादकेँ एकाएक भेलैक जेना ओकर साँस रुकिरहल हो। ओ औनाइत चिचिया उठल।

"कैलीक पीठपर ई बेङ कतऽसँ आएल, अएँ? हमरा देखितहिँ ई किएक एना चिचिया उठल?"– सपना टुटलापर भक्तप्रसाद अपनाकेँ एकटा दुब्बर-पातर आ नमछर युवा लामाक हाथमे पौलक। भक्तप्रसादक टोली शे गुम्बा पहुँच चुकल छल, तेँ ओ युवा लामा कैलीक पीठपरसँ सामान उतारऽ ओहिठाम आएल छल। तखनहि ओ लामा भक्तप्रसादकेँ देखने छल।

'हमरा छोड़ि दिअ! छाड़ि दिअ!' कहैत भक्तप्रसाद लामाक हाथसँ छुटबाक चेष्टा कएलक।

लामा चौंकैत बाजल– "आहि रे बा, तोँ तँ बाजि सकैत छह हओ! डरएबाक नहि कोनो जरूरति छैक। एहिठामसँ भगबाक सेहो कोनो प्रयोजन नहि छैक। हम तोरा किछु नहि करबह। हमर नाम लम्बा लामा थिक। तोहर नाम की छिअ? ओऽऽऽ, भक्तप्रसाद? लएह हमर कान्हपर बैसह, चलह गुम्बामे चलैत छी।"

लम्बा लामाक बात मानब छोड़ि भक्तप्रसादक आगाँ दोसर कोनो उपाय नहि छलैक। युवा लामा कैलीक बोझ लऽ जा-कऽ गुम्बाक भँड़ारमे रखलक आ तकरा बाद मुख्य गुम्बादिस विदाह भेल। भगता बेस मजगूतीसँ लामाक गरदनि पकड़िकऽ बैसल रहए जे कहीँ खसि ने पड़ए। माटि आ पाथरक जोड़सँ बनल शे गुम्बाक भवन देखबामे किछु भद्दा लगितहुँ बेस नमहर आ भव्य छलैक। गुम्बाक भीतरसँ ढोल, झालि आ छोट-छोट घण्टीसभक आवाज आबिरहल छलैक।

लामासभक बैसिकऽ प्रार्थना करऽवला कोठली लम्बा आ अन्हार छल। कोठलीमे सड़र, धूमन, अगरबत्ती आ घीक सुगन्ध पसरल छलैक। एक कोन्हपर उच्च आसनपर गुम्बाक मुख्य लामा बैसल छल। ओकर एकटा हाथमे घण्टी छलैक। घण्टी बजबैत दोसर हाथक

आङुरसभसँ ओ विभिन्न मुद्रा बनबैत छल। एहि तरहक धार्मिक विधि-विधान भक्तप्रसाद कहियो नहि देखने छल। तेँ ओकरा किछु बुझबामे नहि आबिरहल छलैक। मुख्य लामाक आगाँ पाँति मिला बहुतो लामासभ पल्थी मारिकऽ बैसल छल। ओसभ एक्कहिसङ्ग एक स्वरमे धर्मग्रन्थक पाठ कऽरहल छल। ओहिठाम भयानकसन लागऽवला एकटा मूर्ति सेहो छलैक। ओहि मूर्तिक निच्चा रहल वेदीमे घीक सैकड़ो दीप जरिरहल छलैक। ओही दीपसभसँ कोठलीमे थोड़बहुत इजोत पसरल छलैक।

लम्बा लामा आन लामासभक पाछाँ केबाड़ेलग जा-कऽ बैसि रहल। ओ नवसिखुआ लामा छल। लम्बा लामा लाल कपड़ामे लेपटाएल अपन पोथीक पोटरी खोललक। पोथीक पन्ना उनटबैत ओ आनसभक सङ्ग स्वरमे स्वर मिलाकऽ पाठ करऽ लागल। पाठ चलिएरहल छल, ता एकटा लामा सभक आगाँ घीवला चाह परसैत आएल। भक्तप्रसाद ओहन चाह पहिलबेर लो-मान्थाङक भट्ठीमे चिखने छल। भगताकेँ जखन लम्बा लामा चाहक बाटीमे आँखि गड़ौने देखलक तँ पाठ करिते-करिते इशारा कऽ देलकैक जे पीबि सकैत छह।

भक्तप्रसाद तुरत्ते निच्चा उतरल आ चाह सुड़कऽ लागल। वाह! केहन सुअदगर! मुस्ताङसँ डोल्पो पहुँचबाक सभसँ पैघ पुरस्कार जेना ओकरा लेल उएह चाह रहल होइक।



गुम्बाक ज्ञान

हिमाली गाए चौँरीक घी मिलाओल चाहसँ अपन पिआस मेटौलाक बाद भक्तप्रसाद फेर लम्बा लामाक कान्हपर जा-कऽ बैसि रहल। लम्बा लामा आ आन-आन नवसिखुआ लामासभ पाठ सम्पन्न कऽ पोथी बान्हऽ लागल। मुदा बुजुर्ग लामासभ एखनहु पढ़ितहिँ छल। लम्बा लामा एही अवसरक उपयोग करैत भक्तप्रसादकेँ प्रार्थना आ ग्रन्थ-पाठक महत्त्व बुझबऽ लागल।

लम्बा लामाक मोताबिक संसारमे जन्म लेलाक बाद प्रकृति-जगत आ प्राणी-जगत दऽ बुझबाक चाही। जीवनक अर्थ जन्म, मृत्यु आ पुनर्जन्मक चक्र थिक। प्रत्येक चेतनशील प्राणीकेँ चाही जे जीवनक केहनो अवस्थामे ओ अपन विचारकेँ पवित्र राखए, नीक कर्म करए आ सभ प्राणीक प्रति करुणा आ दयाभाव राखए।

भक्तप्रसादकेँ कतेको बात बुझबामे सेहो नहि अबैक, तैयो लामाक बात ओ ध्यानमग्न भऽ सूनिरहल छल। लम्बा लामा कहैत गेल– "प्राणीकेँ अपन पक्ष अपनहि नजरिसँ नहि भऽ दोसराक नजरिसँ सेहो देखबाक चाही। कोनहु प्राणीमे जँ गुण होअए तँ ओकरा उत्तम मानल जा सकैत अछि। एना कऽ सकऽवला सभकेओ नीक आ बुद्धिमान कहाइत अछि। मुदा सभकेओ अपनहिटा विचार ठीक मानैत अछि। दोसरापर अपन विचार थोपऽ चाहैत अछि। संसारभरि मचल

लड़ाइ-झगड़ा, दङ्गा-फसाद आदिक मूल कारण इएह छियैक।" ई बातधरि भक्तप्रसाद सेहो नीकजकाँ बूझि गेल। ओकरा ठीक बुझएलैक आ ओ मूड़ी डोलबैत बाजल– "मनासिब-मनासिब!"

भक्तप्रसादक सेहो एहि यात्रामे बहरएबासँ पहिने इएह धारणा छलैक जे संसारक सभसँ महत्त्वपूर्ण प्राणी बेङहि थिक। ओ अपन यात्राक क्रममे अनेको जीवजन्तुकेँ देखलक आ ओकरासभसँ भेटघाट, बातचीत कएलक। एखन तँ ओकरा आनहु सैकड़ो जीवजन्तुक मादे बूझल भऽ गेल छैक। एम्हर लम्बा लामा शान्त भावेँ कहिएरहल छल– "देखह, ई पृथ्वी चाली, बिज्जी, बगुला, गिद्ध, मच्छड़, तितली, हिमचितुआ, बिढ़नी, बानर, मनुक्ख, गनगोआरि-सन सभ प्राणीक सझिया घर छियैक। पृथ्वीमे जङ्गल सेहो छैक। जङ्गलमे अनेको तरहक गाछपातसभ छैक। ततबए नहि, एतऽ बड़का-बड़का चट्टान, आकाश, मेघ, नदी, ताल, धार, झरना, रौद, बसात, चान, तरेगन, ग्रह-नक्षत्रसभ, पहाड़-पर्वत, उपत्यका आ समतल मैदान-सनक निर्जीव वस्तुसभ सेहो छैक। आ एहि सम्पूर्ण वस्तुसभक बीच हमसभ सेहो छी! संसारक सम्पूर्ण सजीव-निर्जीव वस्तुसभ अलग-अलग अछि। मुदा सभ एक-दोसरासँ सम्बद्ध सेहो अछि।"

लम्बा लामाक भाषण एखनहु सठल नहि छलैक। ओ कहिरहल छल– "संसारक सभ वस्तुकेँ अस्तित्वमे रहबाक लेल अर्थात जीबाक लेल एक-दोसरापर निर्भर रहऽ पड़ैत छैक।" अपन बातपर बेङकेँ ध्यानमग्न भेल देखलाक बाद लम्बा लामा आओर उत्साहित भेल आ अपन प्रवचनक क्रमकेँ आगाँ बढ़ौलक– "कोनहु प्राणी वा वस्तु अपनहिमे महत्त्वपूर्ण नहि होइत अछि। उदाहरणक लेल भेँड़ाक बात लऽ लएह। भेँड़ाकेँ जीबाक लेल घास चाही। घासकेँ जनमबाक लेल माटि चाही। माटिकेँ मलगर एवं उपजाउ होएबाक लेल भेँड़ेक भेड़ारी चाही।" लम्बा लामा बाजैत जा-रहल छल, मुदा भक्तप्रसाद गुम्बाक वेदीमे नचैत दीपसभदिस तकैत टौआए लागल छलए। ढोल

आ शलिक ऊङ्कार तथा लामासभक मन्त्रोच्चारणक ध्वनिसँ गुञ्जायमान गुम्बाक वातावरणमे भक्तप्रसादक मोनमे अनेको बातसभ घुरछाए-फुरछाए लगलैक। एखनधरि ओ आँखि, कान आ आन इन्द्रियसभक सहायतासँ बाहरी संसारकेँ देखिरहल छल। मुदा आब ओकर मोनक आँखि खुजैत जा-रहल छलैक। ओ ओही आँखिसँ भितरिया बात देखबाक प्रयत्न कऽरहल छल। “हम ई यात्रा किएक कएलहुँ? प्राणी किएक जनमैत अछि आ किएक मरि जाइत अछि? जीवनक अर्थ की छियैक?” आदि गूढ़ बातसभ बुझबाक लेल ओ विचार-मन्थन करऽ लागल।

भक्तप्रसाद गम्भीर रूपेँ सोचमग्न भऽ गेल। ओकरा लम्बा लामा उपदेश सेहो दैत रहलैक– “तोँ जतेक-जतेक जीवनकेँ बूझैत जएबह, ओतबए आन प्राणीक प्रति नम्रताक महत्त्व सेहो बूझैत जएबह। स्वार्थी नहि रहि जएबह आ ‘जे छी हमहीँ छी’, एहि तरहक भावनासँ उपर उठैत जएबह। करुणा आ दयाक महत्त्व सेहो बुझबामे आबि जएतह। तोरामे दया आ परोपकार भावना जागऽ लगतह।”

भक्तप्रसाद एकाग्रतापूर्वक मूड़ी डोलौलक। ओ अपन जिनगीमे एतबा-रासे गहन बातसभ कहियो नहि सूनि पओने रहए। एहन बातसभ कहियो सोचनहु नहि रहए। ओ चकित भऽ गेल। ओकरा एहि रूपेँ थकानक अनुभूति होबऽ लगलैक जेना ओ बड़ दूरसँ चलिकऽ आबिरहल होअए। भगताकेँ एक्कहिबेर सभ बात बुझबामे दिक्कत भऽरहल छैक से लम्बा लामाकेँ सेहो बुझबामे आबि गेलैक। भगताक पीठपर थपकी दैत ओ बाजल– “जीवनमे सिखबाक लेल बहुत किछु छैक भक्तप्रसाद। सिखबाक कोनो अन्त नहि होइत छैक। जे होइक, आइसँ तोँ सीखब शुरू कएलह, हमरा एहीमे प्रसन्नता अछि।”

भक्तप्रसादक मुहमे चमक आबि गेलैक। आइ ओकर जिनगीमे एकटा नव अध्यायक शुरुआत भेल छलैक। “एखनधरि तँ हम खालि चलिएरहल छलहुँ, मुदा आब हम ई प्रयत्न करब जे भेट भेलहा प्राणी

आ देखलाहा घटनासभकेँ बूझी, मनन करी।"– भगता बाजल। लम्बा लामा ई सूनिकऽ प्रसन्न भऽ गेल। लम्बा लामाकेँ ई देखि परम-सन्तोषक अनुभूति भेलैक जे काठमाण्डूक बेङकेँ विशाल-विशाल पर्वतसभक बीचमे रहल डोल्पोमे आबिकऽ बोन्पोमार्गी गुम्बामे मोनक संसार भेटलैक आ ओ आत्मज्ञान प्राप्त कएलक।

पहिनुक कोनो अवस्था रहितैक तँ एहन बेरमे भक्तप्रसाद खुशीसँ कूदि उठितए आ चिचिआए लगितए। मुदा एखन भक्तप्रसाद शान्त छल। ओ भीतरसँ तँ गदगद छल, मुदा चिचिआएब जरूरी नहि बुझलक। ओ मोनहि मोन कहलक– "अन्तर्मनसँ तोँ प्रसन्न छह, किएक तँ आनसँ तोँ सदव्यवहार पओने छह। एहिमे तोरा चञ्चल होएबाक कोन प्रयोजन छह?" एहने नि:स्वार्थ भावनासँ ओकरा आनन्द भेटलैक। भक्तप्रसाद शे गुम्बाक मुख्य कक्षमे चलैत प्रार्थना जा समाप्त नहि भऽ गेलैक ता आनन्दमग्न भऽ बैसल रहल। ओ मोनहि मोन अपन 'गुरु' लम्बा लामाकेँ धन्यवाद दैत रहल।



विदा डोल्पो

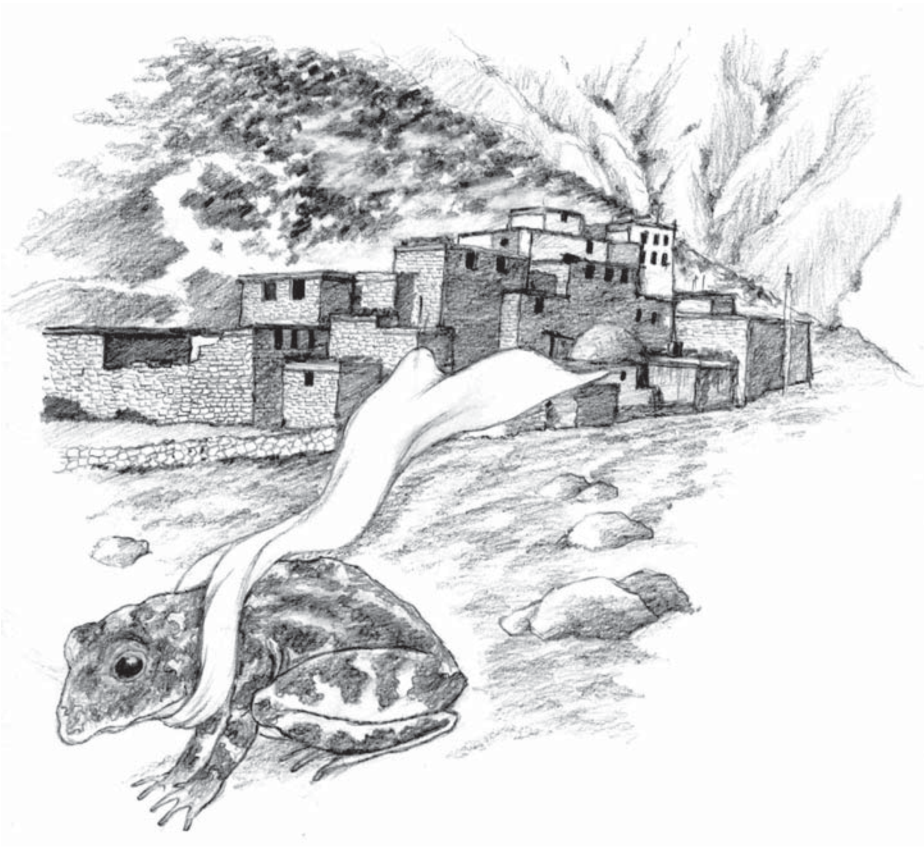
रातिमे भक्तप्रसाद लम्बा लामाक सङहि जा कोठलीमे सूतल। लम्बा लामा कहलकैक– "तौँ बहुत लम्बा यात्रा क ऽ चुकल छह भक्तप्रसाद। मुदा तोरा आइ ई बुझबामे आबि गेल होएतह जे तौँ चलियोक ऽ कतहु नहि पहुँच सकैत छह आ बिन चलनहु कत्तहु पहुँच सकैत छह। तौँ अपनाकेँ भागमन्त बूझि सकैत छहक जे तौँ यात्रा सेहो क ऽ पओने छह आ अपनाकेँ चिन्हनहु छह।"

निन्न पड़ऽसँ पहिने भगताक यात्रा-कार्यक्रमक मादे ओकरासभक बीच विचार-विमर्श भेलैक। लम्बा लामा भगताकेँ घर घूरि जएबाक सलाह देलकैक। भगताकेँ सेहो ओकर बात ठीके बुझएलैक। भगता निश्चय कएलक जे ओ काल्हिएखन दक्षिणभर विदाह भ ऽ जाएत। भोरखन जखन सुरुजक किरिन कोठलीमे हुलकी देलक तँ भक्तप्रसादक निन्न टुटलैक। भोरका रौदमे कोठलीमे रहल छोटका खिड़कीसँ बाहर विशाल आ अविचल पहाड़सभ देखाइत रहैक। अपन नित्यक्रियासँ निवृत्त भ ऽ लम्बा लामा बाहरक काजसभ शुरू क ऽ चुकल छल। किछु लामासभ भगताक विदाइ करबाक लेल आएल रहैक। लम्बा लामा भगताक लेल ठीक होएबाक हिसाबेँ एकटा 'खादा' काटिक ऽ अनलक आ ओकर गरदनिमे पहिरा देलकैक। लामासभक स्नेह पाबि भक्तप्रसादक आँखि भरि अएलैक। तैयो मोन सक्कत क ऽ भक्तप्रसाद लम्बा लामा

आ आन लामासभसँ विदाह लऽ अपन बाटपर बहरा गेल।

ओ सोझे दक्षिणी डोल्पोक जुफाल नामक हवाइ मैदानदिस जाएवला बाट धएलक। बाटमे घर आ बस्ती ओतेक नहि देखाइ दैत छलैक। एकटा विशाल रमणीय झील छलैक, जकर जल-निकास सैकड़ो फीटक मनमोहक झरना बनौने छल। झरनाक निच्चामे सेहो नान्हिटाक एकटा शानदार पोखरि बनि गेल छल।

जाड़क कारणे मुस्ताङ आ डोल्पोमे नहएबाक हिम्मति नहि जुटा



सकल रहए भगता। एहि पोखरिकँ देखलाक बाद अपन देहक धूरा, गर्दा, मैल धोखारऽ लेल भगता पोखरिमे हेलि गेल।

नहएला-धोलाक बाद ओकर मोन हल्लुक बुझाए लागल छलैक। ओ आओर फूर्तिगर भऽ आगाँ बढ़ऽ लागल। भगता आब पट्ठा जुआन भऽ गेल रहए। ओकर देह गस्सल छलैक। हिमालयक रौदमे झुलसिकऽ ओकर चमड़ी किछु कारी भऽ गेल छलैक। बेसी दिनधरि चलैत रहबाक कारण ओकर हाथ-पएर सेहो मजगूत भऽ गेल छलैक। एखन ओ आन बेङसभसँ बेसी कूदि सकऽवला आ तेज गतिमे चलि सकऽवला भऽ गेल छल।

पएरे चलिकऽ काठमाण्डू नहि पहुँचल जा सकैए, से बात भक्तप्रसाद नीकजकाँ बूझैत छलए। डोल्पोसँ काठमाण्डूधरि जँ पएर चलिकऽ गेल जाए तँ कतेको मास लागि सकैत छैक। रस्तामे अनेको तरहक समस्यासभ आबि सकैत छैक। एहन अवस्थामे घर घुरबाक बात बिसरिकऽ ओ रस्तेमे ओझराइयो सकैत अछि। एतबए दिनमे तँ ओ अपन बाबा बुद्धिप्रसाद आ भाइ-बहिनसभक मुह बिसरि गेल छल। माएक मुहधरि ओ एखनहु नहि बिसरल रहए। अपन माएकँ मोन पाड़ि माएसँ भेटबाक लालसामे ओ जुफाल पहुँचबाक लेल आओर हाइँ-हाइँ कऽ कूदऽ लागल।

आखिरमे भक्तप्रसाद जुफालक हवाइमैदानमे पहुँच गेल। मुदा ओहिठाम जहाजक टिकट बेचनिहार कहऽ लगलैक जे कीड़ा, फतिङ्गा, बेङ, साँप, मूस– एकरासभकँ टिकट नहि भेटैत छैक। आओर ओ आदमी जखन भगताकँ ई कहि देलकैक जे तोँ चलिएकऽ काठमाण्डू चलि जो तखन तँ ओ आओर निराश भऽ गेल। उदास मोनसँ ओ हवाइमैदानक बगलबाटे बहैत भेरी नदीदिस देखलक। भेरीक काते-कात दक्षिणदिस जएबाक रस्ता हवाइमैदानसँ देखाइ दैत छलैक।

मुदा भक्तप्रसाद मोनहि मोन ई निर्णय कएलक जे चाहे जे-जेना भऽ जाए, ओ जहाजमे उड़िएकऽ जाएत। "एहन अनसोहाँत सेहो कतौ

नियम भेलैए ? काल्हि जखन जहाज अओतैक तँ पाइलटक सङ्ग हम अपनहि बात करब"– ओ मोनहि मोन निर्णय कएलक। पोखरा जाइत काल जे ओ नारायणघाटसँ ट्रकपर चढ़ल छल, ओकरा सेहो मोन पड़लैक आ फेर ओ मोनहि मोन कहऽ लागल– "जखन फूलमाया 'लिफ्ट' देने छलि तँ पाइलट किएक ने देत ? आखिर पाइलटो तँ हवाइजहाज चलबऽवला ड्राइभरे ने थिक ! एहि दुनूमे की अन्तर छैक ? हमर समस्या बूझिए जएतैक कि !"

ओहि राति भक्तप्रसाद जुफाल हवाइमैदानक सामान जोखऽवला मशीनक निच्चा घोसिआकऽ सूतल। आब ओकर भ्रमण करबाक इच्छा पूरा भऽ गेल रहैक। आब ओ जल्दीसँ जल्दी इचङ्गूक धानक खेतमे अपन परिजनक बीच जाए चाहैत छल।





आकाशमे उड़ैत

हवाइमैदानपर उतरल ट्वीनअटर जहाजक कनफाड़ू आवाजसँ भक्तप्रसादक निन्न टुटलैक।

जुफालक हवाइमैदान ढरकाह आ कच्ची छैक। ओहिठाम जहाज जखन उतरैत छैक आ उड़ैत छैक तँ एहन धूरा उड़ैत छैक जे सौंसे गरदे-गरदा भऽ जाइत छैक। एखनहु धूरा उड़बैत जहाज 'टर्मिनल भवन'लग जा-कऽ रुकल। लगपासक गौँआसभ जहाज देखबाक लेल जमा भऽ गेल छल।

किछु कालक बाद जहाजक थुथुनक कात दऽकऽ एकटा छोटका केबाड़ खुजल। ओहिठामसँ अधबहुआँ उज्जर कमीज पहिरने एकटा आदमी फूर्तिक सङ्ग जमीनपर उतरल। उतरिकऽ ओ जहाजक निरीक्षण करऽ लागल। "ओ आदमी जहाजक कप्तान छियैक"– केओ कहिरहल छलैक।

विमानचालककहिकेँ कप्तान कहैत छैक, से बूझितहिँ भक्तप्रसाद जल्दी-जल्दी छड़पैत-कूदैत कप्तानक बगलमे जा पहुँचल। ध्यानपूर्वक जहाजक पाँखि निहारिरहल विमानचालक अर्थात पाइलटक नजरि कहिया अपनादिस पड़त, से सोचि भक्तप्रसाद ओकरादिस टुकुर-टुकुर तकैत बैसल रहल। मुदा पाइलट छल जे बेङदिस तकबे ने करए। तकरा बाद अपन सम्पूर्ण शक्ति निकालिकऽ भक्तप्रसाद तेनाकऽ



उपरमुहे कूदल, जाहिसँ कि ओ पाइलटक नजरिक सोझाँ पड़ि सकए। आ, एहिबेर ओकर प्रयत्न सफल सेहो भऽ गेलैक। पाइलट ओकरा देखलक। ओ अपन कारी चस्मा उतारिकऽ चुक्कीमाली भऽ बैसल आ खादा पहिरने ओहि अदभुतसन बेङकें निहारऽ लागल।

भक्तप्रसाद चटपट अपन परिचय देलक– “नमस्कार, कप्तानसाहेब ! सर, हमर नाम भक्तप्रसाद बेङ थिक।”

पाइलट किछु आश्चर्य मानैत बाजल– “नमस्कार बौआ ! आ, हमर नाम आकाशभैरव नारायण थिक। हमरा तोँ ‘कैप्टन एबी’ कहि बजा सकैत छह। कहह, की काज छह ?”

“देखू ने, हमरा अपन घर काठमाण्डू जएबाक अछि आ एहिठामक लोकसभ कहैए जे तोँ जहाजमे चढ़िए ने सकैत छेँ। हम महिनोसँ नेपाल-दर्शनमे बहराएल छी। गाम बड्ड मोन पड़ैत अछि। बाबा आ माए हमर बाट जोहैत हएत। दया कऽकऽ कहुना हमरा काठमाण्डू लेने चलू।”– भक्तप्रसाद एक्कहि साँसमे मोनक सभटा बात कहि गेल।

“वाह रे वाह, बाजऽवला बेङ, अदभुत अछि!”– दाढ़ी काटिकऽ चिक्कन भेल अपन गालकेँ सोहराबैत कैप्टन एबी बाजल। “ओना तँ कोनो बात नहि छलैक ..... मुदा ..... बेङकेँ पसिञ्जर बनाकऽ लऽ जएबाक नियम नहि छैक। हँ, मुदा नियममे कतहु ई नहि लीखल छैक जे ‘ककपिट’मे केप्टनक जेबीक भीतर राखिकऽ नहि लऽ जाएल जा सकैए।”– कैप्टन एबी मुस्किआइत आँखि मारिकऽ ई बात बाजल। भक्तप्रसाद ई सूनि खुशीसँ गदगद भऽ उठल। ओकरा विश्वास भऽ गेलैक जे आब ओ घर पहुँच जाएत।

तोरासङ्गे कोनो सामानो-तामान छह?”

“नहि”– बेङ जवाफ देलक।

“तखन चलह विदाह भइए जाह!” कैप्टन एबी अपन कमीजक जेबीक मुह खोलैत ओकरा नमहर बनौलक आ बेङकेँ इशारा देलकैक जे कूदि जाह। बेङ समधानिकऽ कूदल आ एक्कहिबेर पाइलटक जेबीएमे पैसि गेल। जहाजक उड़बाक समय भऽ गेल छलैक। कैप्टन एबी तखनहि छोटका केबाड़सँ जहाजक भीतर ढूकि गेल। ओकर ‘को-पाइलट’ मित्र ‘ककपिट’क भीतर बैसिकऽ मीटरसभक जाँच करबामे व्यस्त छल।” “एकटा आओर सङ्गी बढ़ि गेल अछि”– उपरमुहे अलगल कमीजक जेबीपर नहुएँ थपकी मारैत कैप्टन एबी बाजल। ‘को-पाइलट’ नहुँ-नहुँ मुस्किआएल।

जेबीक उपरका किनारकेँ दुनू हाथेँ पकड़िकऽ मूड़ी अलगबैत भक्तप्रसाद ककपिटक बाहर देखलक। तखनहि कैप्टन माथाक उपर

लटकल हैण्डिलकेँ दाबिकऽ इन्जिनकेँ खूब कऽ गोङिऔलक। एना कएलापर जहाजक दुनू कातक पङ्खा चकरघिन्नीजकाँ जोड़सँ खूब गतिमे घूमऽ लागल आ पूरे जहाज थरथर कँपैत उड़बाक लेल पूरा तैयारीक अवस्थामे चलि आएल। तकरा बाद कैप्टन एबी जहाँ कि ब्रेक छोड़लक कि ट्वीनअटर जहाज ढरकाह आ कच्ची हवाइमैदानमे दरबर मारऽ लागल। एक्कहि छनमे जहाजक दुनू पहिया जमीन छोड़ि देलकैक। भक्तप्रसाद हवाइजहाजक सङहि आकाशमे उड़ैत चलि गेल।

भेरी नदीक उपरदने पहाड़क दोगे-दोगे पहिने ओ छोटका जहाज दक्षिणभर विदाह भेल। फेर किछु कालक बाद पूबदिस सोझ भऽ गेल। पाइलटक आगूवला सीसासँ भक्तप्रसाद सभकिछु देखैत रहल।

पहाड़-पर्वत, नदी-नाला, बोन-जङ्गल, उपर-उपर बर्फसँ तोपाएल पहाड़ी शिखरसभक लगहिसँ होइत जहाज काठमाण्डूदिस बढ़ैत जा-रहल छल। ओसभ पहिने धवलागिरि हिमालय पार कएलक। तकरा बाद अन्नपूर्णा आ माछापुच्छ्रे सेहो पार कऽ लेलक। मनासलु हिमालयकेँ नङ्घलाक बाद गणेश हिमालय देखाइ पड़ल। इचङ्गूसँ सभ दिन देखाएवला गणेश हिमालयकेँ देखितहिँ भक्तप्रसाद चीन्हि गेल।

नेपालक मध्यपहाड़ी भागक उपरदने उड़ैत काल देखाएवला दृश्यसभ देखिकऽ तँ भक्तप्रसाद दङ्ग रहि गेल। ओ अपन यात्रा-कालमे जे दोस-महिम बनौने छल, सेसभ ओहीठाम निच्चामे रहैक। केओ दहिनादिस तराइक जङ्गलमे आ केओ बामा कात हिमालयक ओहिपार 'भोट'मे छलैक।

भक्तप्रसादकेँ मोन पड़लैक– तराइक गरमीमे तुलसी आ राम एखनहु गड़ी जोतिएरहल हएत। चितवनक जङ्गलमे बाघिनरानी शिकारक खोजमे हएत। फूलमाया पोखरा जाएवला सड़कमे ट्रक हँकैत हएत। पोखराक उचक्का प्रजापति फेवातालमे गहिँकीक फिराकमे बैसल हएत। शालिग्राम उल्लेरीक चढ़ानपर कतहु घामे-पसेने

बोदरि भेल भारी ढोबैत हएत। तकरा बाद भक्तप्रसादकेँ साँहिली ञोपा सेहो मोन पड़ि गेलैक। "एखन ओ ककरासङ्ग गप्प कऽरहलि हएत?"– ई सोचैत कनेकाल भक्तप्रसाद अपनहिमे हेराए गेल। तकरा बाद ओकर मोन मुस्ताङक ओहिपार लो-मान्थाङमे डोल्माक ओहिठाम पहुँच गेलैक। ओ अन्दाज लगौलक जे ओहिठाम हेमामालिनी बेरहटियाक लेल घीक चाह बनबऽ लागलि हएत। चाङथाङक पठारमे पेम्बा मूस एखनहु अपन बीलमे घोसिआएले हएत। चुपचाप रहऽवाली कैली सेहो आब तँ डोल्पोसँ लो-मान्थाङदिस घूरिरहल हएत से अन्दाज लगौलक ओ। तकरा बाद ओकरा मोन पड़ि गेलैक अपन गुरु। लम्बा लामा शे गुम्बाक भीतर दीपमे घी ढारिरहल हएत। फेर एकबेर दक्षिणभर घूमिकऽ ओ तराइक चैतूलालकेँ सेहो मोन पाड़लक, जे घड़ियारक आहार बनि गेल छल।





फेर काठमाण्डू

एहने विचारमे डूबल भक्तप्रसादकेँ कैप्टन एबी झकझोड़लकैक। भक्तप्रसाद अतीतसँ वर्तमानमे उतरल। इन्जिनक गोङियैनीक बीच बाजल बात सुनबामे दिक्कत होइत छलैक। कैप्टन एबी आङुरसँ खिड़कीक बाहर देखौलकैक। उत्सुकतापूर्वक बेङ जेबीसँ नमड़िकऽ ओम्हर तकलक, जेम्हर कैप्टन एबी इशारा कएने छलैक।

ओ निच्चा बड़कीटाक एकटा बाटी देखलक। ओ बाटी दूधक फेनसँ ऊमटाम भरल छलैक। किछु कालधरि ठिकिअबैत रहलाक बाद कतहु जा-कऽ भक्तप्रसादकेँ बुझबामे अएलैक जे दूधसँ भरलाहा बाटी काठमाण्डू उपत्यका छियैक। जाड़ मासक कुहेस काठमाण्डू उपत्यकाकेँ पूरे झाँपि देने छलैक। काठमाण्डू, पाटन, भक्तपुर आ लगपासक पहाड़मे रहनिहार लोकसभ रौदक मुह नहि देखि जाड़े कठुआरहल छल हएत। मुदा जहाजसँ उपर देखाएवला जगह पूरे साफ रहैक। कैप्टन एबी जहाजकेँ उपत्यकाक उपर किछु काल चक्कर लगबबैत रहल, जाहिसँ रौदक तापेँ कुहेस फाटि जाइक।

भक्तप्रसाद फेर एकबेर निच्चामुहे तकलक। ओहिठाम ओ एहन दृश्य देखलक जे आइधरि देखनहि नहि छल। सुरुजक किरिनमे चमकैत स्वयम्भू कुहेसक सागरमे छतलाइत टापूजकाँ बुझाइत रहैक। उज्जर चैत्य आ ओहिपर बुद्धक शान्त आँखिसभ छलैक। एही

आँखिसभसँ विदा माङि भगता बरसातक शुरुआतेमे अपन यात्रा शुरू कएने छल। एखन ओ आँखिसभ भक्तप्रसादकेँ बुझएलैक जेना ओकर आपसीपर स्वागत करबाक लेल उताहुल भऽरहल हो।

परापूर्व कालमे काठमाण्डू एकटा विशाल पोखरिजकाँ छलैक। ओकर बाबा बुद्धिप्रसाद ओकरा कहने छलैक जे एखन जतऽ स्वयम्भूनाथ छैक, ओतऽ एकटा कमलक फूल छलैक। बाबाक बात ओकरा एखनहु मोन पड़ि गेलैक। भक्तप्रसाद कैप्टन एबीक जेबीएमे बैसल-बैसल कल्पना कएलक जे ओहि समय देवतालोकनि स्वयम्भूकेँ एहिना उज्जर पोखरिमे छतलाइत देखने होएताह।

कैप्टन जहाजक गति कम करबाक लेल 'थ्रटल'क हैण्डिल अपनादिस घिंचलक। तकरा बाद जहाज रसे-रसे निच्चामुहे उतरऽ लागल। पाटन शहरक उपर पहुँचलाक बाद कैप्टन जहाजकेँ त्रिभुवन अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थलदिस मोड़लक। एकरा पहिने गौचर विमानस्थल कहल जाइत छलैक। किएक तँ एहिठाम पहिने ठीके गाइए-माल चराओल जाइत छलैक। ककपिटक खिड़कीसँ देखलापर भक्तप्रसादकेँ एना बुझएलैक जेना आगाँमे पसरल धावनमार्ग कोनो चौड़गर राजमार्ग हो। किछुए छनमे जहाजक पहिया 'घड़ाक' आवाज करैत भुइयाँ छूबि गेल। जहाज नहुएँ आन्तरिक टर्मिनल भवनदिस गुड़कऽ लागल।

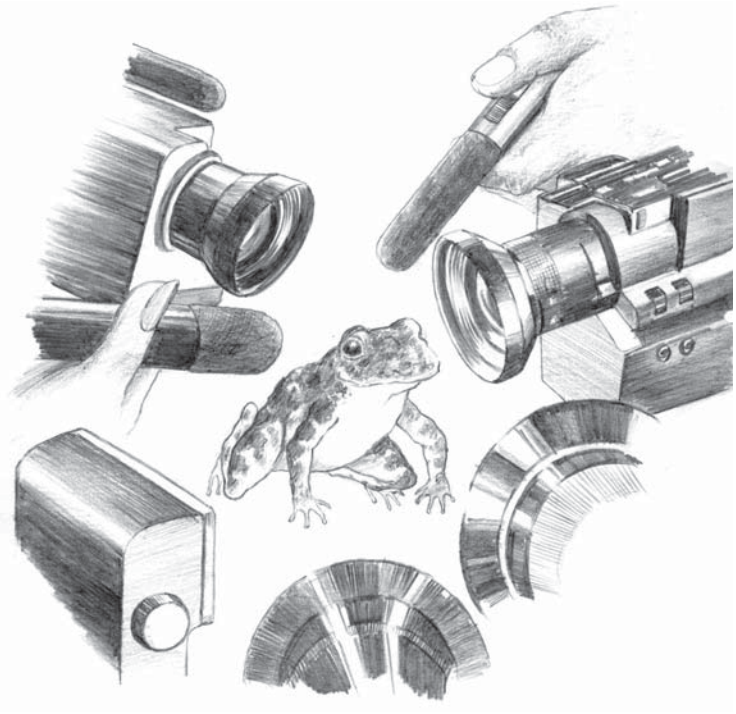
कैप्टन एबी जाहिठाम जहाज रोकलक ओहिठाम एकटा भारी भीड़ ककरो प्रतीक्षामे ठाढ़ छल। "एहि जहाजमे कोनो बड़के भी.आइ.पी. लोक आएल अछि भरिसक, तेँ ओकर स्वागतक लेल एतबा गोटा एहिठाम ठाढ़ होएतैक।"– भक्तप्रसादक एहि बातपर नहुएँ मुस्किआइत कैप्टन एबी बाजल– "भी.आइ.पी. लोक नहि भी.आइ.पी. बेङ कहि सकैत छहक। .... हम तखनहि 'कन्ट्रोल टावर'मे रेडियोसँ खबरि कऽ तोहर परिवारकेँ एहिठाम बजबएबाक लेल कहि देने रहियैक।"

कैप्टन एबी भक्तप्रसादकेँ जेबीसँ निकालि जहाजक सिड़हीलग राखि देलकैक। भक्तप्रसादकेँ केबाड़लग देखितहिँदेरी बाहर शोरगुल

होबऽ लागल, थपड़ी बाजऽ लागल। जहाजसँ उतरलाक बाद केओगोटे आबिकऽ भक्तप्रसादकेँ गेना फूलक एकटा छोटका माला पहिरा देलकैक। ओकर माए सानुमैयाँ आगाँ बढ़ि ओकरा छातीसँ सटा लेलकि। पाछाँ बैसल बाबा बुद्धिप्रसाद अपन पोताकेँ देखिकऽ गर्वसँ मुस्किआरहल छल। बुद्धिप्रसादक पाछाँ करीब अढ़ाइ-तीन सए युवा बेङसभ छलए। ईसभ ओकर नव भाए-बहिन छल, जे ओकरा यात्रापर बहरएलाक बाद जनमल छल।

काठमाण्डू महानगरक मेयर उपत्यकाक सभसँ साहसी उभयचर बेङक सफल नेपाल-भ्रमणपर ओकर स्वागत करैत भाषण कएलक। भक्तप्रसाद भाषण सुनबादिस ओतेक ध्यान नहि देलक। ओ अपनहि परिजनसभसँ भेटघाट आ बातचीतमे तल्लीन छलए।

ओहिठाम जमा भेल पत्रकारसभ कहऽ लागल- "भक्तप्रसादजी! किछु



तँ कहहि पड़त।" दैनिक अखबारक संवाददातासभ काल्हिक लेल एकटा मजेदार समाचार बनबऽ चाहैत छल। कैमरासभक आँखिए तिरमिरा देबऽवला फ्लैश ओकर मुहपर झलकऽ लगलैक। टेलिभिजनक कैमरा आ अनेको 'माइक्रोफोन' ओकरादिस सोझ भऽ गेलैक। पहिने तँ ओ अकबकाएल, मुदा ओकरा मोनमे बहुतो एहन बात छलैक जे ओ बाजहु चाहैत छल। तँ बाजऽ लागल– "मित्रगण! हम जखन अपन यात्रा शुरू कएलहुँ तखन तँ हमरा मोनमे एतबए छल जे किछु नव काज करी, मुदा एखन जखन हम यात्रा सम्पन्न कऽ घूरि अएहलहुँहेँ तँ अपनासङ्गे हम बहुतो अनुभव सेहो लऽकऽ घूरल छी। हम की देखलहुँ तँ हमरासभक देश नेपाल पहाड़-पर्वत, नदी-नाला, जङ्गल-मैदान आदिसँ सजल भरल पड़ल अछि। एहि देशक रहनिहार कीड़ा-फतिङ्गा, चिड़इ-चुनमुन्नी, जानवर आ लोक– सभ दयालु आ बुझनुक अछि। काठमाण्डू उपत्यका तँ सुन्दर अछिए, मुदा एतबए नहि; सौँसे देशे सुन्दर अछि। हमरासभकेँ चाही जे काठमाण्डूक सङहि सौँसे देशकेँ एहिना सुन्दर बनौने रही।"

भक्तप्रसाद जीवनमे पहिलबेर एतबाटाक भीड़क सोझाँ एतेक लम्बा बाजल रहए। ओकर दुनू गाल लाजसँ लाल भऽ गेल रहैक। 'धन्यवाद' कहैत ओ अपन भाषण सम्पन्न कएलक आ तकरा बाद अपन परिजनसभक भीड़मे जा मिझरा गेल। सभकेओ इचङ्गू जएबाक लेल उताहुल भेल रहए।

भक्तप्रसाद अपन यात्रा शुरू करैत काल साझा बसमे चड़बासँ वञ्चित होइत-होइत बँचि गेल छल से जानकारी कतहुसँ साझा बसक हाकिमक कानधरि पहुँच गेल रहैक। तँ एहिबेर भक्तप्रसादक सम्पूर्ण परिवारकेँ हवाइमैदानसँ इचङ्गूधरि पहुँचएबाक लेल सौँसे बसक व्यवस्था कऽ देल गेल रहैक।

बसमे घर घूरैत काल भक्तप्रसाद अपन माए आ बाबाक बीचमे सटिकऽ बैसल। अचानक भक्तप्रसादकेँ निन्न लागलजकाँ बुझाए लगलैक।

ओ सोचलक जे घर घुरबाक खुशियालीमे एना भऽरहल हएत। मुदा ओ अपन माए सानुमैयाँकँ सेहो निन्नसँ झुकैत देखलक। सङहि बसमे रहल आनहु बेङसभ आश्चर्यजनक ढङ्गसँ शान्त छल।

“एतेक जल्दी एहन समय आबि गेलैक!” भक्तप्रसाद अपन बाबादिस तकलक। बुढ़बा भक्तप्रसादक मोनक बात बूझैत बहलकैक– “हँ भगत! जड़काला शुरू भऽ गेलैए। जाड़सँ बँचबाक लेल काठमाण्डूक बेङक लेल लम्बा समयधरि सुतबाक समय आबि गेलैक अछि। तोँ बेरहिपर घर घूरि अएलह।”

इचङ्गूक लग रहल बसस्टैण्डपर बस रुकितहिँदेरी बेङक बथान जाड़सँ बँचबाक लेल अपन-अपन खेतक बीलमे जा सन्हिअएबाक लेल दरबर मारऽ लागल। चलिते-चलिते सानुमैयाँ भक्तप्रसाददिस ताकिकऽ बाजलि– “तोँ बाबासङ्गे सूतऽ चलि जइहेँ। आब चैतमे जखन हमसभ जागब तखन सभकेओ जमा होइत जाएब आ तोहर यात्राक खिस्सा सेहो सुनैत जाएब। ओही समयमे हम तोहर आपसीक खुशीमे एकटा खूब भरिगर भोजक आयोजन सेहो करब।”

तकरा बाद बुद्धिप्रसाद आ भक्तप्रसाद ढरकाह खेतमे घाँसक जड़िआठमे बनल गुफाघरमे पहुँचल। ओसभ ओहिठाम एहि तरहेँ जगहक व्यवस्था कएलक, जाहिसँ किछु मासधरि आरामसँ सूति सकए। तकरा बाद बाबा-पोता दुनू शीतकालीन लम्बा निन्नमे सूति रहल।



भक्तप्रसाद बेङक नेपाल-यात्रा

काठमाण्डू उपत्यका-निवासी किशोर बेङ भक्तप्रसादकेxदेश देखबाक मोन होइत छैक। ओ एकटा पुरान टीनक डिब्बामे बैसि बागमती नदी होइत तराइ पहुँच जाइत अछि। तकरा बाद भरिया, खच्चर आ चौरीक पीठपर सवार भऽ नेपालक विकट-अनकन्टार जगहसभपर पहुँचैत अछि। यात्राक क्रममे ओ अनेको जीवजन्तु आ लोकसभसx भेटैत अछि। भक्तप्रसाद एहन-एहन जगहपर पहुँचैत अछि, जतऽ एहिसx पहिने कोनो बेङ पहुँचल नहि रहए। अन्तमे एकटा विमानचालकक जेबीमे बैसिकऽ ओ काठमाण्डू घूरैत अछि।

.भगता बेङक देश-भ्रमण काठमाण्डूक पहाडी क्षेत्रक बेङ भक्तप्रसादद्वारा कएल गेल नेपाल-यात्राक रोचक खिस्सा थिक।

रातो बङ्गला किताब रातो ब ला स्कूलक प्रकाशन विभाग थिक। नेपाली आ अङरेजीक सङहि मैथिलीसमेत आनहु कतोक भाषामे प्रकाशित .भगता बेङक देश-भ्रमण मे धीयापुतासभ मनोरञ्जक खिस्सासभक माध्यमसx अपन देश आ समाजक सम्बन्धमे सेहो यथेष्ट जानकारी पाबि सकैत अछि।

ISBN 99933-20-02-1